विचार दृष्टि

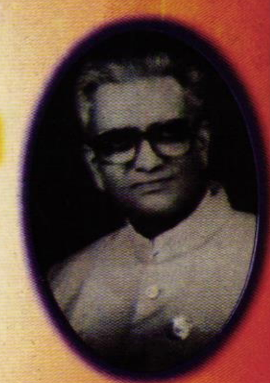

वर्ष : 4 अंक : 10 जनवरी–मार्च : 2002 15 रुपये

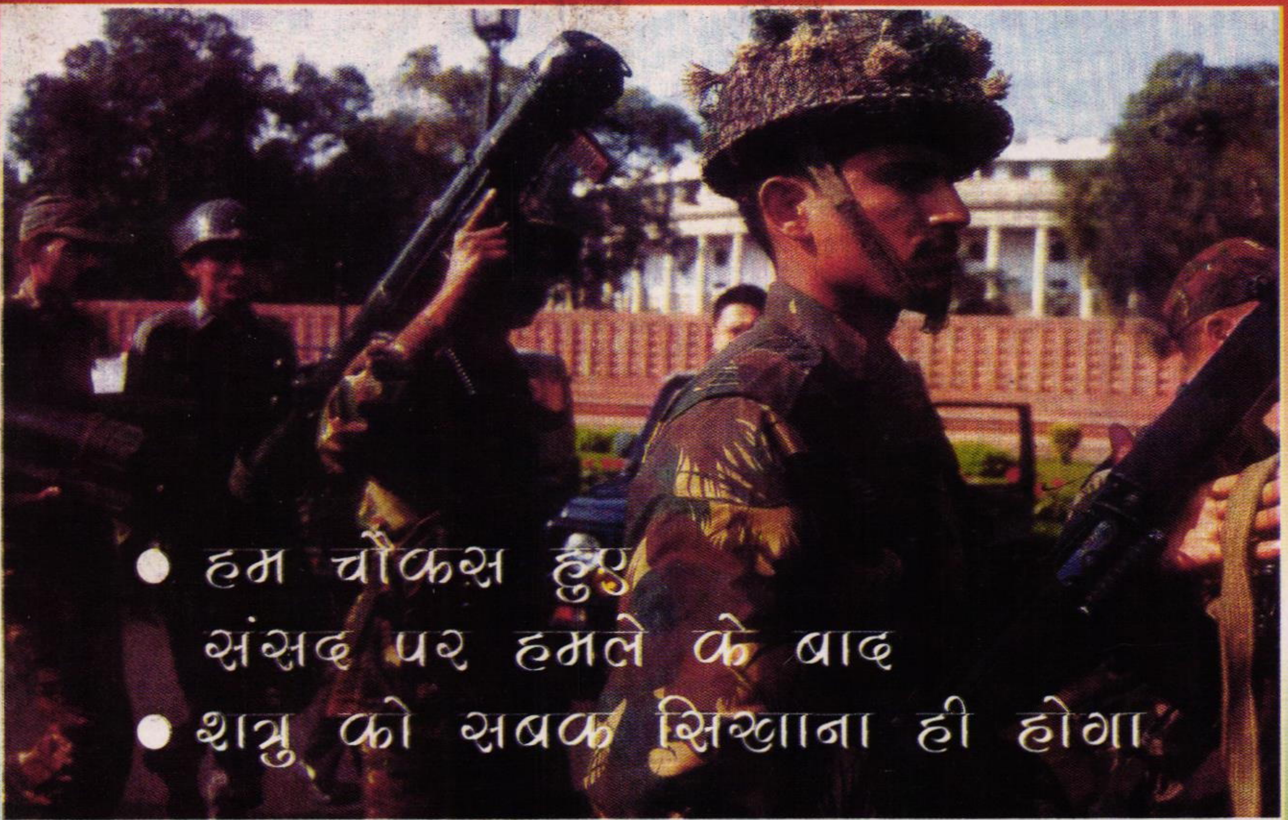

खण्डित होती जिजीविषा और आदमीपन की तलाश

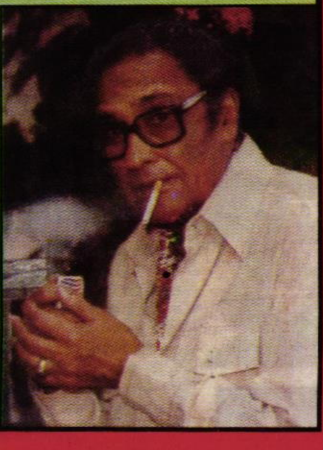

☎ [illegible]52099 Fax 253[illegible]90

INDIAN INSTITUTE OF HEALTH EDUCATION AND RESEARCH

(Recognised by the Govt. of Bihar and RCI, Govt. of India)

Affiliated to Magadh University, Bodhgaya

Health Institute Road, Beur (Near Central Jail), Patna.

We impart

Bachelor Degrees in:
1. PHYSIO THERAPY
2. OCCUPATIONAL THERAPY
3. AUDIOLOGY AND SPEECH THERAPY
4. PROSTHETIC AND ORTHOTIC ENGG.
5. MENTAL RETARDATION

Diplomas in:

6. PHYSIOTHERAPY,
7. PROSTHETIC AND ORTHOTIC ENGG.
8. MEDICAL LAB. TECHNOLOGY,
9. X-RAY TECHNOLOGY,
10. HOSPITAL MANAGEMENT,

ELIGIBLITY:- I.sc. for course no 1 to 9, Graduation for Hospital Management.

FORMS AND PROSPECTUS:- Can be obtained from the office against payment of Rs. 100/- only. Send a D/D of Rs. 120/- only in favour of" **Indian Institute of Health Education and Research, Patna**" for postal delivery.

Hnadicapped chidren under treatment

Under construction site of New Building

निम्नलिखित निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाओं के लिए पधारें:
स्वास्थ्य परीक्षण एवं परामर्श, टीकाकरण, फिजियोथेरापी, अकुपेशनल थेरापी, **स्पीचथेरापी,** सभी प्रकार की विकलांगता, पोलियो, लकवा, गठिया, हड्डी जोड़ों एवं नस से सबंधित सभी प्रकार के रोगों की जांच एवं उपचार, **हकलाना-तुतलाना** सहित गूंगे-बहरों की जांच एवं उपचार, हियरिंग-एड, मानसिक विकलांगता तथा मंद बुद्धिमता-जांच एवं उपचार, **कृत्रिम हाथ, पैर,** कैलिपर, पोलियों के जूते, वैशाखी, **सरवाइकल कॉलर, बेल्ट,** आदि का निर्माण एवं वितरण, लाचार विकलांगों को **तिपहिया साइकिल तथा व्हीलचेयर,** विकलांगों की शल्य चिकित्सा (सर्जिकल करेक्शन), रियायती दर पर पैथोलोजिकल जांच, एक्स-रे तथा **शल्य चिकित्सा.**

Anil Sulabh
Director-in-chief

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय भावनाओं की त्रैमासिकी)
वर्ष-4 जनवरी-मार्च, 2002 अंक-10
-----पत्रिका परिवार -----
सम्पादक व प्रकाशक : सिद्धेश्वर
कार्यकारी सम्पादक : डॉ. शिवनारायण
सहायक सम्पादक: मनोज कुमार
सम्पादन सहायक : अंजलि
विधि सलाहकार: मान.न्यायमूर्ति श्री बी.एल.यादव
शब्द संयोजक : शशि भूषण, दीपक कुमार
साज-सज्जा : सुधांशु, दिलीप कुमार सिन्हा
मुख्य प्रकाशकीय कार्यालय : दिल्ली
ई.-50, एफ.एफ.सी., झंडेवालान
रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली-110055
विज्ञापन व प्रसार कार्यालय
सुधीर रंजन, प्रबंध सम्पादक
कुमारटेक कम्प्यूटर्स, यू.-207, शकरपुर,
दिल्ली-92, ☎: 2230652
ब्यूरो प्रमुख
मुम्बई : वीरेन्द्र याज्ञिक ☎: 8897962
कलकता : जितेन्द्रधीर ☎: 4692624
चेन्नई : डॉ. मधु धवन ☎: 6262778
तिरूवनन्तपुरम:डा. रति सकसेना☎: 446243
बंगलोर : पी.एस.चन्द्रशेखर, ☎:6568867
हैदराबाद : डॉ. ऋषभदेव शर्मा
जयपुर : डॉ. सत्येन्द्र चतुर्वेदी ☎:225676
अहमदाबाद:वीरेन्द्र सिंह ठाकुर ☎:2870167
भुवनेश्वर : शशि भूषण मिश्र

प्रशासकीय कार्यालय :
'दृष्टि'6,विचारविहार,यू-207,शकरपुर
विकास मार्ग, दिल्ली -110092
फोन -011-2230652, फैक्स -011-2225118
संपादकीय व पत्राचार कार्यालय :
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1 दूरभाष : 0612-228519
E-mail-sidheshwarprasad@hotmail.com

मुद्रक: प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड
एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया,फेज-2, नई दिल्ली-20

मुख्य वितरक :
कुमार बुक सेन्टर, ए०-67, क्रिश्चन कॉलोनी, पटेल चेस्ट, नई दिल्ली
दूरभाष: 7666084 (P.P.)
मूल्य : एक प्रति 15 रुपये, द्विवार्षिक : 100रुपये
आजीवन सदस्य : 1000 रुपये

रचना और रचनाकार

	पृष्ठ
पाठकीय पन्ना :	2
संपादकीय :	3
विचार-प्रवाह :	
राष्ट्रीय इतिहास की वैज्ञानिकता - डॉ. राम कृष्ण प्रसाद सिन्हा	4
साहित्य :	
दलित साहित्य दर्शन और हिन्दी कविता - वंशीधर सिंह	5
लेखक और समाज - पी. आर. वासुदेवन 'शेष'	7
गतिविधियाँ :	
तथागत का लोकार्पण	8
मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी गठित	12
व्यंग्य :	
सरकार का व्याकरण - प्रो. रामभगवान सिंह	16
राजनीतिक नजरिया :	
राजनीतिक समीकरण के बदलते आसार - सिद्धेश्वर	18
चार राज्यों में चुनाव फरवरी में - शशि भुषण	19
समाचार विश्लेषण :	
लालू को जेल या बेल	20
कौन है यह गाजी बाबा	20
अफगानिस्तान में एक नए युग का सूत्रपात - सुधीर रंजन	21
सम्मान :	
रामदरश मिश्र को 'शलाका सम्मान'	23
जलते प्रश्न :	
क्या आतंकवाद खत्म हो जाएगा ? -राधेश्याम तिवारी	24
आतंकवाद :	
भारत पाक युद्ध की कीमत क्या होगी - अर्जुन देशप्रेमी	25
कहानी :	
बात जो वह न कह सकी - जिया लाल आर्य	27

	पृष्ठ
प्रतिशोध - कृष्ण कुमार राय	30
समाज :	
आरक्षण: नीति, नीयत और नियति -श्रीकृष्णा शर्मा	34
शिक्षा :	
आदर्श शिक्षक एवं आदर्श शिक्षण - सुभाष शर्मा	36
शिक्षा का 'अंग्रेजीकरण' खतरनाक कदम - डॉ. राधाकृष्ण सिंह	41
नई पीढ़ी :	
संभावनाओं से भरा संस्थान - डॉ. राजेश कुमार	44
समीक्षा :	
खण्डित होती जिजीविषा और आदमीपन की तलाश - सिद्धेश्वर	47
देश-विदेश :	
नेपाल में माओवादी विद्रोह से भारत को चिन्ता - संजय सौम्य	49
दक्षेस सम्मेलन के बाद छीन जाती है किसी न किसी नेता की कुर्सी - शाहिद ज़मील	50
कला-संस्कृति :	
लोक भाषाओं का अलबेला गायक था 'अलबेला' - अरुण कुमार गौतम	51
गांव-जवार :	
ऋण लेने में राजस्थान के किसान अग्रगणी - सुनीता रंजन	52
आधी आबादी :	
राजस्थान की महिलाओं का साहित्य में योगदान - डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत	53
काव्य-कुंज :	
राजनेता	58
गज़ल, इतिहास का प्रवाह	59
न्याय जगत :	
पोटो जो सदन में प्रस्तुत न हो सका	60
श्रद्धांजलि :	
हिलसा के शहीद	58

पत्रिका-परामर्शी

1. पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह 'शशि', दिल्ली
2. डॉ बाल शौरि रेड्डी, चेन्नई
3. श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव, अहमदाबाद
4. श्री जियालाल आर्य, पटना
5. प्रो. रामबुझावन सिंह, पटना
6. श्री जे.एन.पी.सिन्हा, दिल्ली
7. श्री बांकेनन्दन प्रसाद सिन्हा, पटना
8. डॉ. सच्चिदानन्द सिंह 'साथी', पटना

रचनाकार के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

सम्पादकीय प्रेरणादायक

भारतीय संविधान बुरा है या भारतीय इन्सान? एक यदि बुरा है तो दूसरा भी अवश्य ही वह बुरा हो जाएगा। दोनों बुरे हैं तो क्या करें? आपका संपादकीय इस ओर सोचने को प्रेरित करता है।

के०जी० बालकृष्ण पिल्लै, तिरुवनंतपुरम

लड़ाई इस्लाम से नहीं, इस्लामी आतंकवाद से

सम्पादकीय में सम्पादक के इस विचार से हम शत प्रतिशत सहमत हैं कि जिस आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी जा रही है वह इस्लामी आतंकवाद से लड़ी जा रही है, न की इस्लाम से। भारत को अब बिना कोई हिचक के तुष्टिकरण की नीति को छोड़ पाक स्थित आतंकवादी शिविरों पर हमला बोल देना चाहिए। यह सही है कि जब तक हम कोई ठोस कदम नहीं उठाएंगे समूचे विश्व का जनमत हमारा साथ नहीं देने को । अमेरिका ने 11 सितम्बर के हमले के बाद तालिबानी आतंकवादियों पर जो हमले कर उसे अफगानिस्तान से खदेड़ा, तभी तो आखिर विश्व जनमत उसके साथ हुए।

सुधाकरन, चेन्नई

ईट का जवाब पत्थर से

संसद पर विगत 13 दिसम्बर को हुए आतंकवादी हमले के मद्देनजर भारत को ईंट का जबाव पत्थर से देना होगा। आखिर कब तक संयम और धैर्य की बात होती रहेगी । धैर्य की भी एक सीमा होती है। भारत को अब नरमी और सब्र को त्याग कर पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए कमर कसना होगा। हाँ, इसकी तैयारी पूरी कर ली जानी चाहिए।

करुणेश धुत्रे, महाराष्ट्र

आजादी के ज़ब्त तराने

अंक -9 में प्रकाशित जितेन्द्र धीर की रचना **आजादी के ज़ब्त तराने** काफी सूचनाप्रद है। राष्ट्रीय आन्दोलन के वक्त प्रायः सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में रचे जा रहे आजादी के तरानों ने सचमुच भारतीय जनता के दिलो-दिमाग में अपना घर बना लिए थे। अंग्रेजी हुकूमत की बर्बरता के खिलाफ खड़े होने के लिए ये गीत यहाँ की जनता को विवश किए। इसने जन-मानस को झकझोरा और सचेत किया। सम्पादक-मंडल को साधुवाद।

विभूति भाई पटेल, अहमदाबाद

राष्ट्रीयता का अभाव

भारत में आज जो समस्याएँ है उनमें राष्ट्रीयता की भावना में तेजी से हो रहे ह्रास सर्वोपरि है। धार्मिक व जातीय स्वार्थों ने राष्ट्र की एकता को समाप्त कर दिया है। राष्ट्रीय सोंच के अभाव में ही भारत के सभी राज्यों में भाषा, जाति, वर्ग, सम्प्रदाय तथा धार्मिक समस्याएँ जन्म ले रही है। इस दिशा में चिन्ता करते हुए **विचार दृष्टि** ने अपनी राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित भारत के विभिन्न क्षेत्रों के रचनाकारों की रचनाएं प्रकाशित कर एक ठोस कदम उठाया है जो स्वागत योग्य है। सम्पादक-मंडल के सभी सदस्य हार्दिक बधाई के पात्र हैं।

शिवनाथ चतुर्वेदी, बैंगलोर

लोहा बिल्कुल गरम है

11 सितम्बर को अमेरिका के दो नगरों तथा 13 दिसम्बर को भारत के संसद पर हुए आतंकवादी हमले के बाद पूरे विश्व में आतंकवादियों के खिलाफ माहौल बन गया है क्योंकि विश्व के कई देश तथा भारत के कई राज्य इन आतंकवादियों और उग्रवादियों की काली करतूतों से त्रस्त हैं जिससे निजात हर कोई चाह रहा है। लोहा एकदम गरम है, सिर्फ हथौड़ा चलाने की देर है। अब भी यदि अपने पड़ोसी दुष्ट देश पाकिस्तान स्थित आतंकवादी ठिकानों को नष्ट नहीं किया तो सचमूच सारी दुनिया हम पर हंसने के अलावा और कुछ नही करेगी।

कृपानन्द चौरसिया, गुना, म० प्र०

पत्रिका अपने नाम को सार्थक कर रही

विचार दृष्टि का अंक-9 **राष्ट्रीय एकता विशेषांक** पढ़कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। सचमूच यह अपने नाम को सार्थक कर रही है। विचारों के संकट की इस घड़ी में और दृष्टि के अभाव में यह पत्रिका लुप्त होती राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने का सराहनीय प्रयास कर रही है।

जशराज गुप्त, सिकन्दराबाद

जरा इनकी भी सुनें

जैसे अफगानिस्तान बदला है, पाकिस्तान भी बदलेगा।

- अटल बिहारी वाजापेयी

उनका देश भारत–पाक के बीच बढ़ते तनाव को कम करने के लिए सक्रियतापूर्वक प्रयास कर रहा है।

- अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज डब्लू बुश

अग्रिम इलाकों और सीमा पर सैनिकों की तैनाती कुछ दिनों में पूरी और सुरक्षा बल किसी भी स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार हो जाएंगे।

- रक्षा मंत्री जार्ज फर्नाडीस,सियाचिन से

प्रमाण मांग कर पाकिस्तान दरअसल कार्रवाई करने से बचना चाह रहा है।

- विदेश मंत्री, जशवंत सिंह

भाजपा ने हिंदू वोट बैंक बनाने के लिए खूद को राम मंदिर आन्दोलन से नहीं जोड़ा था क्योंकि हिन्दू समाज विविधताओं से भरा है जिसे वोट बैंक बना पाना असंभव काम है।

- गृहमंत्री लाल कृष्ण आडवाणी

हमने इस्लाम को इतने नीचे गिरा दिया है कि अब इस धर्म का मतलब अशिक्षा, पिछड़ापन, असहिष्णुता और उग्रवाद की रह गया है।

- पाक राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में देश की समस्त जनता एक साथ है। इस संकट की घड़ी में सभी देशवासी एक जुट हैं। दलगत भावना से उठकर सभी राजनैतिक पाटियां एकजुटता और दृढ़ता का परिचय दें।

- पूर्व रक्षा मंत्री शरद पवार

देश की सम्प्रभुता की रक्षा के लिए शत्रु को सबक

विगत 13 दिसम्बर को भारतीय संसद पर पाक आतंकवादियों द्वारा किया गया हमला देश की सम्प्रभुता व अस्मिता पर आक्रमण है उसे अब हर भारतवासी मानता है। इस हमले में आई० एस० आई० की शह पर पाक समर्थित आतंकी संगठन लश्करे-तोइबा और जैश-ए-मोहम्मद के हाथ होने के पर्याप्त सबूत मिल जाने के पश्चात अब भारत में ही नहीं वरन पूरे विश्व के शांति-पसन्द देशों को यह अहसास हो गया है कि असली दुश्मन कौन है। इसमें किसी को शक नहीं कि भारत में जो आतंकवादी गतिविधियां जारी हैं उनका षड्यंत्र पाकिस्तान में ही रचा जा रहा है। पाक अधिकृत कश्मीर में उन आतंकवदियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसलिए समय का तकाजा है कि देश की सम्प्रभुता की रक्षा के लिए आतंकवादियों की चुनौती को स्वीकार कर शत्रु पाकिस्तान को सबक सिखाया जाए। दुर्भाग्य यह है कि भारत अपनी सम्प्रभुता पर चोट करनेवालों के खिलाफ मुँहतोड़ जवाब देने से हिचकिचाता रहा है। भारत ने सदैव इस मामले में नरमी बरती है तथा अपनी सहिष्णुता का परिचय दिया है जिसका खामियाजा उसे भुगतना पड रहा है। पिछले करीब दो दशक से झेल रहे आतंकवादी दंश के बाद उनसे निबटने के हमारे दिखावटी और शिथिल संकल्पों का ही परिणाम है कि हमलावरों ने विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र के प्रतीक भारतीय संसद पर हमला करने का दुस्साहस किया।

भारतीय प्रधानमंत्री ने इस हमले के बाद आर-पार की लड़ाई लड़ने की बात कही है, जो स्वागत योग्य है। हमारे देश का पाला-एक ऐसे पड़ोसी दुश्मन से हुआ है जिसके हुकमरान कुटिल है और बराबर झूठ का सहारा लेकर अपने देशवासियों को कश्मीर के नाम पर गुमराह करते आए हैं। झूठ तो यहाँ तक कि संसद पर हुए हमले को भी पाक ने भारतीय खुफिया एजेन्सियों द्वारा नाटक कहा गया। ऐसे कुटिल और दोहरे चरित्र वाले दुश्मन को नष्ट कर देने में ही देश की भलाई है। भारत को यह कार्य अपने बलबूते पर ही करना होगा क्योंकि जब कभी तालिबानी मानसिकता से लड़ने की बारी आती है तो विश्व के शिखर राष्ट्र मौन धारण कर लेते हैं। वे आतंकवाद को पोषण प्रदान करनेवाली मानसिकता के खिलाफ निर्णायक संघर्ष छेड़ने के लिए तैयार नहीं होते हैं। न्यूयार्क के दो टावरों तथा वाशिंगटन के पेंटागन भवन को ध्वस्त करने के बाद अमेरिका ने अफगानिस्तान में काबिज तालिबान आतंकवादियों को समाप्त करने के लिए जो युद्ध छेड़ा और जिसमें उसे सफलता मिली वह तो उसकी विवशता थी और वह तो मात्र एक राजनीतिक प्रयास था। आतंकवाद को जन्म देने और पोषण करने वाले देश पाकिस्तान के खिलाफ आज भी अमेरिका खुलकर कहाँ सामने आ पा रहा है। अमेरिका जान-बूझकर पाक आतंकवादी की अनदेखी कर रहा है। अमेरिका और ब्रिटेन केवल मानवाधिकार की बात करते हैं किन्तु मानवमूल्यों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध नहीं होते और न तालिबानी विचारधारा जिसके कारण असहिष्णुता पोषण पाती है उस मानसिकता को बढ़ावा मिलता है और जो मानव-मानव के बीच नफरत की सीख देती है, उसकी कठोर आलोचना नहीं कर पाते हैं। अफगानिस्तान में तालिबानों के खत्म होने से तालिबान को जन्म देनेवाली मानसिकता समाप्त हो चुकी है ऐसा नहीं कहा जा सकता। सच तो यह है कि तालिबान सरीखी विचारधारा का अंत तभी सम्भव है जब आस्था, मजहब और दीन के नाम पर नफरत की सीख देने का सिलसिला बंद किया जाए। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि शांति और सहिष्णुता विरोधी इस मानसिकता को मुखौटे धारण किए लोगों द्वारा अब भारत में भी पोषण मिल रहा है। इन मुखौटों का पर्दाफाश करना होगा और पाक के नापाक इरादे को कुचलना होगा तभी आर-पार की लड़ाई सम्भव है।

अपनी सम्प्रभुता की रक्षा करना हर राष्ट्र और उसके वासी का कर्तव्य है। अफगानिस्तान में अमेरिका की सफलता के पीछे सबसे बड़ा तत्व राष्ट्रीय सर्वानुमति है, जिसका सर्वथा अभाव हमारे देश में अभी दिखता है। आपने देखा नहीं आतंकवाद से निबटने के लिए प्रस्तावित कानून 'पोटो' का विपक्ष ने एक स्वर से विरोध ही नहीं किया बल्कि कई दिनों तक संसद को ठप्प रखा।

इसमें कोई दो राय नहीं कि लोकतन्त्र में आम सहमति का होना नितान्त आवश्यक है। आतंकवादी किसी एक सरकार, दल या व्यक्ति की समस्या नहीं है। यह पूरे राष्ट्र की समस्या है और इसका सामना पूरे राष्ट्र को मिलकर करना होगा। आतंकवाद को मिटाने के लिए मात्र कानून की धाराओं की आवश्यकता नहीं है बल्कि दृढ़ निश्चय तथा आतंकवाद के खात्मे के लिए प्रतिबद्धता की जरूरत है। किन्तु जब आतंकवाद को भी वोट प्राप्त करने का हथियार समझा जाने लगे तो स्थिति और भी विकट हो सकती है। इस संकट के समय में सभी दलों तथा आमजनों को सत्ता और चुनाव को नजरअंदाज कर देश को जोड़ने के मुद्दे पर सोचना होगा। फिलहाल अन्तर्राष्ट्रीय माहौल भी भारत के अनुकूल है क्योंकि अमेरिका के अतिरिक्त इस्रायल भी आतंकवादी हमले के खिलाफ कड़ी कार्रवाई कर रहा है। भारत को इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए। बिना शक्ति प्रदर्शन किए आतंकवाद का सिर नहीं कुचला जा सकेगा।

पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित छद्मयुद्ध और आतंकवाद को रोकने में मुस्लिम समाज को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करना चाहिए। दिल्ली-विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन कॉलेज के प्राध्यापक प्रो० गिलानी का संसद पर हुए हमले की साजिश में लिप्त रहना इस बात द्योतक है कि पाक आतंकवादी संगठनों ने मुस्लिम समाज के एक वर्ग के बीच अपनी पैठ बना ली है जो एक खतरनाक स्थिति है। जरूरत इस बात की है कि पाकिस्तान के दुस्साहस को कुचलने के साथ-साथ देश के अन्दर सक्रिय आतंकवादियों तथा उनके समर्थकों को भी कुचलना आवश्यक है।

इसमें कतई सन्देह नहीं कि पाक के खिलाफ कोई भी कर्रवाई सोच-समझकर ही की जानी चाहिए किन्तु पाकिस्तान द्वारा युद्ध थोपने की स्थिति में उसका प्रतिकार कैसे किया जाए,सोच विचार केवल इस पर होना चाहिए। संयम का परिचय तो बहुत दिया गया, अब साहस का परिचय देने का समय है-और साहसी वही कहलाता है जो जोखिम उठाता है।

राष्ट्रीय इतिहास की वैज्ञानिकता

✍ डॉ० राम कृष्ण प्र० सिन्हा

राष्ट्रीय इतिहास लेखकों ने इतिहास में व्यक्ति और समाज के महत्व पर विचार किया है। व्यक्ति से तात्पर्य वीर या हीरो से है। हिस्ट्री और हीरो में कतिपय इतिहासकार हिस्ट्री के पक्ष में तर्क उपस्थित करते हैं और कुछ हीरो के पक्ष में । वस्तुत: इतिहास का निर्माण वीर करता है या वीर का निर्माण इतिहास यह विवादास्पद रहा है। महापुरुषों और नेताओं की महत्ता को अस्वीकार तो नहीं किया जा सकता, पर उन्हें इतिहास का निर्माता भी नहीं माना जा सकता क्योंकि इतिहास का निर्माण जनसाधारण करता है। प्रत्येक परिस्थिति में समाज का महत्व है, व्यक्ति का नहीं- सामाजिक धारा में कभी-कभी एक व्यक्ति महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर युगगति में मोड़ प्रस्तुत कर देता है, लेकिन इस आधार पर उसे समाज का नियामक नहीं माना जा सकता। देश और समाज ही अपने अवस्था विशेष में वैसे व्यक्ति को उत्पन्न कर देते हैं जो समाज की आवश्यकता की पूर्ति में सहायक बन जाते हैं। इस तरह सामाजिक परिस्थितियां ही इतिहास का निर्माण करती हैं, व्यक्ति विशेष नहीं। किन्तु राष्ट्रीय इतिहास लेखक इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते। उनकी दृढ़ धारणा है कि व्यक्ति में हीरो का स्थान सर्वोपरि है और वह इतिहास का निर्माता होता है। परन्तु सत्य वस्तुत: इसके विपरीत है। इतिहास जनता बनाती है, वीर नहीं बनाता, वीर केवल नेतृत्व करता है।

इतिहास के अवैज्ञानिक दृष्टिकोणों में राष्ट्रीय दृष्टिकोण न केवल अवैज्ञानिक है बल्कि संकुचित भी है। इसमें इतिहासकार की दृष्टि राष्ट्र पर होती है, ऐतिहासिक घटनाओं की सत्यता पर नहीं। राष्ट्रोत्थान के लिये वे सहज ही ऐतिहासिक घटनाओं को विकृत कर देते हैं। राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्रोत्थान का संपादन बिना इतिहास को विकृत किये भी किया जा सकता है। राष्ट्रोत्थान और चरित्र निर्माण के लिये रामायण, महाभारत की तरह वीर गाथाएँ लिखी जायें, तो उससे राष्ट्र का अधिक हित हो जाए। राष्ट्रीय इतिहास के कुपरिणामों पर विचार करते हुए भगवत शरण उपाध्याय ने एक महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि "राष्ट्रीय इतिहास की बुनियाद का ही यह फल है कि अतिस्त्रीगामी विलासी पृथ्वीराज युद्ध से भागता हुआ सरस्वती के तट पर मारा जाकर भी अमर है और नरपुंगव जयचन्द्र अपनी मुठ्ठी भर सेना के साथ अस्सी वर्ष की बुढ़ौती में चन्दावर के मैदान में शहीद होकर भी कायरता और देशद्रोहिता का प्रतीक बना हुआ है। इतिहास की राष्ट्रीयता पर यह विकट व्यंग्य है, अमोघ और अमिट। सत्य का विरोध और असत्य का स्थापन इतिहास के लिये कलंक है। वस्तुत: राष्ट्रीय इतिहास को न तो इतिहास मानना चाहिए और न वैसे इतिहास-लेखक को इतिहासकार।

दल और सरकार की नीति के कारण विकृत इतिहास की रचना की जाने लगी। डॉ० आर०सी० मजुमदार के अनुसार इतिहास का उपयोग स्वतंत्र भारत में राष्ट्र और सरकार के लाभ के लिये किया जा रहा है। यह राष्ट्रीय इतिहास का अपना चरित्र है। राष्ट्रीय इतिहास को, या दल या सरकार से नियंत्रित इतिहास को इतिहास मानना अनुचित है। उसमें मात्र ऊपरी कलेवर इतिहास का रहता और उसके अंदर स्वार्थों की ही कालिमामय मूर्ति स्थापित रहती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भारतीय नेताओं ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हिन्दू-मुस्लिम एकता को अनिवार्य माना। उस समय ऐसे इतिहास की आवश्यकता थी, जिसमें मुसलमानों द्वारा किये गये हिन्दुओं पर अत्याचार को कम करके दिखलाया जाय, जिससे दोनों सम्प्रदायों का आपसी दुर्भाव घट जाय। पं० सुन्दर लाल ने **भारत में अंग्रेजी राज** लिखकर मुसलमानों और हिन्दुओं की एकता पर बल दिया है। उसमें वर्णित घटनाओं से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने राष्ट्रहित में कुछ घटनाओं का अतिरंजित स्वरूप उपस्थित किया है और कुछ घटनाओं का उल्लेख ही नहीं किया है। यह निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिये लिखा गया राष्ट्रीय इतिहास का सर्वोत्तम उदाहरण है। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने स्वतंत्रता प्रप्ति के पूर्व यदुनाथ सरकार से राष्ट्रीय इतिहास लेखन के लिये आग्रह किया था। इस पर यदुनाथ सरकार ने उत्तर दिया था कि इतिहास राष्ट्रीय तो हो सकता है, किन्तु इस अर्थ में नहीं कि कुछ घटनाओं को छोड़ दिया जाय और कुछ घटनाओं का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया जाय। इतिहास में सभी घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया जायगा, चाहे वे राष्ट्र गौरव के अनुकूल हों यां प्रतिकूल। राष्ट्रीय दुर्बलताओं को छिपाने के लिये ऐतिहासिक घटनाओं को छोड़ना या तोड़ना-मरोड़ना इतिहास दर्शन के विरुद्ध है। वस्तुत: इतिहास लेखन का दृष्टिकोण वैज्ञानिक होना चाहिये। सत्य का उद्घाटन और पालन प्रत्येक परिस्थिति में अनिवार्य है।

जो राष्ट्रीय इतिहास इस तथ्य को स्वीकार कर नहीं चलता वह इतिहास नहीं है। सत्य की स्थापना इतिहास का अनिवार्य गुण है। सत्य चाहे प्रिय हो या अप्रिय उसका उद्घाटन इतिहास में होना ही चाहिये। इतिहासकार इसी वैज्ञानिक दृष्टि से इतिहास लेखन का कार्य करता है, तभी वह इतिहासकार कहलाने के योग्य है और उसकी रचना भी उसी परिस्थिति में इतिहास के पद पर प्रतिष्ठित हो सकती है। यदुनाथ सरकार ने दृढ़तापूर्वक इतिहास लेखन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समर्थन किया है। सत्य के उद्घाटन की बात जिस ढंग से उन्होंने की है, वह मात्र वैज्ञानिक प्रणाली में ही उपलब्ध है। इतिहास लेखन के सभी दृष्टिकोणों में मात्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही उपयुक्त है। अन्य दृष्टिकोणों के आधार पर लिखा गया इतिहास इतिहास न होकर वह कुछ और ही हो जाता है। अत: निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि मात्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही इतिहास लेखन में उपयुक्त दृष्टिकोण है।

इस संदर्भ में- श्री कैलेट की 'आस्पेक्ट्स ऑफ हिस्ट्री' में लिखी निम्नलिखित पंक्तियाँ दृष्टव्य है "यदि शैतान झूठ बातों का पिता है, तो स्वदेश भक्ति उसकी माता।" इस माता ने विश्व इतिहास लेखन को अत्यंत दूषित बनाया है। इसी में राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद और वर्गवाद आदि प्रवृतियाँ कार्यशील रहीं हैं, और इतिहास के साथ खिलवाड़ हुआ है। ☒

सम्पर्क: एस०एम०डी०कॉलेज
श्रीपालपुर, पुनपुन, पटना

दलित साहित्य दर्शन और हिन्दी कविता

✍ वंशीधर सिंह

दलित साहित्य दलित चेतना का विस्फोट है। यह दलित अस्मिता का दर्द भरा बोध है। इस बोध के विरोध में जो भी है, वह द्विजवादी सवर्ण मानसिकता और हिन्दूवादी वर्चस्व का पृष्टपोषक और दलितजन का शोषक है। दलित दर्शन में आक्रोश, विद्रोह, हठ और परंपराभंजन का भाव है। दलित हिन्दू दर्शन और आर्य संस्कृति के विरोध में बौद्ध दर्शन और श्रमण संस्कृति का पक्षधर है। यह दलितोद्धार से ज्यादा वर्णवादी व्यवस्था परिवर्तन का आकांक्षी है। यह दर्शन से ज्यादा दलित आन्दोलन है। दलित चेतना की प्रखर अभिव्यक्ति सबसे पहले मराठी साहित्य में मिलती है। बाद में इसका पल्लवन कन्नड़, गुजराती, हिन्दी आदि भाषाओं में हुआ। पिछले एक दशक से हिन्दी साहित्य में दलित-विमर्श और स्त्री-विमर्श की गति काफी तेजी से बढ़ी है। रचना और आलोचना में भी इसका असर पड़ा है। हिन्दी में दलित लेखन से संबंधित तीन तरह के लेखक हैं। एक वह जो स्वयं दलित हैं और अपने लेखन में दलित दर्द की अभिव्यक्ति करते हैं। इसका एक ऐसा लेखक-वर्ग है जो गैरदलित होते हुए भी चेतना के स्तर पर दलितों के प्रति सहानुभूतिशील है और अपने लेखन में दलित दर्द और दलित समस्या का आख्यान करता है। तीसरी कोटि में वे लेखक हैं जो परंपरा और यथास्थितिवाद के तहत रचना करते हैं। हिन्दी की वर्तमान रचनात्मक और आलोचनात्मक साहित्य की मीमांसा करने के साथ ही दलित-दर्शन से जुड़े कतिपय प्रश्नों से साक्षात्कार करना समीचीन है। वस्तुतः समाजेतिहास की सच्चाइयों को दरकिनार कर यथार्थ को प्रतिबिंबित नहीं किया जा सकता।

दलित लेखकों का कहना है कि दलित साहित्य दलित आन्दोलन का एक हिस्सा है और ब्राह्मणवादी मानोवृत्ति उनका सबसे बड़ा दुश्मन है। इस दर्शन के बीज गौतम बुद्ध,महात्मा फूले, रामास्वामी नायकर में है जिसका प्रस्फुटन डा० अम्बेदकर के दलित चिंतन में हुआ। डा० अम्बेदकर अपने राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चिंतन में दलित चेतना का विस्फोट करते हैं। डाक्टर अम्बेडकर साहित्य की शक्ति को पहचानते थे, इसलिए उन्होंने आह्वान किया कि हमारे देश में उपेक्षितों, दलितों का बहुत बड़ा संसार है। उनकी वेदना, उनकी व्यथा, उनके शोषण-दोहन को संवेदनशीलता से समझने की कोशिश करो और अपने साहित्य के द्वारा उनके जीवन को उन्नत बनाने का प्रयास करो। डा० अम्बेडकर का यह भी कहना था कि 'अछूतवाद' गुलामी से भी ज्यादा क्रूर है। इसलिए अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए वर्णवादी व्यवस्था को जड़मूल से छिन्न करने की आवश्यकता है। इस तरह दलित साहित्य भारतीय संस्कृति की ब्राह्मणवादी सोच और परंपरा का निषेध करता हुआ दलित विमर्श को आगे बढ़ाता है और प्राकृतिक न्याय के आधार पर वर्ण,वर्ग और लिंगभेद को एक सिरे से नकारता है। कुछ इसी तरह की सोच जनवादी लेखन में भी परिलक्षित है। दलित साहित्य का सार है कि दलित जन की व्यथा-कथा एक दलित ही कह सकता है, क्योंकि वह दर्द का भोक्ता होता है और इसलिए उसकी रचना में अपमानजन्य आक्रोश की अभिव्यक्ति होती है। गैर दलित लेखक संवेदना और सहानुभूति के जरिए दलित दर्द की अभिव्यक्ति करता है, तो उसमें वह सच्चाई और गहराई नहीं हो सकती जो दलित लेखक की रचना में सहज ही अन्तर्मुक्त रहती है। स्वानुभूति, सहानुभूति और सहचिंतन के स्तर पर दलित लेखन में भी कई स्तर होते हैं। इसलिए दलित साहित्य वह है जो दलितों के द्वारा ही लिखा गया हो। कुछ लेखकों का यह भी कहना है कि दलितों के सम्बन्ध में नयी सोच के तहत लिखा गया नया साहित्य है। तो कुछ लेखकों का यह भी कहना है कि दलितों के सम्बन्ध में दलितों के लिए दलितों द्वारा लिखा साहित्य ही दलित साहित्य की कोटि में उगता है। ए० एम० सागर दलित साहित्य की परिभाषा करते हुए कहते हैं कि एक ऐसा साहित्य जो गांव देहात के कच्चे-पक्के घरौंदों जैसे घरों-झोपड़ों से लेकर महानगरों की मलिन बस्तियों में कृमि-कीटों की भाँति जीवन-यापन करने वाले उपेक्षित प्रवंचित सर्वहारा वर्ग को ईश्वरवाद, प्रारब्धवाद, आत्मा तथा पुनर्जन्म के मकड़जाल से मुक्त कर अस्मिता का बोध कराये और उसके कुण्ठाजनित आक्रोश को सम्प्रेषित कर उसे अपने मानवीय अधिकारों की अभिप्राप्ति हेतु संघर्ष के लिए बाध्य करे, वही दलित साहित्य है। इस तरह वर्ण-जाति वर्गविहीन समाज की संरचना करना और वह भी समता,स्वतंत्रता और बन्धुता तथा प्राकृतिक न्याय के सर्वकालीक और सार्वभौमिक आदर्श सिद्धान्तों के आधार पर दलित साहित्य का अभिप्रेक्षित लक्ष्य कहा जा सकता है। इसलिए यह प्रचलित मान्यताओं, अंधविश्वासों के अस्वीकरण का भी साहित्य है। दलित साहित्य की भाषा भोगे गए कटु यथार्थ को त्रासद स्मृतियों से निसृत हुई कर्कशता, आक्रामकता तथा भदेसपन की भाषा है।

जनवादी साहित्य भी वर्ण-वर्ग और लिंगभेद का निषेध करता है और यह मानता है कि समाज में वर्ग-विहीन समाज को समाप्त कर ही साम्यवादी व्यवस्था लाई जा सकती है, लेकिन भारत जैसे देश में वर्ण-व्यवस्था भी एक हकीकत है, जिसका रूपान्तरण वर्गीय अवधारणा में करने की आवश्यकता है। वंचितों, दलितों और गरीबों का सपना तभी पूरा होगा, जब वर्ग-विहीन समाज-रचना का स्वप्न साकार होगा। यह एक दीर्घकालीन संघर्ष के जरिए ही हासिल किया जा सकता है और चूंकि दलितजन ही देश का बहुजन समाज है, इसलिए इनकी चिंताओं को लेकर और उन्हें उस संघर्ष से जोड़कर ही आमूल परिवर्तन का कार्य पूरा किया जा सकता है। जनवादी साहित्य पूरी मानवता के सर्वांगीण विकास के लिए जनता की जनवादी क्रान्ति में विश्वास करता है और मूलाधार में परिवर्तन के लिए संगठित राजनीतिक शक्तियों की क्रियाशीलता से ही इसे संभव मानता है। संस्कृति और साहित्य तथा कला जनता के जीवन-संघर्षों और सामाजिक क्रियाशीलता की ही उपज होती है, इसलिए उनमें जनता की सोच और उनकी संघर्ष-चेतना भी प्रतिबिंबित होती है। जनवादी साहित्य गैरदलित लेखकों के दलित जीवन संदर्भों पर किये गये लेखन की संवेदनात्मक ऊष्मा को स्वीकार करता है, परन्तु वह यह भी मानता है कि आत्मानुभव और आपबीती का कोई भी विकल्प नहीं हो सकता। चूंकि सदियों तक दलितों ने जीवन के नरक की जिन मर्मान्तक यातनाओं को भोगा है, सामाजिक अपमान के जिस दंश को सहा है उनके पक्षधर गैरदलित लेखकों में वह आत्मानुभव और आपबीती

नहीं हो सकती। इसलिए जनवादी साहित्य और दलित साहित्य में कोई मूलभूत अंतर नहीं है और इस तरह जनवादी चिंतन के क्षेत्र में दलित लेखकों द्वारा दलित हित में लिखा गया साहित्य दलित साहित्य की कोटि में न मानने का कोई कारण नहीं है। लेकिन जब वर्ग और वर्ण को गैर जरूरी और बेवजह एक मुद्दा बनाकर इस दलित विमर्श को विपथित करने का प्रयास किया जाता है तो मार्क्स बनाम अम्बेडकर के विवाद में उलझाकर दलित साहित्य के मूल दर्शन को क्षतिग्रस्त ही किया जाता है। इसलिए जनवादी साहित्य के समीक्षकों की यह समझ काफी महत्वपूर्ण है कि किसी भी देश की आर्थिक स्थिति उसकी सामाजिक संरचना का मुख्य कारक होती है, लेकिन भारत की अपनी सामाजिक संरचना में वर्ण की हकीकत को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता। जहां मार्क्स का समाज दर्शन वर्ग को मुख्य मानकर चलता है वहां अम्बेडकर के लिए वर्ण ही मुख्य है। मार्क्स का समाज-दर्शन विश्व के सारे समाजों पर समान रूप से लागू होता है, जबकि अम्बेडकर का समाज-चिंतन वर्ण-विभक्त और वर्ग-विभक्त भारतीय समाज से ही सर्वहारा की मुक्ति का था और अम्बेडकर की मुख्य चिंता वर्ण विभक्त भारतीय समाज में दलितजन की मुक्ति की थी। डॉ० राममनोहर लोहिया का कहना था कि वर्ग एक बहुत बड़ी सच्चाई है परन्तु भारत में वर्ण की हकीकत को नजर-अंदाज नहीं किया जा सकता।

इसी अवधारणा को एक रूपक के सहारे स्पष्ट करते हुए देवेन्द्र दीपक कहते हैं कि अस्पृश्यता एक अंधा-कुआं है। कुंए में गिरे आदमी को लेकर चिंता के दो स्तर हैं। एक उस व्यक्ति की चिंता है जो कुंए में गिरा हुआ है और उससे बाहर निकलने की कोशिश में हलकान और लहू-लुहान हो रहा है। दूसरी चिंता उस व्यक्ति की चिंता है जो कुएं की जगत पर खड़ा होकर कुएं में गिरे व्यक्ति को बचाने की गुहार लगा रहा है। कुंए में गिरा व्यक्ति अछूत है और कुंए की जगत पर खड़ा व्यक्ति सवर्ण है। इस तरह कुंए में गिरे व्यक्ति की चिंता आहत की चिंता है और जगत के ऊपर खड़े व्यक्ति की सवर्ण चिंता सदाशयी की चिंता है। स्पष्टत: दोनों की चिंताओं का आधार और आयाम भिन्न है।

इसी सोच के आधार पर दलित साहित्य विकसित हो रहा है और वर्तमान में विमर्श के केन्द्र में आ गया है। दलित साहित्य की रचना और आलोचना में इसकी अनुगूंज सुनाई पड़ती है। दलित कथा साहित्य, दलित काव्य साहित्य और दलित आलोचना साहित्य की त्वरा और तेवर किंचित भिन्न है और नये सौंदर्यशास्त्रीय प्रतिमान गढ़ने की चिंता में गतिशील है। दलित लेखकों की आत्मकथाओं में जिस तरह की आत्मानुभूति और संदेश के स्वर आ रहे हैं, उनसे पता चलता है कि दलित लेखन यदि अपने प्रकृत मार्ग से नहीं भटका तो हिन्दी में सर्वथा नयी जमीन तोड़ सकता है और नया सौंदर्यशास्त्रीय प्रतिमान गढ़ सकता है। लेकिन दलित लेखन का कुछ हिस्सा ऐसा भी है जिसमें अनर्वस्तु का कलात्मक संप्रेषण न होकर मात्र अभिकन है। जबकि कोई भी साहित्य वस्तु और रूप की एकात्म अन्विति में ही महान होता है। उसमें द्वन्द्वात्मक एकता होती है। लेकिन दलित साहित्य अपने निर्माण की अवस्था में है, इसलिए उसमें कलात्मक निर्वाह की कमी भी है। ओमप्रकाश वाल्मीकि, श्यौराज सिंह बेचैन, जयप्रकाश कर्दम, कवंलभारती, रूपसिंह चंदेल, डॉ० धर्मवीर, डॉ० वी० कृष्णा, मोहनदास नैमिशराय, डॉ० पुरूषोतम सत्यप्रेमी आदि रचनाकार दलित साहित्य के क्षेत्र में उभरकर सामने आये हैं और अपनी रचनाशीलता से उसे समृद्ध कर रहे हैं।

हिन्दी साहित्य में यद्यपि रचना और संस्कृति की सुदीर्घ परंपरा रही है, लेकिन दलित साहित्य भारतीय संस्कृति में अपने लिए कुछ भी गौरवशाली नहीं मानता। दलित चिंतन के बीच रैदास और कबीर में अवश्य पाये जाते हैं। इसलिए दलित लेखन की परंपरा भी खोजी जा सकती है। लेकिन अतिउत्साह में मतवादी लेखक दलित साहित्य को अम्बेडकर से सीधे जोड़कर अपनी जड़ों से कट जाने की कोशिश अनजाने ही कर रहे हैं। इस एकांगी प्रकृति से ऊपर उठकर यदि दलित चिंतन और लेखन के बीज-बिन्दु की खोज की जाय तो वह प्राचीन साहित्य में भी उपलब्ध हो सकता है। क्योंकि कोई भी संस्कृति छिन्नमूल नहीं होती। उसकी अपनी परंपरा भी होती है और उसमें समयानुकूल कुछ नया भी जोड़ा जाता है। यही परंपरा और प्रगति का अंत: सम्बन्ध है। स्वयं तथागत बुद्ध ने अपने चिंतन और आचरण में वर्णभेद को मानने से इनकार किया है। कदाचित् इसी से प्रेरित होकर डॉ०अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को स्वीकार करने की स्थिति में आए थे। रैदास और कबीर के साहित्य में वर्ण और जाति व्यवस्था पर प्रहार किया गया है। श्योराज सिंह बेचैन स्वयं स्वीकार करते हैं कि आधुनिक हिन्दी का दलित साहित्य रैदास और कबीर की परंपरा का साहित्य है, रैदास डंके की चोट पर कहते हैं कि-एक मिट्टी के हैं सब भाण्डे, कौन शूद्र कौन है पाण्डे। वह इससे आगे जाकर श्रम की महत्ता स्थापित करते नज़र आते हैं, जब वह कहते हैं- **रैदास स्रम करि खाइहिं, ज्यों लों पाए बेसाय नेक कमाई जउ करई, कबहु न निहफल जाय।**

उसी तरह कबीर उस देश में जाने की बात करते हैं 'जहां जाति बरन कुछ नाहीं प्रैर डंके की चोट पर यह उद्घोषणा करते हैं कि 'हम हौं जाति कमीना' चर्मकार और जुलाहा जाति के तत्कालीन विषमताजन्य दंश की अभिव्यक्ति उनके साहित्य में पुष्कल माया में है। उसी तरह हीरालाल ने सन् 1879 में-जो पत्रकार, नाटककार और कवि थे अपने पत्र **'आदि हिन्दू'** में कहा है-**है सम्य सबसे हिन्द के प्राचीन हैं हकदार हम, हाँ-हाँ बनाया शूद्र हमको, ये कभी सरदार हम।** स्वामी अछूतानन्द और धोखामल ने भी दलितों के लिए काफी बुछ रचनात्मक लेखन किया है। स्वमी अछूतानन्द के आमंत्रण पर डा० अम्बेडकर स्वयं 1928 में आयोजित दलित सम्मेलन में शामिल हुये थे। हीरा डोम ने भी दलितों के ऊपर कविताएं लिखी थीं। इसलिए दलित साहित्य की परंपरा से इनकार नहीं किया जा सकता। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए जयप्रकाश कर्दम अपनी कविता में कहते हैं- **जब जब पुरवाई चलती है/मेरे पिता की कमर में लगी बढ़नी जाट की वह लाठी/मेरे सीने में कसकती है।** ओमप्रकाश बाल्मीकि अपनी कविता पुस्तक की कई कविताओं में दलित दर्द को उरेहते हैं और कहते हैं कि-**'बस्तियों से खदेड़े गये/ओ मेरे पुरखो/तुम चुप रहे उन रातों में/ जब तुम्हें प्रेम करना था/ तुम तलाशते रहे मुठ्ठी भर चावल/सपने गिरवी रखकर।** इसमें अपमान और पीड़ा का स्वर मुखरित है। समकालीन दलित साहित्य अपने पूरे परिवेश और आयाम में दलित जन की व्यथा-कथा कहता, वर्ण-व्यवस्था में आमूल परिवर्तन का आकांक्षी है। ⊠

सम्पर्क : इन्दिरा नगर, रोड न०-5
पटना-1, ☎: 346142

लेखक और समाज

पी०आर०वासुदेवन "शेष"

लेखक वही हो सकता है जिसकी रचनाओं का प्रभाव समाज पर अधिक पड़ता है। समाज की मूल प्रवृतियों की पहचान कर सर्वजन की भाषा में सबसे मनोनुकूल साहित्य का निर्माण करने वाला लेखक ही मनोनीत हो जाता है। समाज का यथार्थ चित्र खीचनेवाला कलाकार जब अपनी रचना में आदर्श का मिश्रण कर देता है तो उसका महत्व और भी बढ़ जाता है। साहित्य का सबसे अधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य है- पाठकों का मनोरंजन करना किन्तु यदि मनोरंजन के साथ आदर्श स्थापना भी हो जाय और उसकी उपयोगिता व्यावहारिक जीवन में हो सके तो कहना ही क्या?

एक अच्छे लेखक की शक्ति के समक्ष तलवार, तोप एवं बम इत्यादि की शक्ति भी नगण्य है। लेखक मानव की अनुभूतियों की खान है। इसमें भूत, भविष्य एवं वर्तमान तीनों निहित है। यह वर्तमान को उजागर करता है, बीते समय की याद दिलवाता है एवं भविष्य के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। एक अच्छे लेखक में सत्यं शिवं सुन्दरम की भावना होनी चाहिए। राष्ट्र की उन्नति लेखक की लेखनी पर निर्भर करती है। लेखक को यदि समाज से अलग कर दिया जाए, तो उसकी उन्नति असम्भव है चाहे वह कितना ही शक्ति सम्पन्न एवं बुद्धिमान क्यों न हो। मनुष्य में उत्तम गुणों का विकास समाज द्वारा ही होता है एवं उसके चरित्र का भी निर्माण करता है। समाज ही उसे कर्तव्यों एवं अधिकारों का बोध कराता है।

अच्छा लेखक समाज में क्रांति ला देता है। वह समाज में व्याप्त निराशा, दुखों इत्यादि को दूर करने में समर्थ होता है। वह संजीवनी बूटी है जो मरे हुए में भी प्राण फूंक देता है। वाल्टेयर के साहित्य ने रूस और फ्रांस में क्रांति फैला दी। जनता में भक्ति भाव का संचार सूर तुलसी के काव्य ने किया। राणा प्रताप की जीवन दशा पृथ्वीराज के पत्र ने परिवर्तित कर दी।

समाज से बाहर लेखक की कल्पना करना ही व्यर्थ होगा। समाज के बदलने के साथ-साथ लेखक की सोच में, लेखनी में बदलाव आता है। लेखक अपनी लेखनी के द्वारा मानव में एक आभा, चेतना जाग्रत करता है। इसी चेतना से गुलामी की जजीरों में जकड़े देशों ने स्वतंत्रता हासिल की। भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना को तीव्रतर करने में बंकिम चद्र के राष्ट्रगीत को सर्वाधिक श्रेय जाता है। एक अच्छे और सुदढ़ समाज का निर्माण लेखक ही हो सकता है, जिससे मानव सर्वांगीण विकास करता है। लेखक का साहित्य

एक अच्छे लेखक की शक्ति के समक्ष तलवार तोप एवं बम इत्यादि की शक्ति भी नगण्य है। लेखक मानव की अनुभूतियों की खान है। इसमें भूत, भविष्य एवं वर्तमान तीनों निहित है। यह वर्तमान को उजागर करता है। बीते समय की याद दिलवाता है एवं भविष्य के लिए प्रेरणा प्रदान करता है।

मृत्यु से अमृत की तरफ, अधंकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। उन्नत समाज के द्वारा ही उत्तम साहित्यकार का सृजन हो सकता है और गिरे समाज का साहित्य भी निम्नकोटि का होगा।

हमारा भारत प्राचीन समय से ही आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत रहा है तभी हमारे यहाँ ऋषि- मुनियों ने वेद, पुराण इत्यादि लिखी जो कि ब्रहम्वाक्य (वेद के वचन) कहे जाते हैं। लेखक एवं समाज की आधारशिला एक ही है। दोनों ही एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। समाज में घटनायें होती हैं, जो साहित्यकार द्वारा लिखी जाती है। लेखक एक प्रकाशपुंज है जो जीवन को प्रकाशमय कर देता है एवं नवीन चेतना जाग्रत कर देता है।

लेखक साहित्य में अपना दृष्टिकोण नवीय तथा समाज में व्याप्त मान्यताओं एवं परिस्थितियों को अधिकाधिक उजागर करता है। एक अच्छा साहित्कार मनुष्य के उदास मन में आशादीप जलाने एवं अन्धकारमय जीवन में प्रकाश की किरण प्रज्ज्वलित कर उसका गिरा हुआ मन उठाकर फिर से कार्य में जुटने की प्रेरणा प्रदान की है।

लेखक एवं समाज एक दूसरे पर उपकार करते रहते हैं, अर्थात एक दूसरे पर पूरी तरह से आश्रित हैं। दोनों ही मानव का हित करते हैं। साहित्यकार समाज को शक्ति प्रदान करता है और समाज साहित्यकार को बनाता है।

प्रत्येक साहित्यकार अपने समाज से इस सीमा तक प्रभावित होता है इसका उदाहरण हम अरब के कवियों द्वारा लिखित उपमाओं में कर सकते हैं। जैसे यहाँ का कवि गर्दन की उपमा शखं से देता है तथा अरब का कवि गर्दन की उपमा सुराही से देता है तथा भारतीय कवि चाल की उपमा हसं तथा गज की चाल से देते हैं। अब साहित्य में जीर्ण शीर्ण रीति रिवाज एवं मान्यताओं पर कठोर प्रहार किये जाते हैं। तथा समाज के प्रति विद्रोह की आवाज उठायी जाती है जैसे किसी कवि के शब्दों में-**श्वानों को मिलता दूध दही, भूखे बालक चिल्लाते हैं, माँ की छाती से चिपक जाड़े की रात बिताते हैं।**

बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनका समाज अनादर करता है, उनको बुरा भला कहता है फिर भी वे बांछित राह पर निरंतर चलते हैं। ऐसे करने पर लोग उनका मजाक बनाते हैं, किन्तु अन्त में वे ही समाज द्वारा सम्मानीय हो जाते है।

आज के समाज में पाश्चात्य प्रभाव के कारण लज्जा नामक गुण तो जैसे प्राय लुप्त सा हो गया है। भौतिकता में अधिक आस्था होने के कारण आज मनुष्य अशान्ति महसूस कर रहा है। आज हमें ऐसे साहित्यकार की आवश्यकता है जो समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करके एक स्वच्छ समाज का निर्माण करने में सक्षम हो। ⊠

**सम्पर्क : कार्यालय,
महालेखाकार, तमिलनाडु, चेन्नै**

साहित्य के बिना सामाजिक परिवर्तन सम्भव नहीं डॉ० मेहता के काव्य-संग्रह तथागत का लोकार्पण

प्रस्तुति : मनोज कुमार

राष्ट्रीय विचार मंच एवं विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क के संयुक्त तत्वावधान में विगत 12 नवम्बर, 2001 को पटना के होटल पाटलिपुत्र अशोक में प्रवासी भारतीय तथा न्यूयार्क के प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ **डॉ० विजय कुमार मेहता** के काव्य-संग्रह **तथागत** पत्र-पत्रिकाओं के पाठक अपेक्षाकृत और राज्यों के अधिक हैं। जिस प्रकार बुद्ध ने मध्यम मार्ग चुना, हमने भी उन्हीं के रास्ते चलकर मध्यम मार्ग का ही चयन किया है। डॉ० मेहता और उनकी पुस्तक **तथागत** के सन्दर्भ में उन्होंने कहा कि वे एक ओर कवि हृदय हैं और से होता है। कवि डॉ० मेहता ने अपनी पुस्तक **तथागत** में तथागत के आदर्श और उनकी कल्याणी वाणी के माध्यम से दुःखी मानव को आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। उन्होंने पुनः कहा कि डॉ० मेहता सामाजिक समता तथा मानव कल्याण के अत्यन्त प्रबुद्ध

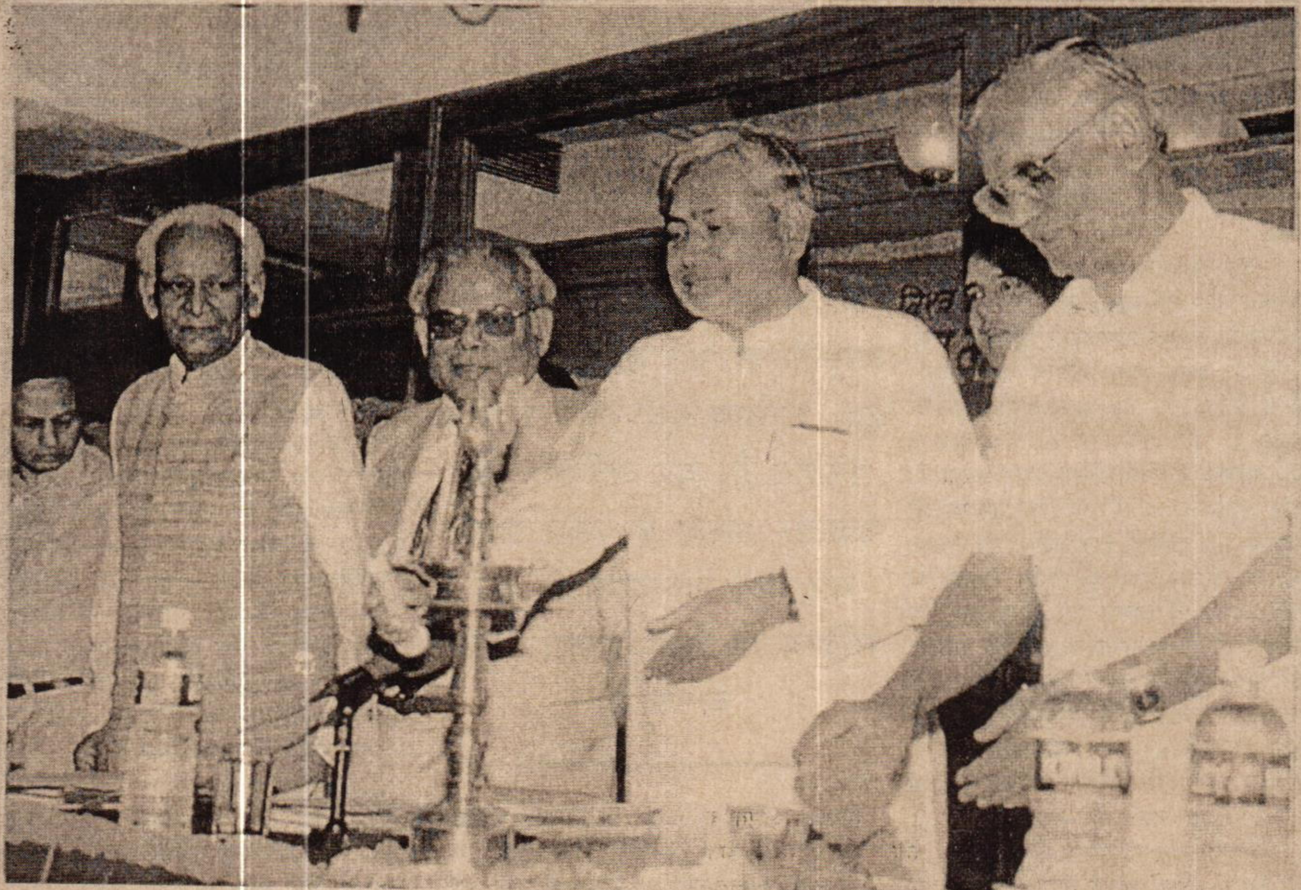

दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का उद्घाटन करते हुए रेल मंत्री श्री नीतीश कुमार उनके बाएं डॉ. विजय कुमार मेहता, बनारसी सिंह तथा डॉ ए. के. विश्वकर्मा

का लोकार्पण करते हुए भारत सरकार के रेल मंत्री **नीतीश कुमार** ने कहा कि साहित्य के बिना सामाजिक परिवर्तन सम्भव नहीं है। उन्होंने पुनः कहा कि आज हमारे समाज में कई विषमताएं व्याप्त हैं जिसके समाधान के लिए साहित्यकारों को आगे आना चाहिए। दूरदर्शन के कारण साहित्य के पाठकों में कमी की बात का खण्डन करते हुए श्री कुमार ने कहा कि सच तो यह है कि बिहार में पुस्तकें तथा दूसरी ओर हृदय रोग चिकित्सक भी हैं, इसलिए उनके हृदय से निकली कविताओं का यह संग्रह निश्चित रूप से सराहनीय है।

इस अवसर पर दिल्ली से पधारे साहित्य जगत के सशक्त हस्ताक्षर पद्मश्री डॉ० श्याम सिंह 'शशि' जो समारोह के मुख्य अतिथि थे और जिन्होंने लोकार्पित पुस्तक **तथागत** की भूमिका लिखी है, ने कहा कि कोई व्यक्ति जन्म से ब्राह्मण व शूद्र नहीं होता बल्कि कर्म गायक हैं उनकी चिन्ता मानव की लक्ष्यहीनता है, जरा, व्याधि और मृत्यु की व्यथा कथा है, न्याय, धर्म के आडम्बर में बहता गरल है, समृद्ध वर्णजातियों के दुष्चक्र में फंसी शोषित, दलित मनुजता है और असमता, अन्याय तथा पीड़ा में कराहता मानव है।

अपने लेखकीय उद्गार में कवि डॉ० विजय कुमार मेहता ने कहा कि उन्होंने तथागत को भगवान के रूप में नहीं देखा बल्कि उन्हें

महामानव और इन्सान के रूप में वे मानते हैं डॉ० मेहता ने तथागत को सबसे बड़ा क्रांतिकारी भी कहा। अपनी पुस्तक रचना की पृष्ठभूमि में डॉ० मेहता का कहना है कि एथेन्स में अपने परिवार के साथ एक यात्रा के दौरान उन्हें अपने देश की मिट्टी की सोंधी गन्ध याद आई और उस गंगा को नहीं भूल सका जिसकी गोद में उनका पालन-पोषण हुआ

वहीं आकाशवाणी, दिल्ली के निदेशक डॉ० अवध बिहारी विश्वकर्मा ने कहा कि जिस समय समाज अव्यवस्थित हो चला था और जीवन मूल्य खोखले साबित हो रहे थे, उस समय बुद्ध ने समाज में सुधार लाने का प्रयास किया।

समारोह के अध्यक्ष जियालाल आर्य ने कहा कि साहित्य वही है, जिसे पढ़ने के बाद

शाहकुण्ड प्रखण्ड स्थित ग्राम भीखमपुर में जन्में डॉ० विजय कुमार मेहता विगत तीस वर्षों से हृदय रोग विशेषज्ञ के रूप में न्यू यार्क में चिकित्सा कार्य में व्यस्त रहते हुए भी इन दिनों अपने अनूठे प्रबन्ध-काव्य **भिक्षुणी** को अन्तिम रूप देने में कार्यरत हैं। प्रस्तुत खण्ड-काव्य **तथागत** उसी प्रबन्ध-काव्य का एक अंश है, जो मगध, वैशाली, कौशल की

डॉ मेहता अपने लेखकीय उद्गार व्यक्त करते हुए । मंच पर बैठे है उनके बांए मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर, आकाशवाणी दिल्ली के निदेशक डॉ अवध विहारी विश्वकर्मा तथा वरिष्ठ पत्रकार बनारसी सिंह ।

था। उन्होंने पुनः कहा कि भारतीय संस्कृति के व्यापक प्रचार न होने के कारण विदेशों में उसके विकास में रूकावट आई है और उस रूकावट को तोड़ने के लिए भारतीय तथा भारतीय मूल के नागरिकों को मिलकर प्रयास करना चाहिए। भारत की विचारधारा मध्यममार्गी रही है और मध्यमार्ग के लोगों को ध्यान में रखकर पुस्तकें न लिखे जाने के कारण भारतीय समाज में गिरावट आई है।

इस समारोह में देश-विदेश के कोने-कोने से पधारे पत्रकारों-साहित्यकारों ने अपने विचार व्यक्त किए। दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकार बनारसी सिंह ने अपने उद्गार में इस पुस्तक को भारतीय-पश्चिमी संस्कृति का संगम कहा

पाठक के अन्दर कुछ विचार और प्रश्न उठे। **तथागत** के रचयिता डॉ० मेहता ने गौतम बुद्ध को भगवान के रूप में नहीं बल्कि महामानव के रूप में प्रस्तुत किया है।

प्रारम्भ में समारोह के स्वागताध्यक्ष तथा विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क के महामंत्री वेद प्रकाश सिंह ने मान्य अतिथियों तथा उपस्थित प्रबुद्ध जनों का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में न्यू यार्क स्थित विश्व हिन्दी समिति तथा उसके मुख-पत्र **सौरभ** की भूमिका पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम-संचालन के क्रम में राष्ट्रीय विचार मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने बताया कि बिहार के भागलपुर जिला के राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक दशा तथा बुद्ध के क्रांतिकारी जीवन-दर्शन का चित्रण है। श्री सिद्धेश्वर ने पुनः कहा कि डॉ मेहता विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क के अध्यक्ष पद के साथ-साथ सौरभ इनकारपोरटेड के निदेशक मण्डल के चेयरमैन तथा फ्लशिंग स्थित हिन्दू सेन्टर के संरक्षक मण्डल के चेयरमैन पद को भी सुशोभित कर रहे हैं।

समारोह को संबोधित करते हुए नगर के डॉ० राधाकृष्ण सिंह ने कहा कि बुद्ध के मन में करुणा, प्रेम और शांति की भाँति इस पुस्तक में भी करुणा का सन्देश है और जहाँ करुणा है वहीं कविता है।

.....शेष भाग 25 पर

पुस्तक, पुस्तकालय और समाज पर संगोष्ठी

यदि हमारा ध्यान पठन-पाठन की ओर होता और जो कुछ हम पढ़ते उसे अपने जीवन में अपना पाते तो आज के समाज में जो हिंसा, बलात्कार, हत्याएं और अपहरण की घटनाएं घट रही हैं वह नहीं हो पाती। ये विचार हैं **विचार दृष्टि** के सम्पादक **सिद्धेश्वर** के, जिसे उन्होंने विगत 20 नवम्बर को **राष्ट्रीय विचार मंच** की ओर से दिल्ली दूरदर्शन के **अमरनाथ 'अमर'** के सम्मान में पटना के सच्चिदानन्द सिन्हा लाइब्रेरी के सभागार में आयोजित विचार संगोष्ठी में **पुस्तक, पुस्तकालय और समाज** विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए व्यक्त किए। पुस्तक और पुस्तकालय की समाज और देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी के इस बढ़ते दौर में प्रत्येक राज्य को पुस्तकालय सम्बन्धी नियमावली तथा केन्द्र को इस दिशा में गंभीरता से विचार कर एक राष्ट्रीय नीति बनाने की आवश्यकता है क्योंकि पुस्तकालय रूपी ज्ञान मंदिर के पुनीत प्रांगण में आकर ही प्रत्येक व्यक्ति समानता, हार्दिकता और भ्रातृत्व का पाठ पढ़ता है तथा देश और समाज को मंगलमय बनाने की योग्यता अर्जित करता है।

इसके पूर्व पुस्तकालय विज्ञानी तथा सिन्हा लाइब्रेरी के प्रधान पुस्तकाध्यक्ष डॉ० रामशोभित प्र० सिंह ने विषय-वस्तु को प्रस्तुत करते हुए पुस्तकालय आन्दोलन को गतिशील बनाने पर बल दिया तथा समाज की संरचना और देश के आर्थिक एवं सांस्कृतिक संरचना में सार्वजनिक पुस्तकालयों की उपादेयता पर विस्तार से चर्चा की।

प्रारम्भ में अतिथियों व सुधी श्रोताओं का स्वागत करते हुए डॉ० शिवनारायण ने कहा कि विकासोन्मुख देशों की मौखिक संस्कृति की लम्बी परम्परा में सूचनाओं और संचार माध्यमों की भूमिका को देखते हुए पुस्तकालय को एक सशक्त संचार केन्द्र के रूप में मानने का विचार तेजी से फैल रहा है क्योंकि इसके सूचना संचारण से लोगों पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

इस अवसर पर डॉ० राधाकृष्ण सिंह, नृपेन्द्रनाथ गुप्त तथा पूर्व विधायक राधाकान्त यादव ने भी पुस्तक और पुस्तकालय की महत्ता पर प्रकाश डाला।

दूरदर्शन, नई दिल्ली के कार्यक्रम अधिशासी तथा युवा रचनाकार अमरनाथ 'अमर' ने अपने सम्मान में व्यक्त उद्गारों के उत्तर में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए भाव विह्वल हो अपने दायित्व के निर्वहन में सतत सचेष्ट रहते हुए उसे एक मिशन के रूप में लेने की बात कही। इस ख्याल से दूरदर्शन में उन रचनाकारों एवं प्रख्यात साहित्यकारों की रचनाओं को विशेष महत्व देने पर बल दिया जिसे अबतक न तो समुचित सम्मान मिल पाया है और ना ही उनकी रचनाओं को आम जन तक ले जाया जा सका है। अपने उद्गार के बाद श्री **'अमर'** ने गांवों से जुड़ी अपनी कई कविताएं सुनाकर सुधी श्रोताओं को सराबोर किया।

विचार गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ० कलानाथ मिश्र ने अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री अमर को अपनी शुभकामनाएं देते हुए समाज में पुस्तक व पुस्तकालय के महत्वपूर्ण योगदान की चर्चा की।

अन्त में प्रो० बी०एन० विश्वकर्मा के धन्यवाद-ज्ञापन के बाद संगोष्ठी का समापन हुआ।

प्रस्तुति : शिवकुमार

मौलाना आजाद की जयंती सोल्लास सम्पन्न

आजाद ने धर्म निरपेक्षता व सामाजिक सद्भाव जगाए

विगत 11 नवम्बर, 2001 को भारत के पूर्व शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती के अवसर पर **राष्ट्रीय विचार मंच** की ओर से पटना के होटल पाटलिपुत्र अशोक परिसर में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता करते हुए प्रवासी भारतीय तथा न्यूयार्क स्थित विश्व हिन्दी समिति के अध्यक्ष **डॉ० विजय कुमार मेहता** ने मौलाना आजाद के व्यक्तित्व के बारे में कहा कि उन्होंने आजादी के बाद हिन्दुस्तान के वासियों में धर्मनिरपेक्षता व सामाजिक सद्भाव जगाने का अथक प्रयास किया। **विचार दृष्टि** के सम्पादक **सिद्धेश्वर** ने मौलाना आजाद के पत्रकारिता से जुड़े जीवन को रेखांकित किया। इस अवसर पर मंच के उपाध्यक्ष डॉ० **एस०एफ० र.ब** ने आजाद के लेखन की प्रतिबद्धता और गुणवत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। संगोष्ठी में जिन अन्य वक्ताओं ने अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त किए उनमें दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकार बनारसी सिंह, दिल्ली आकाशवाणी के निदेशक डॉ० अवध विहारी विश्वकर्मा, डॉ० शिवनारायण तथा डॉ० कलानाथ मिश्र का नाम उल्लेखनीय है।

प्रस्तुति : दीपक कुमार

पाक हमारे लोकतंत्र की बुनियाद को कमजोर करने में जी जान से लगा
साहित्यकार शंकर दयाल सिंह की स्मृति में व्याख्यान

प्रस्तुतिः सीताराम सिंह

सुपरिचित साहित्यकार व समाज सेवी **स्व० शंकर दयाल सिंह** की जयंती पर विगत 27 दिसम्बर को नई दिल्ली के इन्डिया इन्टरनेशनल सेन्टर के अनेक्सी में **शंकर संस्कृति प्रतिष्ठान** की ओर से छठे शंकर दयाल सिंह स्मृति व्याख्यानमाला के तहत **'भारतीय संविधान और संसदीय मर्यादा'** विषय पर मुख्य अतिथि के पद से अपने विचार व्यक्त करते हुए राज्यसभा की उपसभापति **डॉ. नजमा हेपतुल्ला** ने कहा कि पाकिस्तान अपने यहाँ लोकतंत्र की बुनियाद को कमजोर करने में जी जान से लगा है। उन्होंने कहा कि संसद की विधायिका और कार्यपालिका से जुड़े लोगों से भी होनी चाहिए तभी हमारा देश सही लोकतंत्र का उदाहरण प्रस्तुत कर सकेगा।

डोगरी की कवयित्री डॉ. पद्मा सचदेव ने सभी अतिथियों को पुष्प गुच्छ भेंट किए और उनका स्वागत किया स्व0 सिंह की सुपुत्री रश्मि सिंह ने । प्रतिष्ठान के सचिव रंजन कुमार सिंह ने प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमारे पूज्य पिता स्व० सिंह झोपड़ी की ठहरी और जनप्रतिनिधियों के ठाठ को लेकर चिंतित रहते थे। इस अवसर पर प्रसिद्ध विधिवेत्ता डॉ. लक्ष्मी मल सिंधवी भारत के पूर्व

मंच पर बैठे हैं दायें से श्री शिवराज पाटिल, डॉ नज़मा हेपतुल्ला तथा एल. एम. सिंधवी अतिथियों का स्वागत करती हुई श्रीमती रश्मि सिंह

मर्यादा को आंतरिक खतरा नहीं है, बल्कि बाहरी लोगों से है। संसद की मर्यादा के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पहलुओं को विशेष रूप से रेखांकित किया और नवयुवकों को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की रक्षा के लिए सजग रहने का आह्वान किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सांसद तथा संसद में कांग्रेस संसदीय दल के उपनेता **शिवराज पाटिल** ने स्व० शंकर दयाल सिंह को **'शब्द शक्ति स्रष्टा'** बताया और कहा कि आज संसद में चर्चा कम और प्रदर्शन अधिक होता है। उन्होंने कहा कि जो अपेक्षाएं सम्भ्रांत नागरिकों से की जा सकती है, ठीक वही अपेक्षाएं नियंत्रक-महालेखा परीक्षक और वर्तमान सांसद टी. एन. चतुर्वेदी, भारत के पूर्व विदेश राज्य मंत्री हरिकिशोर सिंह, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री राम सुन्दर दास साहित्यकार कन्हैया लाल नन्दन तथा **'विचार दृष्टि'** के सम्पादक सिद्धेश्वर सहित कई राजनेता, साहित्यकार, पत्रकार तथा शंकर जी के शुभेच्छु मौजूद थे। वयोवृद्ध पत्रकार जितेन्द्र सिंह ने अतिथियों व श्रोताओं के प्रति प्रतिष्ठान की ओर से आभार प्रकट किया। स्व० श्री सिंह की कर्मभूमि पटना में भी उनके जयंती-समारोह का आयोजन हुआ जिसमें पटना के प्रबुद्धजनों ने अपने विचार व्यक्त किए।

-विचार कार्यालय, दिल्ली

देश के प्रति जागरूकता से ही समस्याओं का समाधान

-न्यायमूर्ति बी० एल० यादव

मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी गठित

विगत 30 दिसम्बर, 2001 को अपराह्न 2 बजे दिल्ली के पंडारा रोड स्थित न्यायमूर्ति श्री बी० एल० यादव के निवास ए० बी०-6 में आयोजित **राष्ट्रीय विचार मंच** की आम सभा को सम्बोधित करते हुए मंच के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष मान० न्यायमूर्ति **श्री बी. एल. यादव** ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान देश के प्रति जागरूक रहकर तथा जनमानस की चेतना को जागृत कर ही पाया जा सकता है। सभी भाषाओं की कद्र करते हुए संस्कृत व हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने की बात उन्होंने बड़े पूरजोर शब्दों में कही। मंच के अबतक के कार्यकलापों पर अपनी प्रसन्ता जाहिर करते हुए उन्होंने कहा कि समाजिक विषमता को दूर करने तथा राष्ट्र के प्रति चेतना जागृत करने में मंच के प्रयास सराहनीय रहे हैं । उन्होंने **विचार दृष्टि** पत्रिका को नियमित रूप से स्तरीय प्रकाशित करने के लिए सभी सदस्यों से भरपूर सहयोग करने की अपील की।

प्रारम्भ में मंच के महासचिव **सिद्धेश्वर** ने सभी सदस्यों का हार्दिक अभिनन्दन करने के पश्चात् मंच के विगत तीन वर्षों के कार्यकलापों पर प्रस्तुत एक प्रतिवेदन में कहा कि मंच ने अपने उद्देश्यों के अनुरूप इन वर्षों में राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवन में बढ़ते भ्रष्टाचार, सामाजिक विभाजन, अपसंस्कृति के शोर-शराबे तथा अनेक परिवर्तनों को रेखांकित कर आमजनमानस को कुरेदने तथा उनमें राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का हर सम्भव प्रयास किया है। प्रत्येक व्यक्ति के अपने आप में सिमटने, समाज के टूकड़े -टूकड़े में बंटने तथा राष्ट्रीयता की भावना में तेजी से हो रहे ह्रास के संदर्भ में उन्होंने कहा कि बगैर स्वस्थ समाज के एक समृद्ध राष्ट्र की कल्पना नहीं कि जा सकती। इस दृष्टि से मंच एक स्वस्थ समाज के निर्माण की दिशा में भी पर्यत्नशील है।

देश में वैचारिक संकट के सन्दर्भ में सिद्धेश्वर ने कहा कि जब देश में अधिकतर आदमी गलत काम कर रहा हो, प्रवृति सुविधा भोगी हो गयी हो, लोकतन्त्र की ओट में भीड़तंत्र का बोलवाला हो, जनप्रतिनिधि व प्रशासनिक अधिकारी अपने कर्तव्य भूलकर सिर से पांव तक आकंठ भ्रष्टाचार में डूबे हों तथा जनता किंकर्तव्यविमूढ़ हो गयी हो, तब खूनी क्रांति नहीं, वैचारिक क्रांति जरूरी हो जाती है और यह वैचारिक क्रांति लाने की क्षमता प्रबुद्धजनों में है। पर वे मौजूदा हालातों को नियति मानकर हाथ पर हाथ धरे तटस्थ हैं। राष्ट्रीय विचार मंच ने इसी के मद्देनजर पिछले तीन वर्षों में पूरे भारत खासकर दक्षिण भारत के चारों राज्यों तथा पश्चिम के महाराष्ट्र और गुजरात एवं उड़ीसा और प० बंगाल में अपनी शाखाएं स्थापित कर सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक ताने-बाने से लेकर साहित्यिक व सांस्कृतिक विषयों पर विचार संगोष्ठी, परिचर्चा, परिसंवाद तथा काव्य संध्या का आयोजन करने में अपनी सक्रियता का परिचय दिया है तथा उसके माध्यम से उन राज्यों की राजधानियों में जा-जाकर न केवल प्रबुद्धजनों की सूखे काठ में अग्नि की तरह सुप्त चेतना को विचारों के माध्यम से जागृत करने का काम किया है बल्कि समाज व देश की ज्वलन्त समस्याओं का बड़ी निर्भीकता से विश्लेषण किया है। महासचिव ने भारत सरकार के वर्तमान रेलमंत्री तथा रेल मंत्रालय के प्रति मंच की ओर से आभार व्यक्त किया, जिन्होंने **रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति** के एक सदस्य के रूप में मंच के महासचिव सिद्धेश्वर को मनोनीत कर पूरे भारत में यात्रा करने की सुविधा प्रदान की जिसके परिणामस्वरूप राजभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा के साथ-साथ भाषा के सवाल पर उत्तर और दक्षिण के बीच की खाई को कुछ हद तक पाटने का हर सम्भव प्रयास किया गया।

इस अवधि में महासचिव ने **विचार दृष्टि** पत्रिका की उपादेयता की चर्चा करते हुए कहा कि राष्ट्रीय भावनाओं की इस त्रैमासिकी ने जीते-जागते जन की गरीबी, गैर बराबरी, शोषण और संघर्ष, दु:ख-दर्द और दमन, बढ़ती आबादी, आतंकवाद, जातिवाद जीवन मूल्यों-मर्यादाओं के अवमूल्यन के खिलाफ न केवल आम आदमी को वाणी दी है बल्कि समाज के हाशिए पर पड़े समुदाय तथा जिनकी झोपडियों में आजादी के बाद से ही विकास की किरणें नहीं जा पर रही है, उनमें चेतना जागृत करने तथा आम जनमानस को वैचारिक धरातल पर झकझोरने का काम किया है। साथ ही समाज की रूढ़ियों व अन्धविश्वासों पर हमला करने तथा समाज विरोधी तत्वों एवं देश द्रोही ताकतों के खिलाफ भी आवाज उठाई है। उन्होंने सभी सदस्यों से मंच तथा पत्रिका की सदस्यता ग्रहण कर इसके द्वारा चलाए जा रहे अभियान एवं जनांदोलन का एक हिस्सा बनकर सहयोग प्रदान करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर डॉ० दिनेश सिंह यादव, डॉ० मेदिनी राय, संजय सौम्य, ब्रजेश कुमार, सुजीत कुमार, दीपक कुमार, शिवेन्द्र कुमार झा, जे० एन० पी० सिन्हा, रत्नेश कुमार गौतम, अलका सिन्हा, डॉ० अनिल दत्त मिश्र तथा ईश्वर गोयल आदि सुधी जनों ने मंच तथा पत्रिका को सबल बनाने के लिए कई बहुमूल्य सुझावों को रखते हुए देश के इस संक्रमण काल में आतंकवादियों से निबटने हेतु एकजूट होकर मंच के सभी सदस्यों द्वारा राष्ट्रीय एकता की ताकतों को मजबूत करने पर बल दिया तथा इस मंच की उपलब्धियों पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि मंच ने परम्परागत ढंग से चली आ रही गतिविधियाँ से कुछ हटकर एक नए रास्ते की तलाश की है।

आम सभा ने सर्वसम्मति से कई प्रस्तावों को पारित करते हुए गत 13 दिसम्बर को संसद पर हुए पाक आंतकी हमले की जोरदार शब्दों में भर्त्सना की।

आम सभा ने सर्वसम्मत निर्णय लेकर सत्र 2002-2004 के लिए **राष्ट्रीय विचार मंच** की 61 सदस्यीय **राष्ट्रीय कार्यकारिणी** का गठन किया जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी एवं सदस्य सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए:-

पद	निर्वाचित पदाधिकारियों के नाम	पदनाम	पूरा पता	दूरभाष
अध्यक्ष	न्यायमूर्ति श्री बनवारी लाल यादव	अध्यक्ष, पिछड़ा वर्ग आयोग	ए० बी०-6, पंडारा रोड, दिल्ली-1,	382886
उपाध्यक्ष				
	डॉ० विजय नारायण मणि त्रिपाठी	वरिष्ठ अधिवक्ता, सर्वोच्य न्या.	बी-181, सूर्यनगर, गाजियाबाद, उ० प्र०	4624042
	डॉ० बाल शौरि रेड्डी	अध्यक्ष, तमिलनाडु हिन्दी अका.	27,वेडिवेलीपुरम्, वेस्ट माम्बलम, चेन्नै-33	4893095
	डॉ० भगवतशरण अग्रवाल	अध्यक्ष,राष्ट्रीय वि.मंच, गुजरात	396, सरस्वती नगर, अहमदाबाद-15	6740778
	प्रो० नेहपाल सिंह वर्मा	अध्यक्ष, रा० वि० मंच, आ. प्र.	जशोदा कुँज, सावरकरनगर, हैदराबाद	7172457
	डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव	पूर्व रीडर, हिन्दी विभाग	आर०7, वाणी विहार, उत्तमनगर, दिल्ली	5634719
	डॉ० एन० चन्द्रशेखरः नायर	अध्यक्ष, रा० वि० मं० केरल	लक्ष्मीनगर, केशवदासपुरम, त्रिरूवनंतपुरम	541355
	डॉ० साधु शरण	पूर्व राजनीति विज्ञा. विभागा.	गली नं०1, महेशनगर, पटना-24,	287204
राष्ट्रीय	सिद्धेश्वर	सम्पादक, **विचार दृष्टि**	दृष्टि, 6, विचार विहार, यू०207,	
महासचिव			शकरपुर, विकासमार्ग, दिल्ली-92	2230652
			पटना निवास : 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1	228519
सचिव	रत्नेश कुमार गौतम	दूरदर्शन, नईदिल्ली	473, वसुन्धरा से.-16, गाजियाबाद, उ०प्र०	4882017
कोषाध्यक्ष	संजय सौम्य	अनुभाग अधिकारी,वाणि. मंत्रा.	47, मानसरोवर पार्क, शहादरा, दिल्ली	4921393
प्रचारसचिव	डॉ० मेदिनी राय	सहायक निदेशक, आकाशवाणी	103 आर, से0-4 पुष्प विहार, दिल्ली-17	6510054
संग.सचिव	ब्रजेश कुमार	पत्रकार, नई दिल्ली	द्वारा जी०सी०कथुरिया,206, ढका, दिल्ली-9	7135100
संयु.सचिव	श्रीमती अलका सिन्हा	अनुवादक, एयर इन्डिया,दिल्ली	10 बी०, डी.डी.ए. फ्लैट्स, मंगलापुरी,पालम	5036264
	अरूण कुमार भगत	पत्रकार, सुलभ इंटरनेशनल	RZD,1/63ए,महावीरइन्क्लेव,पालम,दिल्ली	5030920
	अमर नाथ 'अमर'	कार्यक्रम अधिशासी, दूरदर्शन	61एफ, बंगलासाहिब रोड,गोलमार्केट,दिल्ली	3363301
	वीरेन्द्र सिंह ठाकुर	सचिव, रा० वि० मं०, गुजरात	कमलेशपार्क,महेश्वरीनगर,ओढव,अहमदाबाद	382415
	हामिद हुसैन	सहा. न्यूज एडिटर,आकाशवाणी	11/4 ए, सेक्टर-2, गोल मार्केट, दिल्ली-1	3714212
	सुजीत कुमार	जे०एन०यू०, दिल्ली	338,ओल्डब्रह्मपुत्रछात्रावास,जे०एन०यू०,दिल्ली	6194518
	दिलीप कुमार सिंह	अध्यापक, दिल्ली	230/20ए,रेलवे कॉलोनी,मण्डावली,दिल्ली92	4925332
कार्यकारिणी	डॉ० मधु धवन	अध्यक्ष, रा०वि०मं०,तमिलनाडु	के-3, अन्नानगर (ईस्ट) चेन्नै- 600102	6262778
सदस्य	वीरेन्द्र याज्ञिक	ब्यूरो प्रमुख, विचार दृष्टि	डी6,शिवधाम, लिंकरोड,मालाड(प०),मुंबई	8897962
	डॉ० राजेन्द्र गौतम	रीडर, हिन्दी विभाग	बी-226, राजनगर , पालम, नई दिल्ली-45	5086579
	राम बहादुर राय	पत्रकार, जनसत्ता	5/118,रचना,वैशालीअपार्ट.,गा. बाद, उ०प्र०	4779143
	चिन्तामणि वाल्मीकी	हरिजन सेवक संघ	किंग्सवे कैम्प, दिल्ली-9	7120413
	राधेश्याम तिवारी	पत्रकार, दैनिक भास्कर	F119/1,अंकुलइन्क्लेव,करावलनगर,दि.-94	2858141
	संजय प्रकाश	संयोजक,रा०वि०मं०, कर्नाटक	271,शेषार्दीप्लाजा,आक्किपेट, बैंगलूर-53	2095255
	जितेन्द्र धीर	ब्यूरो प्रमुख, विचार दृष्टि	क्यू-283,मदियालीरोड,गार्डनरीच, कोलकात्ता	4692624
	भुवनेश्वर राव	सचिव, रा० वि० मं०, उड़ीसा	न्यू ए० जी० कॉलोनी, भुवनेश्वर, उड़ीसा	
	रंजन कुमार सिंह	पत्रकार, दिल्ली	1402, त्रिशुलअपार्ट.,कोशाम्बी,गाजियाबाद	4776247
	जे० एन० पी० सिन्हा	पूर्वसम्पादक,सी०एस०आई०आर०	2/66, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	5841044
	सोमदत्त शर्मा 'सोम'	उपनिदेशक, राजभाषा	आनन्द विहार, दिल्ली	2140541
	प्रो० श्रीमती राज चतुर्वेदी	अध्यक्ष, रा०वि०मं०, राजस्थान	23, चन्द्रपथ, सूरजनगर (पश्चिम)जयपुर-6	225676
	डॉ० सुबोध नारायण मालाकार	एसोसियेट प्रोफेसर	इन्टरनेशनल पालिटिक्स, जे० एन० यू०	
	डॉ० रामचन्द्र प्र० या५व	व्याख्याता, इतिहास विभाग	सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय	
	डॉ० अनिल दत्त मिश्र	सहा.निदेशक	राष्ट्रीय गाँधी संग्रहालय,राजघाट,नई दिल्ली	3310380
	प्रो० अंगद तिवारी	व्याख्याता, हिन्दी विभाग	जुबली हॉल छात्रावास,दिल्ली विश्वविद्यालय	

सरकार का व्याकरण

✍ प्रो० रामभगवान सिंह

जानने को तो मैं भी जानता हूँ कि सरकार का व्याकरण नहीं होता, बल्कि सरकार का गणित होता है। लेकिन सर्जन के पास जाने पर वह छोटा-मोटा ऑपरेशन कर ही देता है क्योंकि वह दवा को हवा समझता है। वह कहता है ऑपरेशन जरूरी है, आज और अभी। लेकिन सरकार का भाषायी ऑपरेशन कोई चंडुलाल भी चंडु खाने पर नहीं कर सकता है। इसके लिए न तो ऑपरेशन थियेटर की जरूरत होती है और न ही बेहोशी की दवा की। आखिर इस बीमार 'सरकार' की परवाह किसे है! लोग रोज इसकी टांग खींचते हैं, इसकी गर्दन मरोड़ते हैं, उठा-पटक करते हैं, मगर इसे कुछ नहीं होता। यह मर भी जाए तो इसके बांस घाट पहुँचने से पहले इसका पुनर्जन्म हो जाता है।

पर सरकार आखिर है क्या साकार, निराकार, सजीव, निर्जीव, ठोस, तरल या गैस? अथवा व्याकरण की दृष्टि से यह क्या है-संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण या अव्यय? पहले हम इसकी उत्पत्ति अर्थात् सहयोगी अक्षरों और अक्षर-दलों की स्थिति, प्रकृति और उनके शील-स्वभाव, फल-फलाफल पर एक नजर डालें। सरकार शब्द में तीन अक्षर हैं-स, र और क। इसमें र की दो बार आवृत्ति हुई है। ऐसा लगता है कि 'र' अक्षर के दोनों घटक दल 'सरकार' शब्द के गठन में सहयोगी हैं, परन्तु क की दो मात्राएं हैं। अर्थात् 'क' दबंग है। इस सरकार में वही एक मात्र सबसे बड़ा, सबसे भारी अक्षर है। वही सबका प्रधान है। इसलिए वह नाव के बीच में स्थित है और सहयोगी अक्षर दल दोनों किनारे रक्षापंक्ति बनकर खड़े हैं। मगर उनका महत्व कम नहीं है। एक किनारे से एक भी अक्षर अगर साथ छोड़ दे तो सरकार के विघटित होने का डर है। उदाहरणार्थ, अंतिम 'र' अगर सरक जाए तो यह सरकार से सरका रह जाएगा। बहरहाल सरकार को स्थिर इकाई मान कर इसके नख-शिख वर्णन का प्रयास कर रहा हूँ।

चार अक्षरों का गठबन्धन यह सरकार कई स्वतंत्र, गूढ़ और सार्थक शब्दों की खिचड़ी है। अनेक पौष्टिकारक अन्नों के योग से खिचड़ी बनती है और इस सरकार का निर्माण भी अनेक छोटे-बड़े शब्दों, शब्द-खंडों और पदों के आपसी तालमेल से होता है। उन सबों का अपना अलग अस्तित्व होता है, उनका आकार होता है, उनका रंग होता है और उनके गुण होते हैं। सरकार में पहला शब्द-खण्ड है 'सर' अर्थात् नरमुंड। सरकार का गठन नर

सरकार में पहला शब्द-खण्ड है 'सर' अर्थात् नरमुंड। सरकार का गठन नर मुंडों के आधार पर हो होता है। सरकार तो संख्या का खेल है। अधिक से अधिक सदस्य पैदा करना, स्वयं पैदा न कर सके तो गोद लेना, उससे भी काम न चले तो खरीदना और अन्तत: अपहरण करके अपनी आबादी बढ़ाना।

मुंडों के आधार पर हो होता है। सरकार तो संख्या का खेल है। अधिक से अधिक सदस्य पैदा करना, स्वयं पैदा न कर सके तो गोद लेना, उससे भी काम न चले तो खरीदना और अन्तत: अपहरण करके अपनी आबादी बढ़ाना। सरकार सृजन कला का सूत्र है। भीड़तंत्र की सरकार में सर की संख्या सर्वोपरि होती है। सर चाहे चाँद सा हो या शालिमार गार्डन सा, उसके बाल सफेद हों या भूरे, उसमें ज्ञान भरा हो या भूसा, वे बाएं-दाएं घूमें, बस नीचे की ओर, केवल नीचे की ओर पतनशील होने चाहिए। ऐसे ही सरों से निर्मित सरकार में सर की सलामती के लिए कार की व्यवस्था की जाती है। व्यापार का यही दस्तूर है-एक हाथ दो और दूसरे हाथ लो। एक व्यक्ति अपना सर देता है और बदले में कार पाता है। यह शाश्वत नियम सरकार का उतना ही है जितना सारे संसार का है।

इस सरकार के प्रथम शब्द-खण्ड 'सर' को उलट देने से 'रस' बनता है। क्यों नहीं बनेगा? सरकार में रस है और भरपूर रस है जैसे गन्ने में रस होता है। व्यक्ति में चूसने की ताकत होनी चाहिए। जिसके मुंह में दांत न हो वह गन्ने का रस क्या चूसेगा! और दूसरी बात है, रस पचाने की शक्ति। जिसे मीठा खाने से मधुमेह का डर सताने लगे, उसके लिए तो गोमूत्र ही काफी है। उसके लिए क्या गोरस और क्या सोमरस! लेकिन सरकार में सबसे बड़ा रस है-भायरस। सरकार सुख के भायरस का कोई इलाज नहीं है। इससे पीड़ित व्यक्ति को मृगी जैसी बीमारी हो जाती है और दौरा पड़ने पर पुराना जूता अथवा सड़ा गोबर सुंघाना पड़ता है। और स्थायी इलाज के लिए स्वीटजरलैंड से दवा मंगाकर उसकी मोटी चमड़ी में नहीं बल्कि मोटे पेट में इंजेक्शन लगाना पड़ता है। किसी-किसी केस में पीड़ित व्यक्ति को कुछ दिनों के लिए उल्टा लटकाना पड़ता है।

सरकार के इन चार अक्षरों के उलट-फेर से बनता है, राकस अर्थात् राक्षस। लेकिन कहाँ सुन्दर, शोख, नाजुक, कमनीय और वरणीय सरकार और कहाँ कुरूप, क्रूर और भयंकर राक्षस! सामान्य वोल्टेज में तो कोई तुक दिखाई नहीं पड़ता, परन्तु दिमाग का वोल्टेज बढ़ाने से सरकार का राकसीय अर्थात् राक्षसीय गुण साफ दिखाई देता है। ख्याल आता है अलादीन का चिराग और सिंदबाद की कहानी का बोतल में बन्द जिन्न। अलादीन के चिराग रगड़ते ही एक राक्षस प्रकट होता था और अपने आका की मुंहमांगी मुराद पूरी करता था। बोतल का जिन्न भी अपने आका की मनोकामना पूरी करता था। लगता है, सरकार भी उसी राक्षस या जिन्न का मौसेरा भाई है जो अपने आका की सारी हसरतें चुटकी बजाते या कहिए कॉल बेल बजाते पूरी कर देता है। दरवाजा बन्द रहने पर भी घर में

नोटों के बक्से पर बक्से प्रकट हो जाते हैं। सोफा-सेट, टी०वी०, फ्रिज, सोना-चाँदी, साड़ियाँ, सूट, चप्पलें, बेनामी सम्पत्ति का अंबार लग जाता है। ऐसे कई आकाओं और आकांकिओं की सच्ची कहानियाँ आज सबको मालूम हैं।

सरकार में एक और शब्द उल्टा पड़ा है-रास। अप्रिय सत्य कहने की गुस्ताखी माफ हो तो कहूँ, सरकार तो रास लीला होती है। रंगमंच पर राजनीति का कैबरे होता है। अन्तर इतना होता है कि कैबरे में एक साथ तालियां बजती हैं मगर सरकार की रासलीला में एक तरफ से तालियां मिलती हैं तो दूसरी तरफ से जूतों, चप्पलों की बौछार होती है। फिर दूसरे दिन क्रिकेट होता है, कोई चौका-छक्का बनाता है तो कोई एल०बी०डब्ल्यू वापस आ जाता है। वैसे ही कबड्डी के सत्र में कोई किसी की टांग खींचता है तो कोई लंगड़ी लगाकर दूसरे को चित्त कर देता है। बड़े-बड़े हीरो-हिरोइनों के रासरंग के इस थियेटर में कोई टिकट नहीं लगता। और सबसे बड़ी बात, यह थियेटर कभी बन्द नहीं होता, अलबत्ता मैनेजर बदलते रहते हैं और रासलीला का नया-नया संस्करण आता रहता है। यह बात और है कि किसी को यह रासरंग रास आता है तो किसी को नहीं।

आप पूछ सकते हैं, सरकार का स्वरूप क्या है? और फिर यह स्त्रीलिंग है या पुल्लिंग? उत्तर में मैं एक रहस्य की बात कहना चाहूँगा कि कलतक मैं भी सरकार के स्वरूप को लेकर असमंजस में था। उस दिन तो मैं हक्का-बक्का रह गया जब रिक्शावाले ने मुझे 'सरकार' कहा। शायद उसने मुझे प्रधानमंत्री या कोई नेता समझा। यह सरासर झूठ था, मगर सुनकर अच्छा लगा, इसलिए मैंने प्रतिवाद नहीं किया। तब से मैं सरकार की तलाश में था। और कल आखिर मैंने सरकार को देख ही लिया। एक जीप पर लिखा था 'भारत सरकार'। बस, मुझे ज्ञान की प्राप्ति हो गयी, सड़क के किनारे, एक जीप के सामने, शोर गुल के बीच। मैंने सरकार को साकार, सजीव और गतिशील देखा। और फिर तो सरकार की वेरायटी नजर आने लगी-बहुरूपिया सरकार। कभी किसी बस पर पढ़ा-'बिहार सरकार', तो किसी कार पर 'भारत सरकार'। और तो और, कई भवनों पर किसी पर 'भारत सरकार' तो किसी पर 'बिहार सरकार' का नाम पढ़ा। यहाँ तक कि कई फाइलों पर भी सरकार का नाम देखा।

अब मैं जान गया हूँ, सरकार का रूप-स्वरूप। सरकार यानि जीप, सरकार यानि बस, सरकार यानि कार, सरकार यानि भवन, सरकार यानि फाइल। यही तो है सरकार, मेरी सरकार स्थायी है। उधर नारा लगता है, यह सरकार निकम्मी है। मतलब यह कि सरकार स्त्रीलिंग है। मगर सुनिए तो जरा, केसर बाई गा रही है, "बदले-बदले मेरे सरकार नजर आते हैं"। यहाँ आकर मैं फिर असमंजस में पड़ गया हूँ। तो क्या सरकार उभयलिंगी है, अर्थात् हिजड़ा है? अब आप ही बताइए!

सम्पर्क: अंग्रेजी विभागाध्यक्ष, लोहरदग्गा कॉलेज, लोहरदग्गा, झारखण्ड

रचनाकारों से

१. रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रुप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।

२ राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित तथा वैचारिक रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी।

३ रचना एक तरफ/कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड अथवा सुवाच्य स्पष्ट लिखी होनी चाहिए।

४ रचना के अन्त में उसके मौलिक अप्रकाशित व अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ रचनाकार का हस्ताक्षर, नाम व पूरा पता अवश्य लिखा होना चाहिए।

५ रचना के साथ पासपोर्ट या स्टाम्प आकार की श्वेत श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।

६ अप्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जाती, कृपया उसकी प्रति अवश्य रख लें।

७ प्रकाशित रचनाओं पर फिलहाल पारिश्रमिक देने की कोई व्यवस्था नहीं है, हाँ, रचना प्रकाशित होने पर अंक की प्रति अवश्य भेजी जाऐगी।

८ किसी भी विधा की गद्य रचनाएं १५०० शब्दों अथवा दो पृष्ठों की मर्यादा में ही स्वीकार्य होंगी।

९ समीक्षार्थ पुस्तक की दो प्रतियां भेजना आवश्यक है।

१० रचनाएं कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड कराकर उसे इन्टरनेट पर भेजें जिसका इ–मेल नं० है–

sidheshwarprasad@hotmail.com

डा० शिवनारायण, कार्यकरी सम्पादक, **विचार दृष्टि**
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना–८०००१
दूरभाष : ०६१२–२२८५१६

सिद्वेश्वर, सम्पादक, **विचार दृष्टि**
दृष्टि ६, विचार बिहार, यू २०७, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली ९२, दूरभाष : ०११–२२३०६५२

संसद पर हमले से राजनीतिक समीकरण के बदलते आसार

सिद्वेश्वर

विगत 13 दिसम्बर को भारतीय संसद पर पाक आतंकवादियों द्वारा किए गए हमले से न केवल भारत की जनता के मिजाज प्रभावित हुए हैं बल्कि यहाँ के राजनीतिक समीकरण के बदलने के आसार नजर आ रहे हैं। स्मरणीय है कि उत्तर प्रदेश सहित पंजाब, उत्तरांचल तथा मणिपुर में विधानसभा के चुनाव दस्तक दे रहे हैं। संसद पर हमले के पहले राजनीतिक दलों के जो मुखौटे थे हमले के बाद प्रायः सभी छोटे-बड़े राजनीतिक दलों को एक साथ अपना मुखौटा बदलने को मजबूर किया है।

भारत की जनता कांग्रेस और सपा की वैचारिक व राजनैतिक दूरियों से अवगत है किन्तु पिछले दिनों दिल्ली में सी०पी०एम के प्रखर सांसद सोमनाथ चटर्जी द्वारा आयोजित राजनीतिक भोज में कांग्रेस और सपा के अध्यक्षों की बातचीत से ऐसा संकेत मिलता है कि दोनों की दूरियाँ कम हूई हैं हालाँकि सपा अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव तथा उसके प्रवक्ता सांसद अमर सिंह ने राजनीतिक अटकलवाजियों को निराधार बताते हुए उ०प्र० विधान सभा के आसन्न चुनाव में किसी तरह के तालमेल से इंकार किया है। संसद पर हुए हमले तथा आतंकवाद निरोधक अध्यादेश **पोटो** के सवाल पर आमजन की प्रतिक्रिया ने राजनीतिक दलों की सोच-समझ को भी गहरा झटका दिया है। **पोटो** के विरोध के बावजूद भी सपा तथा कांग्रेस ने आतंकवाद के खिलाफ सरकार के कदम को अपना अग्रिम समर्थन देना प्रारम्भ कर दिया है क्योंकि जनता के गुस्से का डर और दिन तो नहीं पर चुनाव के वक्त तो अवश्य देखने को मिलता है।

हमले के पूर्व उ०प्र० के चुनावी दंगल में शिरकत करने वाली तमाम राजनीतिक पार्टियाँ मतदाता को लुभाने के लिए जाति और वर्गगत आरक्षण की शाख पर बैठी थीं पर हमले के तुरन्त बाद उन्हें बुरी तरह हिलाकर रख दिया है। अक्टूबर में लोकमत और आर० डी० आई० द्वारा कराए गए जनमत सर्वेक्षण के अनुसार संसद के हमले के पहले बसपा को 80 सीटें मिलने की संभावना थीं, सपा को 187 तथा भाजपा को 102 और इस प्रकार कुल 404 सदस्यों की क्षमता वाली वर्तमान उ०प्र० विधान सभा में इन तीनों पार्टियों को कुल 369 सीटें मिलने से मात्र 35 सीटें ही बच जाती हैं जिसका बंटवारा और दलों को करना था। किन्तु बदले राजनीतिक परिदृश्य में इस प्रक्षेपित संख्या में काफी उलट-फेर हो सकता है और यह उलट-फेर भारत सरकार द्वारा हमले के बाद की गई कठोर कार्रवाई से पूरी तरह बदल सकते हैं।

उ. प्र. के चुनाव राजग सरकार के भविष्य की दिशा तय करेंगे

चार राज्यों में चुनाव फरवरी में

शशि भूषण

चुनाव आयोग ने उ० प्र०, उत्तरांचल, पंजाब व मणिपुर के विधान सभा चुनाव कार्यक्रमों की घोषणा कर दी जिसके तहत उ० प्र० में 14, 18, और 21 फरवरी को , मणिपुर में 14 और 21 फरवरी उत्तरांचल में 14 फरवरी और पंजाब में 13 फरवरी को मतदान कराया जाएगा। चारों राज्यों में मतगणना 24 फरवरी को होगी। इन चुनावों की अधिसूचना 16 जनवरी, पर्चे भरने की तिथि 32 जनवरी तक और उसकी जाँच 24 जनवर: तथा नाम वापसी 28 जनवरी तक होगी।

मुख्य चुनाव आयुक्त जे. एम. लिंगदोह के अनुसार, इन सभी राज्यों में चुनाव आचार संहिता चुनाव घोषणा के दिन से ही लागू हो गई है। उन्होने इसके साथ ही लोकसभा की छह सीटों के लिए भी उपचुनाव की भी घोषणा की। उ० प्र०, उत्तरांचल तथा पंजाब के सभी विधानसभा क्षेत्रों में, और मणिपुर के सिर्फ छह विधानसभा क्षेत्रों में मतदान के लिए इलेक्ट्रॉनिक मशीनों का इस्तेमान किया जाएगा। जिन छह लोकसभा सीटों के चुनाव होंगे वे हैं असम में कलियाबोर, जम्मू-कश्मीर में जम्मू, कर्नाटक में कनकचुरा, म० प्र० में मिर्जापुर। चारों राज्यों के चुनाव में मतदाताओं के पहचान पत्र का इस्तेमाल अनिवार्य होगा। चार राज्यों के चुनावों की घोषणा तो कर दी गई किन्तु भारत पाक युद्ध अगर होता है, तो देश हित सर्वोपरि है, ऐसा मानना है मुख्य चुनाव आयुक्त का जिसका स्वागत किया जाना चाहिए। चुनाव की स्थिति में उ० प्र० और उत्तरांचल के 10 करोड़ से ज्यादा मतदाता यह निर्णय करेंगे कि भाजपा प्रशासन जनहित की कसौटी पर खरा रहा है या नहीं। इसलिए यह भाजपा के लिए अग्नि परीक्षा है और राजनाथ सिंह की प्रतिष्ठा का सवाल भी इस चुनाव से जुड़ गया है। कुल जमा चार राज्यों के चुनावों में वाजपेयी और सोनिया के करिश्में का दो टूक फैसला हो जाएगा और यह दोनों का राजनीतिक कद तय करेगा। यों तो उ. प्र. के चुनाव हमेशा ही राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करते रहे हैं किन्तु फरवरी में सम्पन्न उ. प्र. के विधानसभा के चुनाव के नतीजे केन्द्र की राजग सरकार के भविष्य की दिश तय करेंगें। आमतौर पर आज भी भाजपा मुख्यत: सवर्ण हिन्दुओं की पार्टी है जिसे कुछ पिछड़ी जातियों और दलितों का मामूली समर्थन है। स्वर्ण हिन्दु भी उसके साथ उस तरह नहीं हैं जैसे कि मुलायम सिंह यादव के साथ यादव तथा मुसलिम और बसपा के साथ दलित आज की स्थिति में मौका मिलते ही स्वर्ण हिन्दुओं का एक वर्ग भाजपा को धता बताकर पाला बदल सकता है। 1999 के लोकसभा के नतीजे इसी बात का संकेत है। हालांकि 13 दिसम्बर को संसद पर हुए आतंकवादी हमले ने सारी परिस्थितियाँ बदल दी है। भारत-पाक के बीच तनाव का मुद्दा उ. प्र. की भाजपा के लिए वरदान सिद्व हो सकता है अगर केन्द्र सरकार पाक को मुँहतोड़ जबाव देने में सफल होती है। अन्यथा यह वरदान अभिषाप भी बन सकता है। इस चुनाव में आतंकवाद ही वह मुद्दा है जिसके सहारे इस चुनाव को जातीय आधार पर हाने से रोक सकता है। इस बीच न केवल मुलायम सिंह यादव सपा के फिर से अध्यक्ष चुन लिए गए बल्कि उ. प्र. विधानसभा चुनाव के लिए 295 प्रत्याशियों की सूची जारी कर सपा ने कांग्रेस से बाजी मार ली। सम्पर्क : जी.28, शकरपुर, दिल्ली .110092

कार्यक्रम

अधिसूचना- 16 जनवरी
पर्चे भरे जाएंगे- 23 जनवरी तक
पर्चों की जांच- 24 जनवरी
नाम वापसी- 28 जनवरी तक
वोटों की गिनती- 24 फरवरी से

युद्ध की आशंका से ताज की सुरक्षा व्यवस्था कड़ी

भारत पाक के बीच युद्ध की आशंका के मद्देनजर आगरा के महत्वपूर्ण स्मारक ताज की सुरक्षा के लिए उसके तीनों प्रवेश द्वारों पर बंकर बनाए जाने के साथ-साथ ही उसके मुख्य गुंबद को भी ढकने की व्यवस्था की जा रही है। गुंबद को ढकना इसलिए जरूरी है कि वह चाँदनी रात में चमकता है। उसकी चमक से दुश्मन को आसानी से आगरा की पहचान हो सकती है।

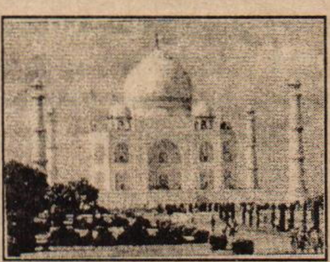

सुरक्षा की दृष्टि से लिए गए निर्णय के तहत ताजमहल की सुरक्षा ब्लैक कैट कमांडो के हवाले की जा रही है। ताज को बढ़ते खतरे के मद्देनजर रात में इसे खोलने के प्रयासों को ग्रहण लगता दिखायी पड़ रहा है।

रंजन, दिल्ली से

लालू को जेल और बेल से छुटकारा नहीं

सामाजिक न्याय के रहनुमा राजद सुप्रीमो और बिहार के पूर्व मुख्य मंत्री लालू प्रसाद पशुपालन घोटाला के कई मामले में ऐसे फँस गए हैं कि एक जेल से जब वे निकलते हैं तो दूसरी जेल के लिए बुलाहट आ जाती है और उस जेल से जब बाहर आते हैं तबतक तीसरी जगह

के लिए सम्मन आ जाता है। पशुचारा घोटाला के 47/96 मामलो में राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद को उच्चत्तम न्यायालय से छह माह के लिए जमानत मिलने के बाद पुनः पशुचारा घोटाला के आर०सी० 68 ए/ 96 के मामले में 14 दिनों के लिए न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। उन्हें राँची के बेकन फैक्ट्री कैंप जेल पहुँचा दिया गया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार लालू प्रसाद को 20 दिसम्बर को राँची में 20/96 तथा दुमका में 38 ए/ 96 मामले में सी० बी० आई० की विशेष अदालत में पेश होना था। अब तो ऐसी भी नौबत आ गई कि उन्हें एक ही दिन दो-दो अदालतों में दो जगह पेश होना पड़ रहा है।

सीबीआई की विशेष अदालत ने पुनः 24 दिसम्बर को पशुपालन घोटाला के एक और मामले आरसी 63ए/96 में लालू प्रसाद की जमानत याचिका को खारिज करते हुए उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया। वे एक अन्य मामले आरसी 68ए/96 में पहले ही से न्यायिक हिरासत में है। श्री प्रसाद को अदालत द्वारा 7 जनवरी को पेश होने का निर्देश दिया गया है। आय से अधिक सम्पत्ति वाले मामले में श्री प्रसाद की पेशी 3 जनवरी को था।

ज्योतिरादित्य कांग्रेस में शामिल

दिवंगत वरिष्ठ कांग्रेस नेता माधवराव सिंधिया का 31 वर्षीय सुपुत्र ज्यातिरादित्य सिंधिया के कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गाँधी के निवास पर आयोजित एक समारोह में कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण करने से सारी अटकलें अब समाप्त हो गयी हैं। इसके पूर्व भाजपा और कांग्रेस दोनों पार्टियों के नेता ज्योतिरादित्य के अपनी-अपनी पार्टी में शामिल होने की अटकलें लगा रहे थे।

गौरतलब है कि इस वर्ष 30 सितम्बर को हुए एक विमान दुर्घटना में माधवराव सिंधिया की मौत हुई थी। विश्वास व्यक्त किया गया कि

ज्योतिरादित्य अपने पिता के पद चिन्हों पर चलकर उनके द्वारा छोड़ी गयी छाप को आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे। अपने उद्‌गार में इस युवक ने कहा कि समाज में सौहार्द कायम करना, कमजोर तबके के लोगों को उपर उठाना तथा मध्यप्रदेश के गुना, ग्वालियर क्षेत्र का विकास उनकी प्राथमिकता होगी। ऐसी संभावना है कि अपने पिता के निधन से रिक्त हुई गुना लोकसभा सीट से ही वे उपचुनाव लड़ेंगे। दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से अर्थशास्त्र में स्नातक सोनिया गाँधी के सुपुत्र राहुल गाँधी के वे सहपाठी रहे हैं। इसके बाद हारवर्ड और स्टेल फोर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ने के पश्चात मॉर्गन स्टेनले में वे वित्तीय विश्लेषक के पद पर रहे तथा उन्होंने संयुक्त राष्ट्र और विश्व बैंक में भी कामकाज किया है।

कौन है यह गाजी बाबा?

पुलिस के अनुसार **गाजी बाबा** एक पाकिस्तानी नागरिक है जो आतंकवादी संगठन **जैश-ए-मोहम्मद** के भारत में शीर्ष कमांडर माना जाता है। संसद पर हमले की साजिश रचने में गाजी बाबा भी लिप्त था। इसी के इशारे पर मोहम्मद अफजल और शौकत हुसैन ने दिल्ली से तार जोड़ा था तथा इनके बीच संदेशवाहक का काम करता था तारिक नामक व्यक्ति। इन तीनों को गिरफ्तार कर लिया गया है तथा पुलिस गाजी बाबा की खोज में है। जाँचकर्त्ताओं ने संकेत दिया है कि हमले का षड्यंत्र 25 सदस्यीय एक गुट ने दिल्ली, जम्मू-कश्मीर और पाकिस्तान में रचा था। नाम बदल-बदल कर वारदात करनेवाले गाजी बाबा उर्फ अबू हिजरा के खुले चेहरे का फोटो खुफिया एजेन्सी की फाइलों में मिल गया है जिसके आधार पर उसकी तलाशी की जा रही है। यह भी पता चला है कि 1999 में इंडियन एयरलाइन्स अपहरण कांड में भी गाजी बाबा का हाथ था।

अनुज कुमार, दिल्ली से

अफगानिस्तान में करजई सत्तासीन
28 वर्षों के बाद एक नए युग का सूत्रपात

सुधीर रंजन

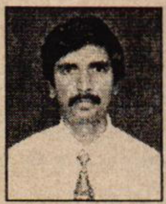

अफगानिस्तान में विगत 22 दिसम्बर को 44 वर्षीय मृदुभाषी **हामिद करजई** के नेतृत्व में बनी अन्तरिम सरकार के 30 सदस्यीय मंत्रिमंडल को संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों, विदेशी राजनयिकों सहित करीब 2000 कबाइली नेताओं की उपस्थिति में राजधानी काबुल के बीचोबीच स्थित गृह मंत्रालय के हॉल में आयोजित समारोह में सुप्रीम कोर्ट के कार्यवाहक प्रमुख ने शपथ दिलाई। इसके साथ पिछले 28 वर्षों के इतिहास में अफगानिस्तान में न केवल इस्लामी कट्टरपंथी तालिबान शासन का अंत हो गया बल्कि लड़ाई की मार से जर्जर हो चुके इस देश में एक नए युग का सूत्रपात हुआ। इस बहुजातीय मंत्रिमंडल में 11 पख्तूनों, 8 ताजिकों, 5 शिया मुस्लिम हजारा, 3 उज्बेक और 3 अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधि हैं जिसमें से रक्षा मंत्री मोहम्मद कासीम फहीम, गृहमंत्री यूनुस कानूनी और विदेश मंत्री अब्दुल्ला सभी ताजिक सहित दो महिलाएं भी शामिल हैं। अन्तरिम सरकार की दो वर्ष की अवधि समाप्त होने पर लोया जिरका के परम्परागत काबीलाई नेता एक संक्रमणकालीन प्रशासन का 18 महीने के लिए चयन करेंगे और उसके पश्चात आम चुनाव की तैयारी होगी।

इस समारोह में भारत का प्रतिनिधित्व विदेश मंत्री जशवंत सिंह ने किया, साथ ही पाँच साल से काबुल में बंद पड़ा भारतीय दूतावास भी श्री सिंह द्वारा झंडा फहराने के साथ खुल गया। शपथ ग्रहण समारोह को सर्वप्रथम संयुक्त राष्ट्र के विशेष प्रतिनिधि लख्दर ब्राहिमी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार के समक्ष एक बड़ी चुनौती है जिसका मुकाबला यहां के हर व्यक्ति को करना है। **हामिद करजई** ने अपने सम्बोधन में कहा कि वे जिहाद की उपलब्धियों को बरकरार रखते हुए जातीय, धार्मिक और भाषाई भेदभाव से उपर उठकर देश की सेवा करने और राष्ट्रीय एकजुटता को बनाए रखने की भरपूर कोशिश करेंगे तथा महिलाओं को सम्मानित स्थान देंगे। समारोह में मौजूद महिलाएं बिना बुर्के के थीं और उन्होंने सिर पर स्कार्फ बांध रखा था।

अफगानिस्तान की नई सरकार पर पूरे विश्व समुदाय की निगाहें लगी हुई हैं। ऐसी उम्मीद की जा रही है कि वह युद्ध से तबाह हो चुके देश का पुनर्निर्माण करेगी। विश्व बैंक और संयुक्त राष्ट्र की ब्रुसेल्स मे जारी एक रिपोर्ट के अनुसार इस देश के पुनर्निर्माण में अगले 5 वर्षों में 9 अरब डॉलर की जरूरत होगी। इस बीच अमेरिका ने आतंकवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखते हुए नए वर्ष को भी युद्ध वर्ष घोषित किया है।

सत्ता पर काबिज होने के दो दिन बाद ही करजई ने अपना जन्मदिन मनाया। यह तो वक्त ही बताएगा कि उनके जन्म दिन पर सत्ता का यह तोहफा है या चुनौती जो उनके राजनीतिक जीवन की अब तक की सबसे बड़ी चुनौती है। हिमाचल विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करजई को अपने तजुर्बों और राजनयिक कौशल के बल पर लड़ाई से जर्जर अफगानिस्तान की नैया को पार लगाना है। यदि निर्धारित छह महीनों में अफगानिस्तान के नेताओं ने राष्ट्रहित में अपने दलीय अन्तर्विरोधों के बावजूद साथ-साथ चलना सीख लिया तो इस अंतरिम सरकार की सार्थकता सिद्ध होगी और अगर करजई के नेतृत्व में बनी नयी सरकार अफगानिस्तान के नव निर्माण के काम में ईमानदारी से नहीं जुट पाई तो मूल्क पुन: उसी दलदल में जा गिरेगा जहां से वह भारी कीमत देकर उबरा है। सम्प्रति अमरीका और शेष विश्व का भी यह दायित्व बनता है कि आतंकवाद के खात्मे के लिए वहां जो भय का विध्वंश हुआ है उसकी भरपाई करे वर्ना भविष्य में कोई भी देश ऐसी किसी भी पहल पर विश्वास नहीं करेगा। अमरीका की भी यह अग्नि परीक्षा है।

जया कोयला घोटाले से भी बरी मगर उनकी राह में अभी और भी हैं मुश्किलें

कामेश्वर मानव

अन्नाद्रमुक प्रमुख और तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता को एक विशेष अदालत ने साढ़े छह करोड़ रुपये के कोयला आयात घोटाले से बरी कर दिया जिससे फरबरी विधान सभा उपचुनाव लड़ने का रास्ता एकदम साफ हो गया।

पिछले एक महीने में जयललिता ने यह दूसरी कानूनी लड़ाई जीती है। गत ४ दिसम्बर को मद्रास स्टे होटल घोटाले से बरी किया था। इन मामलों से बरी होने के बाद जया ने आंडिपट्टी, विधान सभा क्षेत्र का गढ़ माने जाने वाले इसी क्षेत्र से पार्टी के संस्थापक एम० जी० राम चन्दन १९८४ में चुनाव जीते थे। तांसी मामले में नामजद होने के कारण १० मई को हुए विधान सभा चुनावों के दौरान आंडिपट्टी, धरमपुरी, पुडुकोट्टाई और भुंवनगिरी से जयललिता का नामांकन खारिज कर दिया गया था। अन्नाद्रमुक ने विधान सभा चुनावों में भारी जीत दर्ज की थी किन्तु २१ दिसम्बर को जयललिता की वरर्खास्तगी के बाद उनके विश्वस्त **ओपनीरसेल्वम** को मुख्यमंत्री बनाया गया था।

जया के अतिरिक्त तत्कालीन लोक निर्माण मंत्री एस० कन्नाप्पन, मुख्य सचिव टी. वी० वेकटरमण, विद्युत बोर्ड के अध्यक्ष एन० हरि भास्कर और उद्योग सचिव रामचन्द्रन को भी बरी कर दिया गया। ये सभी लोग अन्नाद्रमुक के कार्यकाल के दौरान इन पदों पर कार्यरत थे।

तीन मामलों में बरी हो हाने के बाद भी अन्नाद्रमुक महासचिव सुश्री जे० जयललिता की राजनीतिक मुश्किलें अभी आसान नहीं हुई हैं क्योंकि अभी छह मामले और लंबित हैं जिनमें क्लीन चिट मिलने के बाद ही वह खुद को पूरी तरह बेदाग बता पाएंगी। मीना एडवरटाईजिंग मामले, लाइसेंसिंग केस सहित आय से अधिक सम्पति रखने और सही रिटर्न नहीं दाखिल करने के मामले उन पर अभी भी लदे हुए हैं। हाँ, यह बात जरूर है कि काफी लंबा अरशा गर्दिश में गुजारने के बाद जयललिता के लिए तीन मामलों में बरी होने से अच्छे दिन जरूर आए हैं। अब वह तमिलनाडु की भाव प्रवण जनता को बखूबी पूरे अभिनय के साथ बता पाएंगी कि वह किसतरह बेकसूर थीं और उन्हें नीचे ढकेलने के लिए करुणानिधि एक पार्टी ने उन पर झूठे मुकदमें लाद दिए थे। हालाकि जयललिता ने भी बाद में करुणानिधि को तीन दिनों तक जेल में रखा किन्तु केन्द्र सरकार के दबाव पर उन्हें जेल से रिहा करते हुए मुकदमें वापस लिए गए।

उल्लेखनीय है कि अपराध सिद्ध करने का दायित्व अभियोजन पक्ष की होती है किन्तु विधिविशेषज्ञों को ऐसे उपाय भी ढूँढ़ने चाहिए जिनसे गवाहों के मुकर जाने पर भी सत्य को उद्घाटित किया जा सका। अन्यथा औपचारिक मामलों में एक ही तथ्य की बिल्कुल विरोधी व्याख्या आम लोगों में यह सन्देह पैदा करने लगी है कि न्यायपालिका भी राजनीति से प्रभावित हो रही है। इस सन्देह को इसलिए बल मिलता है कि जब जयललिता सत्ता के बाहर थीं तब उनके खिलाफ दायर मामालों पर लगातार संज्ञान लिया जा रहा था और सजा भी हो रही थी। लेकिन ज्योहि वे सत्ता में आयीं वे तमाम मामलों में बरी होती जा रही हैं। इसके मद्दे नजर उच्चतम न्यायालय को निचली अदालतों द्वारा दिए गए फैसले पर गहराई से छानबीन करनी चाहिए और पूर्वाग्रह या अहसास होने पर कदम उठाने चाहिए। अन्यथा राजनीतिक द्वेश साधने के लिए न्यायपालिका का इस्तेमाल करने की प्रथा ही चल निकलेगी। **सम्पर्क : अधिवक्ता उच्च न्यायालय, पटना**

एसटीडी दरों में ६२ फीसदी तक कटौती

टेलीफोंन उपभोक्ताओं को नव वर्ष का उपहार

विचार कार्यालय, दिल्ली

भारत संचार निगम लि० ने १४ जनवरी २००२ से एक त्वरित और अप्रत्याशित निर्णय के तहत देश भर में ६२ प्रतिशत तक की कटौती कर टेलीफोन उपभोक्ताओं को नव वर्ष का उपहार दिया है। इस कटौती की सबसे खास बात यह है कि सुबह नौ बजे से रात आठ बजे तक के सर्वाधिक व्यस्त ११ घंटे के दौरान सबसे अधिक ५० से ६२.५ प्रतिशत तक की कटौती की गई है। संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री **प्रमोद महाजन** ने संवाददाता सम्मेलन में बताया कि इसके चलते बीएसएनएल को प्रारंभ में ३००० करोड़ रुपये का घाटा होने की आशंका है लेकिन अगले कुछ महीनों में एसटीडी का इस्तेमाल बेतहासा बढ़ने से इसकी भरपाई हो जाएगी। नई दरें सेल्युलर समेत सभी टेलीफोन ग्राहकों पर लागू होंगी। दिसम्बर, २००२ तक देश के सभी गांवों को टेलीफोन सेवा से जोड़ दिया जाएगा।

दिल्ली से मुबंई, कोलकाता या पोर्ट ब्लेयर तक की कॉल जो दिन के समय २४ रुपये प्रति मिनट की है अब कटौती के बाद ६ रुपये प्रति मिनट हो गयी है। वर्तमान ढाँचे के तहत चार स्तरों को घटाकर अब तीन स्तरों में बदल दिया गया है जिसके अनुसार दूरी स्तर ५०–२०० कि० मी०, २००–५०० किमी तथा ५०० से उपर का एक ही स्तर होगा। कटौती की दरें पीक और ऑफ पीक में भिन्न होंगी। उल्लेखनीय है कि बीएसएनएल अपनी एसटीडी कॉल सेवा से १२००० से १३००० करोड़ रुपये कमाता है।

रामदरश मिश्र को 'शलाका सम्मान'

उम्र के आठवें दशक के उत्तरार्ध में दिल्ली की हिन्दी अकादमी ने जिस सुप्रसिद्ध साहित्यकार को **'शलाका सम्मान'** से नवाजा है। वे हैं **रामदरश मिश्र**। सन् २००१–२००२ के लिए इस सम्मान की घोषणा के बाद अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री मिश्र ने कहा–यह मुझे अपनी उम्र के अनुकूल लग रहा है, ठीक उसी तरह जैसे १९८४ में जब इसी हिन्दी अकादमी का अकादमी सम्मान मिला था तब वह भी मुझे अपनी उम्र और काम के अनुकूल लगा था और खुशी हुई थी। वैसे उन्होंने स्वीकार किया कि आज कोई भी सम्मान विवाद से परे नहीं है। बावजूद इसके कि लगभग सारे सम्मान अविश्वसनीय हो चुके हैं, सम्मान मिलने पर इतना तो जरूर है कि रचनाकार की ओर मीडिया और लोगों का ध्यान जाता है, इस अर्थ में इसका मार्केट वैल्यू तो है लेकिन लिटररी वैल्यू भी कुछ है, यह पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता।

विगत ६० वर्षों से साहित्य सृजन का ही परिणाम है कि अब तक बारह उपन्यास, तेरह कहानी संग्रह, चौदह कविता–संग्रह, तेरह समीक्षात्मक कृतियों के अतिरिक्त कई ललित निबन्धों, यात्रा वृतान्तों, आत्मकथा तथा संस्मरणों से हिन्दी साहित्य को श्री मिश्र ने समृद्ध किया। आपने मार्क्सवाद को अपनी अन्तर्दृष्टि से स्वीकार किया है। इनके अनुसार मार्क्सवाद आज भी प्रासंगिक है इसलिए कि वह महज सिद्धान्त नहीं है। वह जिस भूख, गरीबी, शोषण एवं संघर्ष की बात करता है वह मूर्त है। मार्क्सवाद समाज में मूर्त चीजों की पहचान करने वाला दर्शन है, जब कि उत्तर आधुनिकता सिर्फ बहसों में है।

लोकतत्व जिनकी कविताओं व गीतों का आधार बना और बाद में जिनकी रचनाओं में छायावाद का गहरा प्रभाव पड़ा वैसे रचनाकार श्री रामदरश मिश्र को शलाका से सम्मानित होने पर पत्रिका परिवार की ओर से बधाई।

डॉ० रमाशंकर को काका हाथरसी सम्मान

राजधानी कालेज, नई दिल्ली के पूर्व हिन्दी प्राध्यापक तथा सुपसिद्ध रचनाकार **डा० रमाशंकर श्रीवास्तव** को दिल्ली हिन्दी अकादमी द्वारा वर्ष २००१–२००२ के लिए काका हाथरसी सम्मान से सम्मानित किया गया है। डा० रमाशंकर ने अबतक १९ उपन्यास, ५ हास्य व्यंग्य आलेख, समीक्षा आदि कृतियों से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। तीन साल पूर्व हास्य व्यंग्य की संस्था **ठिठोली** द्वारा डा० रमाशंकर को श्रेष्ठ व्यंग्यकार का सम्मान दिया जा चुका है। इसी प्रकार १९९९ में इनके **तुम मेरी कथा** उपन्यास को दिल्ली हिन्दी अकादमी ने सर्वश्रेष्ठ उपन्यास घोषित कर इन्हें सम्मानित किया था।

सम्प्रति डा० रमाशंकर श्रीवास्तव भोजपुरी मासिक पत्रिका **भोजपुरिया संसार** तथा हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका **श्रीप्रभा** के प्रधान सम्पादक के साथ ही साहित्यिक संस्था **आस्वाद** का संचालन कर रहे हैं। प्रतिवर्ष होली के अवसर पर यह संस्था मूर्ख सम्मेलन का आयोजन कर नगरवासियों को हास्य रस से सराबोर करती है। उल्लेखनीय है कि इनके प्रायः सभी उपन्यास में सामाजिक तथा नगर एवं ग्रामीण रिश्तों के साथ–साथ उनकी समस्याओं का चित्रण किया गया है। इस व्यंग्य रचनाकार की तीखी दृष्टि सामाजिक विसंगतियों की ओर गहराई से गयी है। कुछ रचनाएँ तो ऐसी हैं जो अपने सरोकारों की गंभीरता की वजह से काफी प्रभावित करती हैं। शिल्प पर भी डा० श्रीवास्तव की पकड़ जबरदस्त है।

१९९९ के सितम्बर माह में हिन्दी दिवस के अवसर पर लंदन में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में न केवल डा० श्रीवास्तव ने हिन्दी की हास्य व्यंग्य विधा का प्रतिनिधित्व किया बल्कि लंदन विश्वविद्यालय में हास्य–व्यंग्य पर एक आलेख भी प्रस्तुत किया था जिसकी वहाँ के सुधीजनों ने मुक्त कंठ से सराहना की थी। राष्ट्रीय कार्यकारिणी के उपाध्यक्ष डा० श्रीवास्तव, जो **विचार दृष्टि** को रचनात्मक सहयोग प्रदान करते हैं को मंच तथा पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

अमरनाथ 'अमर' को राजधानी गौरव सम्मान

अमरनाथ 'अमर' को **राजधानी गौरव** की ओर से विगत ५ दिसम्बर, २००१ को नई दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में आयोजित सम्मान समारोह में हिन्दी के चर्चित कवि–कथाकार, दिल्ली दूरदर्शन के कार्यक्रम आधिशासी एवं साहित्यक कार्यक्रम पत्रिका के निर्माता–निर्देशक अमरनाथ 'अमर' सहित नौ लोगों को उनके साहित्य, कला, संस्कृति एवं समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए राजधानी गौरव सम्मान शॅाल, ताम्रपत्र और स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। राजधानी गौरव का सम्मान प्राप्त करने वालों में दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री तथा वर्तमान सांसद **साहिब सिंह वर्मा** का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इस समारोह का उदघाटन स्वास्थ्य मंत्री **पद्मश्री डा० सी० पी० ठाकुर** ने किया। मुख्य अतिथि थे केन्द्रीय खाद्य राज्य मंत्री **अशोक प्रधान**।

पटना निवासी श्री **'अमर'** पिछले बीस वर्षो से लगातार साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिखते रहे हैं। इन्होंने अनेक पत्रिकाओं का सम्पादन किया है, साथ ही मंच पर लेखन अभिनय और निर्देशन भी किया है। हार्दिक बधाई।

सम्मान समारोह का समापन एक खास काव्य सन्ध्या के साथ समपन्न हुआ जिसमें राजगोपाल सिंह, दीपक गुप्ता, असीम, अरविन्द पथिक तथा दिनेश रघुवंशी आदि कवियों ने श्रोताओं का अपने काव्य पाठ से सराबोर किया।

प्रस्तुति : ब्रजेश कुमार

भारत में बौद्धिक आतंकवाद की जड़ें जमाना चाहता था प्रो० गिलानी

दिल्ली पुलिस के अनुसार संसद पर हुए आतंकवादी हमले की साजिश में शामिल दिल्ली विश्वविद्यालय, जाकिर हुसैन कॉलेज के प्राध्यापक प्रो० अब्दुल रहमान गिलानी अलीगढ़ से इंग्लैंड तक छात्रों में आतंकवाद का बीज बो कर भारत में बौद्धिक आतंकवाद की जड़ें जमाना चाहता था। खबरों के मुताबिक पाक समर्थित आतंकी **जैश-ए-मोहम्मद** ने भारत में आतंकवाद को बौद्धिक समर्थन हासिल करवाने के लिए एक योजना बनायी थी, जिसको अमलीजामा पहनाने का जिम्मा प्रो० गिलानी को दिया गया था। अपने अध्ययन अध्यापन के पश्चात वह अपना वक्त कॉलेजों, विश्वविद्यालयों तथा अन्य शैक्षणिक संस्थानों के छात्रों-शिक्षकों के दिलोदिमाग में आतंकवाद का बीज बोने में लगाता था। उसने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, इंग्लैंड स्थित लंदन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स तथा कई अन्य भारतीय विश्वविद्यालयों के कॉलेज छात्रों, शिक्षकों से सम्पर्क साधने की कोशिश की थी।

प्रो० गिलानी की वाकपटुता, कार्य पद्धति, ठोस योजना और समर्पण का ही नतीजा था कि वर्ष 2000 के मध्य में **जैश-ए-मोहम्मद** ने बौद्धिक आतंकवाद फैलाने का दायित्व गिलानी को सौंपा था। लंदन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स के खुंखार आतंकवादी छात्र अहमद उमर सईद जो विमान सं० आई सी-814 अपहरण कांड में अजहर मसूद के साथ छूटा था, से गिलानी ने बातचित की थी और उससे उस स्कूल के ऐसे छात्रों-शिक्षकों की जानकारी माँगी थी, जिन्हें बौद्धिक आतंकवाद का समर्थक बनाया जा सके। वह मुस्लिम छात्रों की भावनाओं को फिल्मों, पुस्तकों, भाषणों आदि के माध्यम से भड़काने की योजना बनाए हुए था। प्रो० गिलानी ने न केवल स्वयं डिस्ट्रक्शन ऑफ द नेशन नामक फिल्म कई बार देखी थी बल्कि जॉन एफ० कैनेडी की हत्या पर लिखी गयी पुस्तक पोट्रेड ऑफ असेशिन तथा इसी तरह की अनेक पुस्तकें दिल्ली के प्रसिद्ध पुस्तकालयों से लाकर पढ़ता था, जिसे पढ़कर किसी भी साजिश को सफलतापूर्वक अंजाम दिया जा सकता है।

क्या तालिबानियों के खात्मे से आतंकवाद खत्म हो जाएगा?

राधेश्याम तिवारी

मजार ए-शरीफ, जलालाबाद, कंधार और तोरा बोरा पर कब्जा के बाद अफगानिस्तान में तालिबानी आतंकवाद अब विनाश के कगार पर है। लेकिन ओसामा बिन लादेन और उमर इस पंक्ति के लिखे जाने तक अभी अमेरिका की पकड़ में नहीं आ सका है। अमेरिकी सेना तथा नार्दन इलायंस की सेना उसका पता लगाने की पूरजोर कोशिश में है। यहाँ तक कि लादेन और अलकायदा के बचे खुचे लड़ाकों की तलाश में ब्रिटेन और अमेरिका के सैनिक न केवल तोरा बोरा की पहाड़ियों की खाक छान रहे हैं बल्कि पाकिस्तान को सहयोग देने के लिए वहां अपने

विशेष बल के जबान और खुफिया अधिकारी भेजे हैं।

अब सवाल यह उठता है कि अफगानिस्तान से तालिबानियों के खात्मे के बाद हामिद करजई के नेतृत्व में काबूल की सत्ता सम्भालने पर क्या आतंकवाद खत्म हो जाएगा? यही नहीं लादेन और उमर के खात्मे के बाद भी यह सवाल खड़ा होगा क्योंकि आतंकवाद के भी अनेक आयाम हैं और इसके पनपने के कारणों की पड़ताल करना भी जरूरी है। यह बात ठीक है कि आतंकवाद से लड़ने के लिए सुरक्षाबल हैं लेकिन इनकी जड़ों को साफ करने के लिए उचित आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक प्रकिया को भी शुरू करना होगा। इस सन्दर्भ में किसी भी रुप में किसी भी तरह का धार्मिक उन्माद भारत के हित में नहीं है। आतंकवाद की अमरीकी अवधारणा वही नहीं है जो हमारी है। इस तथ्य को कभी नहीं भूला जाना चाहिए।

अफगानिस्तान से तालिबान का सफाया हो जाने के बाद भी उसके वरीय नेताओं की पंक्ति अपने वजूद सिद्ध करने के लिए भारत तथा अन्य देशों में आतंकवादी गतिविधियाँ करा सकते हैं। **चोर चोरी से गया है हेराफेरी से नहीं।** यह कहने की आवश्यकता नहीं कि अलकायदा के अधिकतर आतंकवादी पाकिस्तान में छिपे होने की सम्भावना है और उनके पाकिस्तानी आतंकवादियों के संबंध इतने गहरे हैं कि उनमें भेद करना मुश्किल होगा।

भारत पाक युद्ध की कीमत क्या होगी?

अर्जुन देशप्रेमी, नई दिल्ली

भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध में कितनी आर्थिक हानि होगी। यह प्रश्न आज सबके सामने मुंह बाए खड़ा है। एक मोटे अनुमान के अनुसार यदि दोनों देशों के बीच महीने भर व्यापक युद्ध चलता है तो भारत को लगभग ४० से ५० हजार करोड़ रुपये का बोझ उठाना होगा जिसे वहन करने के लिए देश को नए सिरे से तैयार होना पड़ेगा।

कारगिल युद्ध में अकेले वायु सेना के आक्रमण पर ही प्रतिदिन १० से १५ करोड़ रुपये का खर्च आ रहा था। भारत को अकेले एक एक लेजर बम पर ५-५ लाख रूपये खर्च करने पड़ रहे थे। वायुसेना ने कारगिल युद्ध में वायुसेना पर ही लगभग २००० करोड़ रुपये खर्च किए थे।

इस बार के व्यापक युद्ध में सियाचीन भी निशाने पर होगा जहाँ एक फूटी पहुँचाने की लागत ८५ रुपये (दिल्ली में १० रुपये), केरोसिन आयल १३८ रुपये प्रति लीटर होती है। जवानों के लिए कपड़ों की कीमत प्रति जवान ५०,००० रुपये होती है जबकि यहाँ के लिए जो हेलिकॉप्टर आते हैं उन पर प्रति घंटे उड़ान की लागत ४०,००० रुपये की आती है। सियाचीन में प्रतिदिन की लड़ाई की कीमत लगभग ४ करोड़ रुपये मानी जाती है और १३ अप्रैल के बाद से यहाँ जारी संघर्ष में सर्वोच्चता के लिए भारत को अब तक लगभग २३,००० रुपये खर्च करने पड़े हैं और भारत ने यहाँ अब तक २५०० सैनिक गंवाए हैं जबकि १०,००० से ज्यादा विकलांग हुए हैं।

पर, अवकाश प्राप्त एयर कमोडोर जसजीत सिंह और लेफ्टिनेंट वी० आर राघबन जैसे विशेषज्ञों का मानना हैं कि यह खर्च कोई इतना ज्यादा नहीं है कि भारत जैसी बड़ी आर्थिक ताकत इसे झेल न सके। खासकर तब तक भारत के पास ४० अरब डॉलर से भी ज्यादा का विदेशी मुद्रा भंडार है। पर यह हालात भी तब होगी जब पाकिस्तान अपने को आर्थिक रुप से पूरी तरह मटियामेट करने को तैयार हो भारत से इतनी लंबी लड़ाई लड़े।

पृष्ठ 9 का शेष भाग....

विचार दृष्टि के कार्यकारी सम्पादक डॉ० शिवनारायण ने कहा कि लोकतंत्र की जननी वैशाली की धरती रही और बुद्ध ने धर्म को बुद्धि और कर्म से जोड़ा। इस अवसर पर डॉ० कलानाथ मिश्र ने बुद्ध के व्यक्तित्व की महामैत्रि और महाकरुणा की चर्चा करते हुए कहा कि इन दोनों भावों का समन्वय बड़ा कठिन है और बुद्ध ने यही सन्देश दिया। कवि सत्यनारायण ने इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि बुद्ध का बुद्धत्व दया में प्राप्त हुआ था, इसीलिए उन्होंने चित्त की निर्मलता पर जोर दिया तथा पापकर्मों की विरति की बात की। आयोजन के सक्रिय सदस्य इ० अजय कुमार सिंह ने मान्य अतिथियों तथा समारोह में पधारे सुधीजनों के प्रति आभार व्यक्त किया। तदुपरान्त **तथागत** के कवि की ओर से कार्यक्रम में उपस्थित सभी श्रोताओं व विद्वतजनों के लिए मध्याह्न भोज का आयोजन किया गया। **काव्य-सन्ध्या का आयोजन** - राष्ट्रीय विचार मंच के द्वारा सन्ध्या समय होटल पाटलिपुत्र अशोक के प्रांगण में ही आयोजित एक काव्य-सन्ध्या में राजकुमार प्रेमी, जनार्दन मिश्र 'जलज', रवि घोष, डॉ० मेहता नगेन्द्र, कमलेश कुमार(कोलकाता), डॉ० शिवनारायण, सिद्धेश्वर, प्रो० बी० एन० विश्वकर्मा, डॉ० कलानाथ मिश्र, बनारसी सिंह, वेद प्रकाश सिंह तथा डॉ० अवध बिहारी विश्वकर्मा ने काव्य-पाठ किया, जिसकी अध्यक्षता पद्मश्री डॉ० श्याम सिंह 'शशि' ने की। अध्यक्ष डॉ० शशि ने एक-दो मुक्तक सुनाने के बाद इस चेहरे की रेखाएं...... मैं किसी बाजार का सौदा नहीं हूँ आदि कई कविताएं सुनाई। प्रो० अरुण कुमार प्र० सिन्हा ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

कम दाम - उचित सामान

सुमन श्रृंगार

खासमहल मोड़, चिरैयांटाड़, पटना- 800001

सौन्दर्य प्रसाधन, उपहार, फैन्सी चुड़ियाँ एवं लाह सेट बिक्रेता।

प्रो०-अरविन्द कुमार

लादेन पाक में छिपा!

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी ओसामा बिन लादेन पाकिस्तान में छिपा हुआ है और वह उस कट्टरपंथी इस्लामी नेता मौलाना फजलूर रहमान के संरक्षण में है जिसने तालिवान को पनपनें में मदद दी, थी। यह जानकारी अफगानिस्तान के रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता मो० हबील ने

दी है। जमात उलेमा ए इस्लामी पार्टी का प्रमुख रहमान लम्बे समय से ओसामा का समर्थक रहा है। जानकारी के आनुसार लादेन के समर्थकों का अफगानिस्तान में अब कोई नामों निशां नहीं बचा हैं उसके बचे-खुचे लड़ाके अफगानिस्तान और पाकिस्तान की सीमा से सटे इलाकों की ओर चले गए हैं।

एक ओर लादेन के मारे जाने की अटकलों का बाजार गर्म है तो दूसरी ओर अलजकीरा चैनल ने उसका नया वीडियो टेप प्रसारित करके इसे एक अलग ही मोड़ दे दिया । इस टेप के मिलने के बाद उसके मरने की अटकलों पर विराम लग गया है।

हरे रंग का सैनिक जैकेट पहने लादेन पहले से काफी कमजोर दिख रहा था। अफगानिस्तान में तालिवान के खिलाफ अमेरिकी कार्रवाई का हवाला देते हुए लादेन ने कहा मैं दुनिया के काफिरों और उनके सरगना अमेरिका पर हुए हमले के तीन महीने बाद तथा इस्लाम पर बर्बर हमले के दो महीने बाद मुखातिब हूँ। पास में एक मशीनगन रखे हुए लादेन ने कहा कि हमले के बारे में जो कुछ भी आप सुन रहे हैं वह कोरा झुठ है। बोलते समय लादेन अपने दाहिने हाथ का इस्तेमाल कर रहा था और शरीर से सटा बायां हाथ एकदम जड़ था। जिससे यह स्पष्ट नहीं हो रहा था कि कहीं उसके बाएं हाथ में चोट तो नहीं लगी है। लादेन ने दावा किया कि हमले में करीब 150 लोग मारे गए है।

- सुधांशु, दिल्ली से

पृष्ठ 33 का शेषांश

सहसा बाबू साहब लखन के पैरों पर गिरकर गिड़गिड़ाने लगे। लखन ने उन्हें बाहों में भरकर उठा लिया और बोला,"आप घबराइये नहीं बाबू साहब। मेरे जीते जी कोई आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

बाबू साहब की तो घिग्घी बंध गई थी और सारी ठकुराई हवा हो गई थी। किसी तरह लड़खड़ाती आवाज में बोले, "मैं बेहद शर्मिन्दा हूं लखन भैया। तुमने आज मेरी जान ही नहीं बचायी, आंखों की पट्टी भी खोल दी है। तुम्हारे इस उपकार से मैं जीवन भर नहीं उऋण हो सकता। आज मैं सबके सामने इस बात की सौगन्ध खाता हूं कि भविष्य में लगान की वसूली में कभी किसी के साथ कोई जोर-जबरदस्ती नहीं करूंगा और न लगान की रकम के अलावा किसी से एक फूटी कौड़ी भी लूँगा। अबसे आड़े वक्त में हर कोई मुझे अपना मददगार समझे। सभी की हर संभव सहायता के लिए मैं सदैव तैयार रहूंगा। तुमने आज अपनी जान जोखिम में डालकर मुझे नई जिन्दगी और नई रोशनी दी है लखन। इस नेकी का बदला मैं कैसे चुकाऊं?"

लखन ने सहज भाव से उत्तर दिया, "कैसी नेकी और कैसा बदला बाबू साहब! सालों से मेरे कलेजे में प्रतिशोध की जो चिनगारी सुलग रही थी वह आज जाकर बुझ पायी है। मेरे बूढ़े बाप को आपके हाथों जिस अपकार, अपमान और अत्याचार का शिकार होना पड़ा था, आज मैंने उसी का हिसाब बराबर कर अपना कर्तव्य पूरा किया है। बहुत दिनों से मन में आपके प्रति घृणा, विद्वेष और कलुष की जो भावना पल रही थी वह आज जाकर मिट पायी है और मेरा कलेजा जुड़ा गया है।"

बाबू साहब के सिर पर मानो घड़ों पानी पड़ गया था। आंखें नीचे से ऊपर उठती ही न थीं। आँसुओं की झड़ी लग गई। प्रेम और सहिष्णुता ने अत्याचार और अनाचार पर विजय पायी थी। अचानक इस तरह बाबू साहब को हृदय-परिवर्तन होते देख सारे युवक खुशी से झूम उठे। उन्होंने लखन को कंधों पर उठा लिया और उसकी जय-जयकार से वातावरण गूंज उठा।

संपर्क: एस०2/5-ए०, अर्दली बाजार,
(अधिकारी हॉस्टल के समीप)
वाराणसी(उ०प्र०)-221002

अंधेरी रात का मंजर बदल सको तो चलो,
चिराग बनके जो महफिल में जल सको तो जलो,
लिबासे जिस्म बदलने से कुछ नहीं होता
किसी गरीब की किस्मत बदल सको तो चलो।
- ज़मीर हापुड़ी, हापुड़, उ. प्र.

शेषांश पृष्ठ ...पर....

बात जो वह न कह सकी

✍ जिया लाल आर्य

कक्षा में प्रवेश करते ही वह विद्युत प्रभा-सी कौंध गई। पूर्व से उपस्थित सहपाठियों की निगाहें चौंधिया गईं। वह प्रथम सीट पर बैठी ही थी कि प्राध्यापक डा० द्विवेदी कक्षा में प्रविष्ट हुए। विद्यार्थियों के कौतूहलिक हाव-भाव और नवयुवकोचित चिविल्लपन सब शांत हो गये। डा० द्विवेदी का व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था। धीर, गम्भीर, विषय के महावीर, अनुशासन के प्रतीक। लेक्चर समाप्त होते ही कक्षा में पुनः हलचल होने लगी। द्विवेदी जा चुके थे। सब की निगाहें कृष्णा पर थी, क्योंकि आज वह पहली बार साड़ी पहनकर क्लास में आई थी। वह पूर्ण नारी लग रही थी, सुन्दर, जैसे शादी की रात के सुबह की दुलहन।

मैं तीसरी बेंच की प्रथम सीट पर था। प्रथम दोनों बेंच की सीटें लड़कियों के लिए आरक्षित हुआ करती थी। लड़कियां प्रायः प्राध्यापक के आने के कुछ ही मिनट पूर्व क्लास में प्रवेश करती थी। शशी डलेला सबसे अंत में आती। उसकी सीट बीच में पड़ती थी इसलिए वह डेस्क के नीचे से निकल कर अपनी सीट ग्रहण करती। परन्तु आज उससे भी बाद में आई थी कृष्णा। दमकती आकर्षक साड़ी में। मैं अपनी सीट से उठा और कृष्णा के पास जाकर कहा,'कृष्णा जी, आज आप बहुत सुन्दर लग रही हैं।'

'धन्यवाद, पर आज ही क्यों?' शायद वह अपने सौंदर्य की और प्रशंसा सुनना चाहती थी, यह हर औरत की कमजोरी होती है।

'क्योंकि आज आप साड़ी में आई हैं' साड़ी में मैं नहीं, साड़ी मुझमें आई है----बुद्धू।'

यह सुनकर मैं झेंप-सा गया और अपनी सीट की ओर वापस मुड़ गया। आस-पास के लड़के-लड़कियां सब खिलखिला कर हंस पड़े। लगा कि क्लास में कुछ नई घटना घटित हो गई है। वास्तव में मेरे जैसे विद्यार्थी के लिए यह घटना ही थी। मैं देहात के कॉलेज से प्रयाग विश्वविद्यालय में आया था। शहरी लड़कों जैसी न तो वाकपटुता थी मुझमें और न ही नटखटपन। परन्तु आत्मविश्वास का अभाव नहीं था क्योंकि मैं बी० ए० प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर आया था। कितने थे क्लास में, जो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हों। कुल चार। कृष्णा, रामराज, जगनारायण और मैं। उन दिनों प्रथम श्रेणी में पास होना एक अभूतपूर्व सफलता मानी जाती थी। आजकल तो तीन-चौथाई विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो रहे हैं परन्तु जीवन की दौड़ में मुस्किल से दस प्रतिशत बच्चे सफल हो पाते हैं। यह शिक्षा-नीति का दोष है, विद्यार्थियों का नहीं।

देहाती वातावरण का होने के नाते शुरु-शुरु में झिझक अधिक थी। बड़ी हिम्मत जुटाने के बाद किसी से बात कर पाता था। कृष्णा से पहली बार इन्ट्रोडक्सन के समय बात हुई थी।

आज मुझ में इतना साहस कहां से आ गया था, सोचकर हैरान हो जाता हूं। जाकर मैं अपनी सीट पर बैठ गया। बगल के लड़के मुझे 'बुद्धू' कहकर चिढ़ाने का प्रयास कर रहे थे, कि इसी बीच दूसरे लेक्चरर आ गए। सब शांत

समय बीतते देर नहीं लगती। साल बीता। अंतिम परीक्षा हुई। परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। कृष्णा प्रथम श्रेणी में प्रथम और मैं द्वितीय। कृष्णा को बधाई देने के लिए उसके घर गया। वहां पर ज्ञात हुआ कि वह अपने गाँव में है। दो-चार दिनों में आने की उम्मीद है। परीक्षाफल लेकर मैं भी अपने गाँव चला गया।

विश्वविद्यालय खुलने पर मैंने शोध कार्य के लिए निबंधन कराया। डॉ० द्विवेदी के पर्यवेक्षण में शोध कार्य शुरु किया। भूगोल विभाग में ही ज्ञात हुआ कि कृष्णा को एडिनवरा यूनिवर्सिटी में शोध के लिए स्कॉलरशिप मिल गया। एडिनवरा यूनिवर्सिटी में उसके मामा प्रोफेसर हैं। पीएच० डी० के लिए शोध कार्य प्रगति पर था। इसी बीच मेरा चयन आई० ए० एस० के लिए हो गया। शोध कार्य छोड़ दिया। उन दिनों सरकारी नौकरी को श्रेष्ठ माना जाता था। आज भी शायद वही स्थिति है। यद्यपि कालेज यूनिवर्सिटी के प्रोफेसरों का वेतनमान अखिल भारतीय सेवाओं के वेतनमान से कम नहीं है। यदा कदा कृष्णा की याद आती। हंसमुख गोल चेहरा, बड़ी-बड़ी काली आखें, काले केसों की लम्बी बेंड़ी, कद साढ़े पांच फुट से अधिक। गौरवर्ण पर काली आंखों का अलग ही आकर्षण होता है। आज उसके बाल खुले हुए थे, जो विद्युतपंख के विजन से लहरा लहरा जाते। छरहरा शरीर जैसे विधि ने तरास कर बनाया हो। सबसे अधिक आकर्षण था उसकी सुहृद रसीली बोली में। मुझे उसके 'बुद्धू' कहने में कहीं प्यार का अहसास हुआ था। हमारे सभी सहपाठियों को यह विश्वास था कि कृष्णा इंगलैंड से आकर आई० ए० एस० परीक्षा देगी और वह प्रथम प्रयास में ही आई० ए० एस० में चुन ली जायगी। वह थी ही असाधारण प्रतिभा की धनी। आई० ए० एस० की अखिल भारतीय सूची में उसका नाम ढूंढा। प्रयास असफल रहा। मैंने अपने प्रयास को यह सोच कर अनिक्षित विराम दे दिया कि शायद वह इंगलैंड में ही रह गई हो। किसी कॉलेज या यूनिवर्सिटी में सर्विस कर ली होगी।

मैं बिहार काडर में आ गया। मेरी नियुक्ति गृह विभाग में थी। एक शाम मैं ऑफिस में आया ही था कि दूरभाष की घंटी बज उठी। रिसीबर उठाकर मैंने कहा- 'यस'

'अरे भाई मैं सूबेदार' उस छोर से आवाज आई।

'कौन सूबेदार' होम सेक्रेटरी के पद पर रहते हुए प्रायः सुबेदार जैसे शब्दों के सुनने का आदी सा हो गया था।

पहचाने नहीं, वही सूबेदार जो तुम्हारे

साथ एम० ए० में पढ़ता था, प्रयाग विश्वविद्यालय में। याद आया कुछ वह एक सांस में अपना पूरा परिचय दे डाला।

'अच्छा भाई सूबेदार, मैंने ऐसी आत्मीयता दिखाई जैसे मैने उसे पहचान लिया हो।

हां तो भाई सूबेदार कहां से बोल रहे हो। मैने पहल की। पटना से, यहां आया था। तुम्हारा पता लगाया, संयोग से तुम मिल गये। मैं थोड़ी देर में तुम्हारे यहां आता हूँ।' यह कहते कहते उसने टेलीफोन काट दिया। अब तक मैं उसे पूरी तरह से समझ गया था। विश्वविद्यालय में हम लोग अच्छे मित्र थे। परन्तु मुझे ऐसा विश्वास नहीं था कि उससे यहां अचानक मुलाकात हो जायगी।

में इंतजाररत हो गया। ड्राइंग रुम में बैठा था। चपरासी ने आकर कहा,' सर कोई सूबेदार साहब आए हैं। मैं स्वयं उन्हें लेने के लिए बाहर चला गया। गले मिले और उसका हाथ हाथ में लिए हम अंदर आ गए। मिलते ही स्मरणशक्ति के पन्ने खुलने लगे। स्वस्थ हंसी मजाक के दिन। आगे की बेंचों पर बैठने वाली लड़कियों के बालों पर गुच्चीं (लपेटुआ) के कंटीले फूलों का फेंकना आदि।

'भाई जान तुम तो आई० ए० एस० बनकर राज कर रहे हो। मैंने मिलीटरी ज्वाइन कर लिया था और कम्पटीसन के लायक तो था नहीं। प्रोमोसन पाते पाते ले० कर्नल हो गया हूँ। आजकल आजमगढ़ के एक कालेज में एन० सी० सी० में अधिकारी हूँ उसी सिलसिले में पटना आने का अवसर मिल गया और तुमसे मिलने का यह सुखद संयोग।' थोड़ा रुककर फिर कहने लगा,' मैंने तो भाई जी अपनी राम कहानी सुना दी। अब तुम बोलो आगे।'

मैं क्या बोलूं, मुझे तो देख ही रहे हो। नाम था सूबेदार, बन गए कर्नल , कितना दुखित किया अपने मां-बाप को।'

तुम्हारी मजाक की आदत अभी तक बनी हुई है। मजाक को मारो गोली, बोलो घर का हालचाल।'

घर क्या-- एक बीबी, एक बेटी, और तीन बेटे/ यही है मेरा छोटा सा परिवार। हम दो हमारे चार।'

'तुम इसे छोटा परिवार कहते हो। सरकार का नारा है 'दो या तीन बस' मेरे तो एक लड़का और दो लड़की हैं। मिलीटरी में हूँ, अनुशासन में रहना पड़ता है।' यह कहते कहते वह रुक सा गया, जैसे कुछ याद करने का प्रयास कर रहा हो। मैने बातचीत का मुख मोड़ दिया। भाई तुम तो विभिन्न शहरों का भ्रमण करते रहते हो, क्या कभी किसी बैचमेट से मुलाकात होती है।

'यस, रामराज यादव से ज्ञानपुर में अभी कुछ ही दिन हुए मुलाकात हुई। वह गवर्नमेंट डिग्री कालेज में प्राचार्य के पद पर है। कृष्णा अब कृष्णा राय से कृष्णा मलिक हो गई है। वह इलाहाबाद में जगततारन महिला महाविद्यालय की प्रधानाचार्या है। और तो किसी से मुलाकात नहीं हुई। शिक्षा से जुड़ने का यही लाभ हुआ। कुछ अन्य सहपाठियों से यदा कदा मुकाकात हो जाती है।' सुबेदार सिंह ने मेरी ओर इशारा करके पूछा,'तुम्हारी किसी से इधर मुलाकात हुई है क्या!'

'नहीं भाई, मैं इतना खुशनसीब कहां! इलाहाबाद बहुत कम जाना होता है। एक बार विजयलक्ष्मी अग्रवाल को कटरा बाजार में एक मकान के सामने देखा था, परन्तु जब तक रिक्शा रुकवाकर उसके दरवाजे पर जाता वह घर के अंदर चली गई। मैं आगे बढ़ गया। लेकिन अच्छा हुआ तुमसे मुलाकात हो गई। कभी इलाहाबाद गया तो कृष्णा से मिलने का प्रयास करुंगा।'

हमलोग रात का खाना साथ साथ खाए। देर रात वह परिसदन चला गया।

कुछ महीनों के बाद इलाहाबाद जाने का अवसर मिला। मैं विष्णुदेव के साथ ठहरा। शाम को उन्हीं की गाड़ी से जगततारन महाविद्यालय गया। टैगोर टाउन में महाविद्यालय ढूंढने में कोई कठिनाई नहीं हुई। कालेज बंद हो चुका था। कालेज का चौकीदार मिला। मैंने ही उससे सवाल किया,'क्यों भइया आप की प्रिंसिपल का घर कहां है, बतायेंगे।'

कृष्णा मेम साहब का। वे साउथ मलाका में पानी की टंकी के पास रहती हैं। वहां किसी से भी पूछने पर पता चल जायगा। वहां के सभी लोग उन्हें जानते हैं।' इतना सब बताने के बाद उसने पूछा, 'आप साहब कौन हैं, क्यों पूछ रहे हैं, मेम साहब के घर का पता। गाड़ी से लगता है कि आप लोग अच्छे आदमी हैं फिर भी......।'

'आप घबड़ाइये नहीं चौकीदार जी। मैं उनके साथ पढ़ता था। बहुत दिनों से मुलाकात नहीं हुई है इसीलिए आप को कष्ट दे रहा हूँ। उनसे मिलना है कोई काम नहीं है।' मैने उसे आश्वस्त करने का प्रयास किया।

'क्या है साहब जी, आजकल का समय बड़ा खराब है। लोग आते हैं अपनी लड़कियों का एडमीसन कराने। हो गया तो वाह-वाह, नहीं हुआ तो दुश्मनी। पिछली जुलाई की बात है एक साहब से बकझक हो गई। उनकी लड़की थी थर्ड डिवीजन और कहते थे कि एडमीसन लेना ही पड़ेगा। मेम साहब ने उन्हें कालेज से बाहर करा दिया। जाते जाते वह धमकी दे गया। तुमको पता नहीं मैं कौन हूँ। मेरी पहुंच मंत्रियों तक है। ससपेंड करा दूंगा। हाथ पैर तोड़वा दूंगा।' हमारी मेम साहब बहुत सख्त हैं। नियम कानून पर चलने वाली। पैरवी तो मुख्यमंत्री की भी नहीं सुनती। अरे इलाहाबाद यूनिवर्सिटी की टापर रहीं साहब, वे किसी की क्यों सुनें।

मुझे चपरासी के मुंह से यह सुनकर बड़ा गर्व हुआ कि यूनिवर्सिटी में टॉप करने का अभी भी महत्व है।

'तुम्हें कैसे मालूम रघुनाथ, कि मेम साहब टापर रही हैं।'

'अच्छा साहब आप को मेरा नाम कैसे मालूम हो गया।' उसने उत्तर न देकर प्रश्न किया। मुझे उसकी बात में दिलचस्पी आने लगी।

'रघुनाथ जी आप के सीने पर जो विल्ला लटक रहा है उसमें आप का नाम लिखा है अब आप मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिये।' देखिये साहब जैसे मेरे विल्ला पर मेरा नाम लिखा है वैसे ही मेम साहब के ललाट पर टापर लिखा है, पढ़ने वाला चाहिए साहब।'

रघुनाथ का उत्तर सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। उसे धन्यवाद देकर विष्णुदेव के साथ साउथ मलाका के लिए प्रस्थान कर गया।

मेरे मित्र स्थानीय हैं, इसलिए कृष्णा का मकान ढूंढने में कोई कठिनाई नहीं हुई। हमलोग सीधे उसके मकान के सामने रुके। गेट पर नामपट लगा था,'कृष्णा मलिक'।

विष्णु जी ने घंटी बजाई। चपरासीनुमा एक आदमी बाहर आया। उसके कुछ पूछने के पहले ही मैंने अपना नाम बताते हुए

परिचय पत्र दिया और कहा कि जाकर अपनी मेम साहिबा को दे दीजिए और कहना कि हम लोगों का कोई काम नहीं है बस मिलने आ गए हैं, पटना से।

वह अंदर गया और शीघ्र ही वापस आकर बोला,' साहब ड्राइंग रुम में बैठिये, मेम साहब आ रही हैं। हमें अंदर ले गया और बैठाकर पुनः अंदर चला गया।

हम दोनों बैठे रहे। समय काटने के लिए टेबुल पर पड़ी मैगजीन उलटने पुलटने लगा। इसी बीच एक महिला आई और सोफा पर बैठते हुए प्रश्न किया,' हां बोलिये, कैसे आए।' मैं सोच में पड़ गया। शक्ल सूरत से तो कृष्णा ही लगती है फिर हमसे अजनबी जैसा व्यवहार क्यों? क्या उसे हमारा उसके घर पर आना अच्छा नहीं लगा? क्षणभर बाद मैंने कहा,' शायद आपने हमें पहचाना नहीं। भूगोल विभाग में हम लोग साथ साथ पढ़ते थे। कुछ आयी याद।'

'ओ हो अब पहचाना तुम्हारी आवाज से। कितने समय बाद मिल रहें हैं। क्षमा करना आई एम सारी, रियली सारी, जिया। सुखद आश्चर्य कहकर हंस पड़ी वह। फिर पूछा और आप?

ये मेरे मित्र हैं विष्णु जी। इन्हीं की बदौलत मैं आप के घर तक आ सका। ये हम लोगों से जूनियर थे। कटरा में इनकी दुकान है रेडियो की।

'अच्छा आप कैसी हैं कृष्णा जी, आप के सख्त अनुशासन का पता तो मुझे आप के चौकीदार से मिल चुका है।'

मेरी तबियत कुछ अच्छी नहीं रहती है आजकल। और तो आप देख ही रहे हैं। समय गुजरने में देर नहीं लगती। मुझे स्मरण हो रहा है तुम्हारे साथ में एक लड़का रहा करता था, नटखट टाइप सा पिछले साल एन० सी० सी० मीट में मिला था वह मुझसे। वह मिलीटरी में है। क्या तो नाम है उसका?'

'सुबेदार सिंह, मैडम। उसी नटखट ने तो आप के बारे में जानकारी दी। नटखट की याद है आप को परन्तु मुझे पहचान भी नहीं सकी क्योंकि मै देहाती बुद्धू हुआ करता उन दिनों।

'अब और शर्मिंदा मत करो जिया मैंने तुमसे पहले ही क्षमा याचना कर ली है। इतने अंतराल के बाद मिले हो गलती तुम्हारी ही है। और हां यह आप वाप कहना छोड़ो क्लासमेट की तरह बात करो।'

'अच्छा तुम्हें यह कब हुआ?

'क्या' उसने प्रश्न किया।

'यही पक्षाघात'

'तुम्हे कैसे मालूम क्या इसे भी चौकीदार ने बताया था'।

'नहीं मैडम अभी तुम अब अंदर से आ रही थी तब तुम्हारी चाल से मालूम हो गया।' तुम औरतों की चाल कब से देखने लगे। विद्यार्थी जीवन में तो तुम लड़कियों से आंख मिलाने में भी शर्माते थे। खुफिया विभाग में काम करते हो क्या तुम? पिछले वर्ष जनवरी में हो गया यह अचानक। कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा अब तो ठीक हूँ।'

'तुमने भी ठीक पहचाना। मैं आई० ए० एस० में आ गया था। बिहार में गृह सचिव के पद पर हूँ।

'गृह सचिव का क्या काम होता है। हम तो केवल शिक्षा सचिव को जानते हैं।'

गृह सचिव का काम खुफियागीरी भी है। परन्तु मुख्य काम है राज्य में विधि-व्यवस्था बनाये रखना। इसके लिए पुलिस प्रशासन पर नियंत्रण रखना। जिलाधिकारी और प्रमंडलीय आयुक्तों के माध्यम से राज्य में अमन चैन बहाल रखना आदि।'

'ओह, तुम तो बहुत बड़े अधिकारी हो। लोग तुसे डरते होंगे।'

'नहीं कृष्णा जी, मैं तो अभी भी वही हूँ। तुम्हें शायद याद न होगा, तुम्हारे इसी मकान में मैं एक बार भूगोल असोसिएसन के अध्यक्ष पद के लिये वोट मांगने आया था। साथ में दो-तीन लड़के और थे। औरतों की चाल पर मुझे स्मरण हो आया। वोट मांग कर जब निकलने लगे तब तुम बाहर गेट तक छोड़ने आई थी। सुबेदार सिंह बार बार तुम्हारे पैरों की ओर देखता था। मैने उससे ऐसा करने के कारण पुछा तो उसने बताया,' मैं कृष्णा के पैर की ओर देख रहा था यह जानने के लिए कि कहीं वह चप्पल तो नहीं पहने हुए हैं। ऐसा न हो वह सोचे कि यह नटखट बदमाश घर पर भी आ गया और चप्पल से पिटाई कर दें।'

'यह सुनकर वह हंसने लगी। ऐसा लगा कि वह यूनिवर्सिटी डेज में वापस पहुंच गई है। मैने ही कहा,' कृष्णा जी अब आज्ञा दीजिये। आपका बहुत समय बर्बाद किया मैंने'

'इतने अंतराल के बाद मिलकर मुझे अव्यक्तनीय आनंद मिला। मेरे जीवन के कुछ वर्ष बढ़ गये। तुम्हें याद है जिया, एक बार तुमने कहा था,' कृष्णा जी आज आप बहुत सुन्दर लग रहीं हैं। तुम शायद पहले और अंतिम व्यक्ति हो जिसने मेरे सौंदर्य की दिल से प्रशंसा की हो। यू नो, हर औरत चाहती है कि कोई उसके सौंदर्य की प्रशंसा करे। "सर्वजनमनोभिरामं खलु सौभाग्यंनाम्" उस दिन क्लास में मेरे सौंदर्य की प्रशंसा करके तुमने मुझे औरत होने का अहसास करा दिया था'

'और तुमने भी मुझे बुद्धू होने का' कहकर मैं हंस पड़ा। वह खिलखिला कर हंस पड़ी। उसके चेहरे से ऐसा लगा कि शायद काफी अंतराल के बाद वह खुलकर हंसी है।

'अच्छा अब मैं चलता हूँ कहकर चलने के लिए खड़ा हो गया।' उसने अपनी आँखों के इशारे से विदाई देते हुए कहा,' आज का मिलना अधूरा रहा। अगली बार जल्दी आना। बहुत सी बातें करनी हैं तुमसे। विष्णु जी आप तो बोर हो गये होंगे। क्षमा चाहती हूँ। आप तो यहीं रहते हैं कभी कभार आ जाया करिये।'

एक माह के बाद कृष्णा का पत्र आया। लिफाफा के ऊपर लिखा था 'व्यक्तिगत' पत्र में लिखा था 'प्रिय--- तुम मेरे निवास पर आए। बड़ा अच्छा लगा। मैं उपकृत्य हुई। अगली बार अकेले आना। मुझे कुछ व्यक्तिगत बातें करनी हैं। तुम्हें याद होगा परीक्षा के अंतिम दिन वाइबा वोसी के समय शायद अंतिम मुलाकात हुई थी। सभी विद्यार्थी लॉन में बैठे थे। तुम भी थे। मैं जब वाइबा देकर बाहर आई, तब तुमने हंसते हुए पुछा था,' कृष्णा जी आप की आंखों में आंसू के मोती क्यों?' परीक्षकों को प्रभावित करने के लिए,' मैंने उत्तर दिया था। पता नहीं क्यों जिया तुम्हारे पूछने में मुझे अपनापन झलका था। तुम्हें उस दिन की वह घटना भी याद दिला दूँ। मैसी मोहनी वाइवा देकर आई थी। वह खाली कुर्सी पर बैठने ही वाली थी कि मुहम्मद मुईन ने कुर्सी हटा ली और वह धड़ाम से गिर पड़ी थी घास पर। तुमने मुहम्मद

शेषांश पृष्ठ 35 पर.............

प्रतिशोध

कृष्ण कुमार राय

जेठ की झुलसती दुपहरिया की तपिश। बेरहमी के साथ आग उगलता सूरज सिर पर चढ़ आया था। उसकी प्रखर किरणें शरीर में बर्छियाँ चुभोने लगी थीं। सर्र-सर्र बहती पछुवाँ हवाएँ जैसे जलती हुई मशाल लिए दौड़ रही थीं। लेकिन मौसम की इस तल्खी को चुनौती देता हुआ रामू जो सबेरे से कुदाल लेकर अपने गन्ने के खेत में पिला तो अबतक अविचल काम में जुटा हुआ था। ज़माने की आग में झुलसे उस इन्सान की जर्जर काया पर वातावरण की तीक्ष्णता का कोई प्रभाव न था। घुटनों के ऊपर तक टँगी मटमैली धोती और सिर पर लिपटा लाल बनारसी अँगौछा। शरीर से निरन्तर रिसती पसीने की बूँदें रह-रह कर तपती धरती पर चूकर गायब हो जाती। सुबह से अबतक आधा खेत गोड़ डाला था सूरज डूबने से पहले सारे खेत की गोड़ाई पूरी कर डालने का चुनौतीपूर्ण लक्ष्य था उसके सामने। इसी गन्ने की फसल पर उसकी सारी आस जो टिकी थी।

पुरखों से विरासत में मिली दो बीघा ज़मीन उस कर्मठ किसान की जीविका का एकमात्र अवलम्ब था। कुछ ज़मीन बँटायी पर भी जोतने-बोने को मिल जाती थी। इस बार उसके बिगहा भर खेत में गन्ने की फसल लहलहा रही थी। पिछली रवी में जब उसका गेहूँ का खलिहान लगा था, न जाने किस कलमुँहें की आँख फूट गयी जो भरा खलिहान फूँक डाला। देखते ही देखते सारी फसल जलकर राख के ढेर में बदल गयी। रामू का कलेजा फट गया। माथा ठोंककर रह गया। साल भर उसने किस तरह बाल-बच्चों का पेट पाला और कैसे बैलों के लिए सानी-भूसे का जुगाड़ करता रहा, यह उसी का कलेजा जानता था। इसी विपदा के मारे पिछले साल का लगान भी बकाये में पड़ गया था। अब तो इस वर्ष की मालगुज़ारी भी सिर पर चढ़ चुकी थी। आये दिन हल्के दिन हल्के के अमीन का पियादा वसूली के लिए खोपड़ी पर सवार रहता। रामू ने सोच रखा था कि गुड़ की बेच से सबसे पहले दोनों साल का लगान अदा करेगा, उसके बाद कोई और काम करेगा।

लखना की आजी अभी जीवित थी, गोकि उसकी गलती हुई बुढ़ौती और चरमराती हुई हड्डियों की ठठरी पर टिकी जर्जर काया अभिशाप ही नहीं, मृत्यु के साथ संघर्ष की लम्बी कहानी बन चुकी थी।

कई साल हुए रामू की घरवाली इकलौते बेटे लखना को छोड़कर गुज़र चुकी थी। लखना अब सयाना हो चला था और इस साल दसवीं की परीक्षा देने जा रहा था। वह ज़हीन होने के साथ ही विनम्र, आज्ञाकारी और विवेक-शील भी था। अधेड़ बाप को जी-तोड़ परिश्रम करते उससे न देखा जाता लाख मना करने पर भी वह प्राय: खेत-खलिहान में पहुँचकर अपने बाबू के काम में हाथ बटाने लगता था।

लखना की आजी अभी जीवित थी, गोकि उसकी गलती हुई बुढ़ौती और चरमराती हुई हड्डियों की ठठरी पर टिकी जर्जर काया अभिशाप ही नहीं, मृत्यु के साथ संघर्ष की लम्बी कहानी बन चुकी थी। बार-बार वह रामू से कहती कि दसवाँ पास करते ही उसकी आँखों के सामने पोते का ब्याह कर दे ताकि सूना घर एक बार फिर से चहचहा उठे। शायद भगवान ने बुढ़िया को यह सुदिन देखने के लिए ही अबतक जीवन-दान दे रखा था।

खेत गोड़ते दुपहरिया ढल गयी। कुदाल खेत में रखकर रामू पसीना पोंछ रहा था, तभी उसकी निगाह अपनी बूढ़ी महतारी पर पड़ी जो कटोरे में कलेवा लिए लठिया टेकती डगर-डगर डोलती चली आ रही है। रामू ने कुदाल काँधे पर लटकायी और पास के इनारे पर जा पहुँचा। लोटिया-डोर से पानी काढ़कर हाथ-मुँह धोया। तबतक बुढ़िया भी वहीं पहुँच गई थी। रामू ने कलेंवा किया और लोटिया भर पानी पीकर कुएँ की जगत पर अँगौछा बिछाकर ढरक गया। बुढ़िया कटोर उठाकर फिर लठिया टेकती गाँव की ओर चल दी। आधे घंटे बाद रामू फिर खेत में पहुँचकर काम में पिल पड़ा। दिन ढलते-ढलते पूरा खेत कोड़ने के बाद कंधे पर कुदाल लटकायें वह गाँव की ओर चला तो सूरज क्षितिज की ओट में समा चुका था।

रामू अभी डाँडों के बीच में ही था कि सहसा पीछे से किसी के पुकारने की आवाज़ सुनकर ठिठक गया। मुड़कर देखा तो अमीन का मुस्तण्ड पियादा मिसिर अपनी नाल जड़ी मिर्जापुरी लाठी लिए चला आ रहा था। रामू के लिए यह कोई अनहोनी घटना न थी। आये दिन लगान की वसूली के लिए मिसिर का दौरा लगता रहता था। हल्के के अमीन बाबू दल सिंगार सिंह बड़े जाबिर किस्म के इंसान थे। खुद तो गाहे-बगाहे वसूली पर निकलते थे। वसूली तो बंस उनके नाम और दबदबे से होती थी। कुर्की, नीलामी, गिरफ्तारी और सबसे बढ़कर शारीरिक यन्त्रणा का हौआ। लोग खुद-बखुद उनकी डयोढ़ी नापा करते थें। काश्तकार लगान तो अदा करते ही, उनकी मुट्ठियाँ भी गरम करते थे। यदि बाबू साहब को खुद किसी के दरवाजे तक जाने की ज़हमत उठानी पड़ती तो मानों

उसके काश्तकार की शामत आ जाती। थें भी तो वह क्षेत्रीय विधायक जी के खास साले। ज़मीदारी के ज़माने में उनके पूर्वज कई पीढ़ी से ज़मींदार के कारिन्दा के रूप में काम करते चले आये थे। ज़मींदारी उन्मूलन से पहले बाबू साहब खुद उसी प्रतिष्ठित पद्र पर आसीन थे। ज़मींदार की कोठी तो शहर में थी, गाँव में एक बड़ी सी छाबनी उन्होंने अपने कारिन्दों को रहने के लिए दे रखी थी। बाबू साहब के बाप-दादे उसी छावनी में रहते आये थे और अब बाबू साहब खुद वहाँ विराजमान थे। भगवान की कृपा से ज़मींदारी टूटने के बाद बाबू साहब को सरकारी अमीन का ओहदा हासिल हो गया। काम वही और ऊपर से सरकारी ओहदेदारी का तुर्रा। तिकड़मी तो अव्वल दर्जे के थे ही थोड़े ही दिनों में उन्होंने ज़मींदार की छावनी कौड़ियों के मोल हथिया ली । तैनाती भी उसी हल्के में मिल गयी। प्रशासन के सिर पर विधायक जी का डण्डा जी था। बाबू साहब की तो पाँचों उँगलियाँ अब घी में थीं।

बाढ़-बूड़ा हो या इलाका सूखे की चपेट में आ गया हो, ओला-पाला से फसलें मारी गयी हों या काश्तकार किसी अन्य दैवी आपदा का शिकार हो गया हो, लगान में छूट, वसूली का स्थगन या उत्पीड़क कार्यवाही अमल में न लाये जाने सम्बन्धी सरकारी आदेश महज़ कागज़ पर होते थे। बाबू साहब के अपने नियम-कानून अलग होते। क्या मजाल कि उन्हें खुश किये बगैर या उनकी मेहरबानी के बिना सरकारी आदेशों का लाभ क्षेत्र के पीड़ित काश्तकारों को मिल जाता। राजनैतिक जागरूकता के इस ज़माने में भी लोग थर-थर काँपते थे उनके नाम से। उनकी ज़्यादतियों की शिकायतें कितनी ही बार उच्चाधिकारियों के कानों तक पहुँचीं किन्तु खामोशी के बस्ते में सिमट कर रह गईं। उनके खिलाफ कार्यवाही करके कौन मधुमक्खी के छत्ते को छेड़ने का दुस्साहस करता। लेकिन जब पानी सिर से ऊपर बह चला और बाबू साहब का जुला और तानाशाही अपनी चरम सीमा पार कर गयी तो उनके खिलाफ एक प्रमुख विपक्षी पार्टी ने जनमत जागृत कर प्रबल आन्दोलन छेड़ने की धमकी ज़िला प्रशासन को दे डाली। तब अधिकारियों के कान खड़े हुए और तहसीलदार की गोपनीय रिपोर्ट पर मजबूर होकर ज़िले के सम्बन्धित अधिकारियों ने बाबू साहब के क्षेत्र परिवर्तन का आदेश जारी कर दिया। फिर क्या था। मानो ज़बर्दस्त भूचाल आ गया। समूचा प्रशासन-तन्त्र हिल उठा। देखते ही देखते राजनैतिक हस्तक्षेप के चलते न केवल जिलाधिकारी को स्थानान्तरण आदेश रद्द करना पड़ा, बल्कि उस तहसीलदार को भी कोपभाजन बनना पड़ा जिसकी पहल पर अमीन का क्षेत्र-परिवर्तन किया गया था। स्वयं उन्हीं का तबादला आनन-फानन में राज्य के एक दुर्गम पर्वतीय अंचल में कर दिया गया ताकि न रह जाय बाँस, न बज सके बाँसुरी। बाबू साहब विजय-दुँदुभी बजाते दुगुनी शक्ति और शान के साथ उभरकर सामने आ गये। क्षेत्र के काश्तकारों के बीच तो मानो मातमी सन्नाटा छा गया।

हाँ, तो बाबू साहब का पियादा मिसिर जब रामू के करीब आ पहुँचा तो उसने सदैव की भाँति विनम्रतापूर्वक दोनों हाथ जोड़कर पा लागन किया उत्तर में आज मिसिर अपेक्षा के विपरीत ज़रा कड़क आवाजें में बोला, "महतो, बाबू साहब की छावनी पर अभी तुम्हारी बुलाहट है।"

सुनते ही रामू की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। मुँह की बात मुँह में ही समायी रह गई। सहमते हुए कहा, मिसिर भैया दूआरे चलकर जल-जलपान तो कर लो। हम भी कुदाल रखकर अँगरखा डाल लें तो चलते हैं।"

"नहीं महतो, देरी हो गयी तो बाबू साहब का पारा चढ़ जायेगा। अभी बुलाया है उन्होंने।"

"जैसा हुकुम" कहता हुआ रामू मिसिर के पीछे-पीछे चल दिया। रास्ते भर वह तरह-तरह की बातें सोचता जा रहा था। ज्यों-ज्यों छावनी करीब आ रही थी, उसके दिल की धड़कन बढ़ती जा रही थी। न जाने कौन सा फरमान है!

छावनी पर पहुँचकर रामू ने कुदाल फाटक के बाहर रखी और डरते-सहमते अन्दर घुसा। बाबू साहब बैठक में गावतकिया के सहारे अधलेटे से पसरे हुक्का जोड़कर खड़ा हो गया। बाबू साहब ने एक बार घूरकर उसकी ओर देखा, फिर त्योंरियाँ चढ़ाकर बोले, "क्यों रे रमुआ, तेरे ज़िम्मे दो साल का लगान बाकी है, फिर भी कान पर जूँ नहीं रेंगती। कितनी बार मिसिर तकादे पर जा चुके, लेकिन तेरी मोटी चमड़ी पर कोई असर नहीं हुआ।"

बाबू साहब का बदला हुआ तेवर देखकर रामू के तो होश उड़ गये। लड़खड़ाती आवाज़ में बोला,"गरीब परवर, आप से क्या छिपा है। पिछले साल भरे खलिहान में आग लग जाने से उजड़ गया था। कमर टूट गई थी अन्नदाता इस बार गुड़ की बेच से पैसा-पैसा............।"

बाबू साहब का बदला हुआ तेवर देखकर रामू के तो होश उड़ गये। लड़खड़ाती आवाज़ में बोला,"गरीब परवर, आप से क्या छिपा है। पिछले साल भरे खलिहान में आग लग जाने से उजड़ गया था। कमर टूट गई थी अन्नदाता इस बार गुड़ की बेच से पैसा-पैसा............।"

रामू अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि बीच ही में बाबू साहब कड़क कर बोले, "हाँ-हाँ, मुझे सब मालूम हैं इसीलिए तो अब तक मुहलत दे रखी थी। लेकिन आज तुझे लगान की भरपायी करनी होगी, वरना यह देख गिरफ्तारी का वारन्ट।"

मालिक, इस समय तो दो जून पेट पालना भी मुहाल हो रहा है। बैलों के लिए सानी-भूसे का जुगाड़ भी माँग-चाँग कर करता हूँ। जैसे इतने दिनों तक सरकार की दया-दृष्टि बनी रही, थोड़ा समय और दे दिया जाय गरीब-परवर। दोनों साल का लगान लाकर एक मुश्त जमा कर दूँगा।"

"मैं नाहक की बकवास नहीं सुनना चाहता। जैसे भी हो लगान की भरपाई आज ही करनी होगी। "बाबू साहब का तेवर और

बदलता जा रहा था।

न जाने क्या हो गया कि बेचारगी की हद से गुज़रने वाला गमखोर रामू बाबू साहब के इस कठोर व्यवहार से तिलमिला कर अपना आपा खो बैठा। शरीर की सारी शिराएँ एक साथ झनझना उठीं। दिनभर का थका-मादा तो था ही,वह अपने आवेश को न रोक सका। उसके मुँह से सपाट उत्तर निकल पड़ा, "लेकिन लाऊँ कहाँ से सरकार। चोरी करता नहीं। कोई ऋण भी नहीं देता, और अगर कहीं से मिल भी जाय तो सारी जिन्दगी ब्याज भरता रह जाऊँगा। खपरैल की झोपड़ी है, उसका भी कोई खरीदार नहीं मिलेगा।"

रामू के इस मुँहफट जवाब से बाबू साहब बौखला उठे और शेर की तरह दहाड़ते हुए बोले,"तेरी यह मजाल कि इस तरह ज़बानेदराजी करे! सारी शेखी अभी उतारता हूँ।" फिर पास खड़े मिसिर को आदेश दिया, "खड़े मुँह क्या ताक रहे हो? कस दो मुश्कें हरामजादे की। बहुत बढ़-बढ़कर बातें करने लगा है।"

रामू से न रहा गया। वह फिर बोल पड़ा,"जान मारने से तो रुपये नहीं मिल जायेंगे सरकार। मैं कोई बाजीगर नहीं कि यहीं बैठे-बैठे रुपये बना डालूँगा। आपकी मर्जी है तो लीजिये, यहीं बैठता हूँ।" रामू ने बेबसी की साँस खींची और वहीं बैठ गया।

जमींदार के कारिन्दा के रूप में कई पीढ़ियों से बाबू साहब के पूर्वजों का क्षेत्र में रुतबा और दबदबा कायम था। फिर अब तो वह सरकारी मुलाज़िम थे और इधर से सियासी संरक्षण भी प्राप्त था। अब डर काहे का। यह अपमान वह भला कैसे बर्दाश्त कर सकते थे। गरज कर बोले,"मिसिर, देखते क्या हो। मारो हरामजादे को।"

हुक्म की देर थी। मिसिर सहित छावरी के दो और मुलाज़िम रामू पर एक साथ बरस पड़े। लात-मुक्कों के प्रहार से जब वह अधमरा हो गया तो बाबू साहब ने उसे फाटक से बाहर करा दिया।

काफी देर तक रामू वहीं पड़ा कराहता रहा। फिर न जाने कब गाँव के ही कुछ लोग तरस खाकर उसे उठाकर उसकी झोपड़ी में पहुँचा आये थे। कई दिनों के उपचार के बाद जब वह कुछ डोलने-फिरने लायक हुआ तो सबसे पहले उसने ऋण के लिए अपने कई सगे-सम्बन्धियों और शुभ-चिन्तकों के दरवाजे खटखटाये। लोगों को आपबीती सुनायी और हाथ पसार कर दया की भिक्षा माँगी। लेकिन चारो ओर से टका सा जवाब मिलता रहा। समर्थ लोगों की बदली नज़रें देखकर वह रो पड़ा। घर लौटकर जब उसने दुखी मन से बेटे को सारा वृत्तान्त सुनाया तो उसी क्षण बाप बेटे ने मिलकर एक बीघा ज़मीन बेच डालने का फैसला कर लिया। देखते ही देखते चन्द दिनों में बीघा भर खेत पानी के भाव बारह सौ रुपये में निकल गया। गाँव के ही एक ठाकुर ने रामू की बेबसी और मजबूरी का फायदा उठाकर खेत खरीद लिया। रामू ने अगले ही दिन जाकर न केवल दोनों साल का बकाया लगान चुकता किया, बल्कि सारे जुल्मों-सितम को भूलकर दस्तूर के मुताबिक कुछ रुपये बाबू साहब को भी नजर किये। मिसिर की दस्तूरी देना भी वह न भूला। उसके पल्ले मुश्किल से हज़ार रुपये पड़े। मन ही मन तिलमिला कर रह गया बेचारा।

उस दिन सारी रात रामू सोच में डूबा रहा। बचा हुआ एक बीघा खेत और तीन प्राणियों का पापी पेट। ऊपर से बूढ़ी मरणासन्न महतारी की दवा-दारू का खर्चा गहरे अवसाद और निराशा की रेखा चेहरे पर छायी हुई थी।

उस दिन सारी रात रामू सोच में डूबा रहा। बचा हुआ एक बीघा खेत और तीन प्राणियों का पापी पेट। ऊपर से बूढ़ी मरणासन्न महतारी की दवा-दारू का खर्चा गहरे अवसाद और निराशा की रेखा चेहरे पर छायी हुई थी। सोचने लगा कि जब तक यह बीघा भर खेत बचा रहेगा, लगान का भूत हमेशा सिर पर सवार रहेगा। बाढ़-बूड़ा, ओला-पाला, आग-पानी और सूखा सबकी मार सहनी पड़ेगी। आये दिन सरकारी अमलों के जुल्मे का शिकार होना पड़ेगा। बची-खुची इज्जत-आबरू भी मिट्टी में मिल जायेगी। अन्ततः उसने यह फैसला किया कि ईख की फसल के बाद वह बची हुई एक बीघा जमीन भी निकाल कर हमेशा के लिए उस जंजाल से छुट्टी पा जायेगा। कातिक में उसने गन्ने की खड़ी फसल चीनी मिल को बेच डाली। कोल्हू-कड़ाहा और पेराई की जहमत कौन उठाता । ज्योंहि खेत खाली हुआ, उसने उसे भी बेंच दिया। इस बार पूरे दो हजार रुपये मिले। बैंलों की जोड़ी अब उसके किस काम की थी। सो लगे हाथ उसका भी सौदा आठ सौ रुपये में कर डाला।

खेत बिक गया, बैलों की जोड़ी नहीं रही, लेकिन तीन प्राणियों का पेट तो साथ था। रोजी-रोटी के लिए उसने गाँव के बीच एक छोटा सी परचून की दुकान खोल ली। अभी तक नमक-माचिस और तेल-तमाखू के लिए भी लोगों को गाँव से बाहर जाना पड़ता था। रामू की दुकान खुल जाने से सभी को काफी सुविधा हो गई थी। दुकान चल निकली और उसकी बदौलत रामू की खोई हुई मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ने लगी। जिनसे कभी माँगे से दस-बीस रुपये भी नहीं मिले थे, उन्हें भी वह पचीस-पचास रुपये का सामान उधार दे दिया करता था। दुकान के सामने से गुजरने वाला कोई भी अन्धा, अपाहिज या भिखारी खाली हाथ न लौटता। महतो अब पूरी तरह रामू सेठ बन चुका था। 'व्यापारे बसत लक्ष्मी' कहावत उसके साथ पूरी तरह चरितार्थ हो रही थी। उसने अपनी खपरैल की झोंपड़ी की जगह चार कमरों का साफ-सुथरा हवादार पक्का बनवा लिया, था। प्रथम श्रेणी में दसवाँ पास करके लखना ने बी०टी०सी० की ट्रेनिंग की और वहीं गाँव की प्राइमरी पाठशाला में उसे ज़िला परिषद् की अध्यापकी मिल गई थी। इस नौकरी से बाप-बेटे का मान-सम्मान और

बढ़ गया था। पिछले साल लखना की शादी भी खूब धूम-धाम से हो गई थी और उसकी दादी ने स्वर्ग सिधारने से पहले यह सुदिन अपनी आँखों से देख लिया था। ऐसा लगता था कि अपने नये घर में पौत्र- वधू का स्वागत करने के लिए ही उसके प्राण-पखेरू अटके हुए थे। ब्याह के दो माह बाद ही वह चल बसी और घर में बच गये फिर वही ढाक के तीन पात, गोकि परिस्थितियाँ अब बदल चुकी थी।

रामू की दुकान दिनों-दिन चमकने लगी। दुकान की साज-सज्जा भी आकर्षक हो गई थी। आम जरूरत की सारी चीजें अब दुकान में उपलब्ध थीं। रामू ने एक नौकर भी अपनी सहायता के लिए रख लिया था। उधर गाँव में लखन मास्टर का रुतबा भी धीरे-धीरे बढ़ने लगा। बच्चों को वह ऐसी लगन और प्यार से पढ़ाता कि सभी उसपर जान देते थे। अभिभावक भी उसका मान सम्मान करने लगे। अवकाश के समय वह क्षेत्र की राजनैतिक गतिविधियों में भी भाग लेने लगा। फलस्वरूप एक सशक्त विरोधी के रूप में वह सत्तारूढ़ दल के स्थानीय विधायक के लिए प्रतिद्वन्दी बनकर उभरने लगा था। उचित समय आने पर उसने नौकरी से त्याग-पत्र देकर विधान-सभा क। चुनाव लड़ने का भी मन बना लिया था।

उधर बाबू दलसिंगार सिंह, राजस्व संग्रह अमीन का जुल्म और तानाशाही जमींदारी के दिनों को भी पार करती जा रही थी। आये दिन काश्तकारों को बेइज्जत करना, पिटवा देना और हवालात में बन्द करा देना उनके बायें हाथ का खेल हो गया था। किसी में सिर उठाने की हिम्मत न थी। लेकिन पिछले दो सालों में गांव की युवा पीढ़ी का संगठन 'नौजवान सभा' काफी संगठित हो गया था। बाबू साहब के अत्याचारों से तंग आकर एक दिन संगठन के नौजवानों ने चुपचाप यह योजना बना डाली कि बाबू साहब को माकूल सबक सिखाना चाहिए। गांव के बड़े-बूढ़ों और यहां तक कि लखन मास्टर को भी युवकों के इन गुप्त मनसूबों की भनक नहीं लगने पायी।

शाम का समय था। पास के गांव से वसूली करके बाबू साहब अपने पियादे मिसिर के साथ छावनी की ओर लौट रहे थे। युवकों को इसका सुराग लग चुका था। लाठी-डण्डों से लैस बीस-बाईस युवकों ने गांव से बाहर एक सुनसान बगिया में उन्हें घेर लिया। बाबू साहब का तो होश-हवास उड़ गया। इस अप्रत्याशित घटना से उनके पांव तले की धरती मानो खिसकने लगी। उनका विश्वासपात्र और वफादार पियादा मिसिर युवकों का आक्रामक रुख देखकर तुरन्त दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ। उसने मुड़कर यह भी नहीं देखा कि आखिर बाबू साहब पर क्या गुजर रही है। युवकों का दल भी मिसिर की अनदेखी

कर गया क्योंकि उनका असली शिकार तो सामने था।

युवकों की लाठियां ज्योंही बाबू साहब के सिर पर बरसने को तनीं तभी न जाने किधर से लखन मास्टर साइकिल से वहां आ धमका। यह नजारा देखते ही वह साइकिल से कूदकर बाबू साहब के आगे जा खड़ा हुआ। युवकों की तनी लाठियां तनी ही रह गईं। सबके सब भौचक्के से खड़े लखन का मुंह ताकने लगे। लखन ने कड़क कर पूछा, "यह क्या गजब ढाने पर आमादा हो साथियों?"

कई स्वर एक साथ बोल पड़े,"सामने से हट जाओ लखन भैया। आज इस जल्लाद को सबक सिखाना है। इसके जुल्म से सारा गांव खून के आंसू रो रहा है। हम पर क्या बीत रही है, यह तुमसे भी छिपा नहीं। भूल गये वह दिन क्या जब इस जालिम ने तुम्हारे बाबू को भी बेरहमी के साथ पिटवाकर अधमरा करके छावनी के बाहर फेंकवा दिया था।"

"ठीक कहते हो दोस्तो। लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं कि हमलोग भी पागलों की तरह हिंसा पर उतारू हो जायें। बाबू साहब के जुल्म के खिलाफ आवाज उठाने के कानूनी तरीके हैं। मैं भी तुम सबका साथ दूंगा। लेकिन इस तरह की हिंसक प्रवृत्ति मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

"लखन भैया, इस समय हमारे ऊपर खून सवार है। हम कुछ भी सुनने को तैयार नहीं। लात का देवता बात से मानने वाला नहीं। अगर तुम बीच में पड़े तो नाहक पिस जाओगे।" मोहना गरजकर बोला।

"मैं फिर कहता हूँ साथियो, लाठियां नीचे करो। अगर किसी ने वार किया तो पहली लाठी मेरे सिर पर पड़ेगी। यदि तुमलोग बाबू साहब को मारना चाहते हो तो पहले मुझे मारकर खपा डालो। मेरे जिन्दा रहते कोई उनका बाल भी बाँका नहीं कर सकता।"

"अच्छा तो देखता हूं भैया, कैसे बचा लेते हो तुम इस जालिम को।" कहते-कहते मोहना की लाठी बरस पड़ी। लखन एक ही छलांग में कूदकर बाबू साहब के सामने आ गया था। भरपूर लाठी उसी के सिर पर आ पड़ी। खोपड़ी फट गई और खून की धार बहने लगी। पलभर में कपड़े लहू-लुहान हो गये। लेकिन लखन टस से मस नहीं हुआ। शेष युवकों की तनी लाठियां नीचे आ गईं। एकदम सन्नाटा छा गया। सारे युवक स्तब्ध -हतप्रभ से अपने स्थान पर खड़े रहे। लखन ने उन्हें फिर ललकारा,"रुक क्यों गये साथियो? चलाओ न जी भर के लाठियां। अभी तो मैं जिन्दा हूं।"

इस अप्रत्याशित घटना-क्रम ने युवकों के सारे जोश और आक्रोश पर पानी फेरकर उन्हें जड़वत बना दिया। मन ही मन वे मोहना को कोस रहे थे कि आखिर उसने लखन भैया पर लाठी क्यों चला दी।

शेषांश पृष्ठ 26 पर....

आरक्षण: नीति, नीयत और नियति

प्रस्तुति: श्रीकृष्णा शर्मा

'शब्द संसार', जयपुर द्वारा राजस्थान शासन के सूचना केन्द्र में आयोजित 'आरक्षण: नीति, नीयत और नियति' विषयक संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में भाषण करते हुए स्वतन्त्रता सेनानी और राजस्थान के पूर्व राज्यपाल बलिराम भगत ने कहा कि मैं आरक्षण के पार (बियोण्ड) सोचता हूँ और वह सोच है एक जातिविहीन तथा वर्गविहीन समाज की रचना करने की, जो भारतीय संविधान का मूलमन्त्र है। बलिराम भगत ने कहा कि चुनाव के ठीक पूर्व आरक्षण की घोषणा करना आरक्षण का राजनीतिकरण करना है जबकि हमारे यहाँ तो बुद्ध, महावीर, कबीर, गाँधी ने जातिवाद के विरुद्ध संघर्ष किया है अत: हमें प्रजातांत्रिक पद्धति को नए अयाम देने होंगे।

बलिराम भगत ने समाज विज्ञानी डॉ० रजनी कोठरी को उद्धृत करते हुए कहा कि जब तक समाज के पिछड़े लोग, दूरदराज गाँवों में रहने वाले लोगों को विकास के अवसर नहीं मिलेगें तब तक सामाजिक असन्तोष फूटता रहेगा। वस्तुत: निहित स्वार्थी लोग उच्च न्यायालय से प्राय: आरक्षण के विरुद्ध निर्णय करवा लेते हैं पर जब कभी कोई सर्वोच्च न्यायालय में जाता है तो वह फिर जीत जाता है क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय ने योग्यता को 'होक्स्' माना है।

बलिराम भगत ने कहा कि आरक्षण की समस्या के समाधान के लिए 'काका कालेलकर आयोग' बनाया गया पर उसका प्रतिवेदन सरकार को अव्यवहारिक लगा इसलिए उस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। फिर बी०पी० मण्डल की अध्यक्षता में बने मण्डल कमीशन के प्रतिवेदन को लागू किया गया पर देश के कई भागों में युवकों ने आत्मदाह किया और हिंसा का ताण्डव हुआ, जो उचित नहीं था। हाँ जो सामाजिक दृष्टि से पिछड़ गये उन्हें विशेषाधिकार मिलने ही चाहिए तब तक, जब तक वे बराबरी के स्तर पर न आ जाएँ।

मैंने तो अपने जीवन में कभी ऐसा अनुभव नहीं किया कि मैं एक पिछड़े वर्ग से आया हूँ, न विद्यालय में, न चिकित्सालय में, न सार्वजनिक परिवहन सेवाओं में। गाँधीजी के आगमन के बाद तो लोग कम ही साहस कर पाते थे किसी से भेदभाव करने का। मुसलमानों के लिए अलग से मतदातामण्डल बनाने के विरुद्ध तो गाँधी जी ने आमरण अनशन भी किया और गाँधी जी के जीवन को बचाने के लिए डॉ० भीमराव आम्बेडकर ने पूना: पैक्ट के अन्तर्गत गाँधीजी का आमरण अनशन तुड़वाया।

विशिष्ट अतिथि नवलकिशोर शर्मा ने कहा कि आरक्षण की नीति तो में कोई कमी नहीं थी वह बिल्कुल ठीक थी, पर बहुत बाद में उसके क्रियान्वयन में कई जगह प्रश्नचिन्ह लगा, फलश्रुति जिनके लिए आरक्षण रखा गया उन्हें ही इसका लाभ मिलना चाहिए था पर आज तो जिनके पास साधन हैं वे भी मजे से आरक्षण का लाभ उठा रहे हैं। सच तो यह है कि राजनीति में आज जिसके पास ताकत है, साधन हैं वे ही सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं।

डॉ० ताराप्रकाश जोशी ने कहा कि तकनीकी विकास और संचार क्रान्ति ने अपना जो तन्त्र विकसित किया है उससें आरक्षण की उपयोगिता कम होने वाली है अत: जितना जल्दी हो सके अनुसूचित जाति जन जाति व अन्य पिछड़े वर्ग के लोग अपना शैक्षणिक स्तर ऊँचा उठा लें अन्यथा नई तकनीक के परिणामों के सामने आरक्षण कहाँ टिकेगा?

डॉ० ताराप्रकाश जोशी ने कहा कि भारतीय समाज में सदैव से ही जातियों में बँटा नहीं रहा। अगस्त्य ऋषि की पत्नी अनार्य कन्या लोपामुद्रा थी जिसने उष: सूक्त लिखे जो आज भी हमारे लिए प्रात: स्मरणीय हैं। ऋषि भारद्वाज तो स्वयं ही आदि कवि वाल्मीकि के शिष्य थे। और वाल्मीकि आश्रम में ही सीता माता ने लव कुश को जन्म दिया और वहीं उनका लालन-पालन, भरण-पोषण हुआ। यही नहीं महाभारत के रचयिता व्यास जी भी धीवर कन्या सत्यवती की सन्तान थे अर्थात् मुगलकाल से पहले में अस्पृश्यता, छुआछूत जैसी कोई बात नहीं थी। गुलाम होने के बाद सामन्ती प्रथा के कारण यह भेदभाव शुरु हुआ पर जिसके लिए पिछड़े वर्ग के लोग व अनुसूचित जाति जनजाति के लोग ब्राहम्णों को अपमानित और लांछित करते रहते हैं जबकि सत्य यह है कि जिस भारतीय संस्कृति पर हम सब गौरव करते हैं उसे नष्ट होने से बचाए रखने के लिए ब्राह्मण वेद, पुराण, रामायण व महाभारत को कण्ठों में लिए घूमते रहे।

डॉ० ताराप्रकाश जोशी ने कहा कि फ्रांसीसी क्रान्ति के बाद स्वतन्त्रता, भ्रातृत्व एवं समानता का सिद्धान्त प्रतिपादित हुआ फिर सोवियत रूस की क्रान्ति और औद्योगीकरण के कारण समता का विचार और दृढ़ हुआ पर "तिलक, तराजू और तलवार इनमें मारो जूते चार" के उद्घोष से सामाजिक समानता नहीं आएगी। इसके लिए तो पढ़ लिखकर अज्ञान, अन्ध विश्वास के दायरे से बाहर आना ही होगा।

'शब्द संसार' के अध्यक्ष श्रीकृष्णा शर्मा ने कहा कि अर्थव्यवस्था की उदारीकरण की नीति के तीव्रगति से क्रियान्वयन के कारण एक ओर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का दबदबा बढ़ रहा है और उनके यहाँ तो प्रतिभा की ही पूछ होती है जबकि दूसरी और केन्द्रीय व राज्य सरकारों को अपने स्टॉफ़ में प्रतिवर्ष दस प्रतिशत की कमी करनी है तो ऐसे में नए पदों के सृजन की कोई सम्भावना नहीं है और तो और डिसइन्वैस्टमैण्ट एवं निजीकरण की नीति के कारण सरकार में तो पदों की और कमी होगी तो ऐसे में आरक्षण का भविष्य उज्जवल नहीं है।

श्रीकृष्णा शर्मा ने कहा कि समाज के पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति एवं जनजाति के वर्गों को अतिरिक्त सुविधाएँ उपलब्ध करवा कर जल्दी सवर्णों से प्रतिस्पार्धात्मक बनाना

होगा अन्यथा सदैव से रक्षण करने वाली जाति क्षत्रिय और जैसे ज्ञान देने वाली जाति ब्राह्मण भी आरक्षण की माँग कर रही हैं और न मिलने पर निराश होकर 'बुमुक्षमं किम् न करोति पापम्' के अनुसार अधम व पतित मार्ग पर चल निकलें तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

विषय का प्रवर्तन करते हुए राजस्थान अन्य पिछड़ा आयोग के पूर्व सदस्य ने कहा कि भारतीय संविधान में वर्णित अनुच्छेद 15 व 16 के अनुसार जो व्यक्ति पारम्परिक रूप से, सामाजिक और शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़ गये हैं उन्हें बराबरी का दर्जा देने के लिए परमिसिव डिस्क्रिएशन दिया गया ताकि समाज के निर्माण में पिछड़े लोगों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व मिल सके। और यह जाति, धर्म अथवा आर्थिक दृष्टि से कमजोरों के लिए नहीं है। चूँकि स्वाधीनता पूर्व से ही सरकारी सेवा प्रतिष्ठासूचक मानी जाती रही है। अत: अनुसूचित जाति एवं जनजातियों को विशेष सुविधाएँ और रियासतें दी गईं। इन्दिरा साहनी प्रकरण में सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट कर दिया है कि जिन्हें अवसर नहीं मिले वे सर्वोत्कृष्ट, उत्कृष्ट कैसे हो सकते हैं? अत: उन्हें आरक्षण मिलना ही चाहिए। पहले यह सुविधा दस वर्ष के लिए थी पर बाद में इस सीमा को दस वर्ष के लिए बढ़ाया जाता रहा क्योंकि राजनीतिक दलों ने ईमानदारी से नीतियों को लागू नहीं किया। और 'वोट बैंक' को कोई भी राजनीतिक दल खोना नहीं चाहता बल्कि नए नए वर्गों को आरक्षण देकर वोट बैंक मजबूत कर रहे हैं।

सत्यनारायण सिंह ने कहा कि आरक्षण गरीबी मिटाने का उपकरण नहीं है पर जब दूरदराज क्षेत्रों में पच्चीस रुपये वार्षिक की छात्रवृत्ति मिलती हो तो उस व्यक्ति से कैसे उम्मीद की जा सकती है कि वह पढ़ लिख कर सवर्णो के समकक्ष आ जायेगा। कलान्तर में अन्य पिछड़े वर्गों को भी रियासतें सुविधाएँ दी जानी लगीं। आरक्षण रहेगा तब तक जबतक समाज में असमानता रहेगी।

काँग्रेस विधायक डॉ० करणसिंह यादव ने आक्रोश भरे स्वर में कहा कि आरक्षण की नीति में खोट था और उसे लागू करने वालों की नीयत में भी खोट था। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय में आरक्षण की नीति की खुलकर हुई अवहेलना का आरोप लगाया है। फलत: एक हजार शिक्षकों में आरक्षित वर्ग के दो प्रतिशत शिक्षक भी नहीं हैं।

डॉ० करणसिंह यादव ने कहा कि राजस्थान विश्वविद्यालय में बैक डोर से सैकड़ों पद पक्षपातपूर्ण तरीके से भर लिए गए हैं और अब उन्हें मानवीय दृष्टिकोण की आड़ में नियमित किये जाने की कोशिश हो रही है और आश्चर्य की बात यह है कि कुलपति महोदय भी अन्य पिछड़े वर्ग से हैं और राजस्थान के मुख्यमंत्री महोदय भी अन्य पिछड़े वर्ग से हैं वे भी न जाने क्यों कुछ नहीं कर पा रहे हैं।

समारोह की अध्यक्षता चैतन्य गुरु जी ने की और उन्होंने कहा कि जब तक मन में शान्ति नहीं होगी समाज में समता नहीं आ सकती इसलिए कोई कितने ही कानून बना ले कुछ होने वाला नहीं। चैतन्य गुरु जी ने कहा कि सच तो यह है कि आरक्षण को कोई भी दल मन से, ईमानदारी से लागू नहीं करना चाहता।

लेखक बी०एल० चिरनियाँ ने कहा कि आरक्षण कौन चाहता है हम तो अवसर चाहते हैं- समता के समानता के और यदि समय पर आवश्यकतानुसार साधन सुविधाएँ उपलब्ध करवा दी जाएँ तो समाजिक न्याय की प्रक्रिया तीव्र होगी। वरिष्ठ कवि रामनाथ कमलाकर ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन साहित्यकार डॉ० हरि महर्षि ने किया।

वरिष्ट पत्रकार डॉ० भँवर सुराणा ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि मण्डल आ गया और केन्द्र में कमण्डल वालों की सरकार है पर ईमानदारी से उसे लागू नहीं करना चाहती क्योंकि वह मूलत: ब्राह्मण और वनियों की पार्टी है जो मण्डल वालों के विरोध की राजनीति पर ही टिकी है।

डॉ० सुराणा ने कहा कि राष्ट्रपति जैसे पद पर आसीन द्वारा राजस्थान विधान सभा के नवनिर्मित भवन के लोकार्पण को लेकर एक दल इसलिए विरोध कर रहा है क्योंकि राष्ट्रपति पद पर एक दलित व्यक्ति बैठा है जो निन्दनीय है।

सम्पर्क:- अध्यक्ष, शब्द संसार
गीताजंलि, 26, मंगल मार्ग,
बापू नगर, जयपुर-302015
दूरभाष: 513920, 515221

पृष्ठ 29 का शेष भाग

को बड़े जोरों से डाटा था। उस बेचारे ने क्षमा याचना करते हुए कहा था,' गलती हो गई। मेरी समझ में यह नहीं आ सका कि मैसी जी इस तरह से गिर पड़ेगी। मैं अपनी गलती के लिए बहुत शर्मिन्दा हूँ। आप सबों से माफी मांगता हूँ। उसकी लज्जित आंखें शर्म से झुक गई थी। तुम्हारे आक्रोश में नारी के प्रति सम्मान और संवेदना थी। मैं तुम्हारा आदर करने लगी। उस दिन तुमसे मिलने के बाद विद्यार्थी जीवन की घटनाएं स्मृति पटल पर स्वत: आने लगी। कुछ ऐसी भी स्मृतियां हैं जिन्हें तुम्हारे साथ बांटकर अपने मन को हलका करना चाहती हूँ। जिया निरास मत करना। समय कम है।'

पत्र पढ़कर हमें लगा कि कृष्णा का जीवन सुख से बंचित रहा है। कुछ ऐसी मानसिक समस्याओं से ग्रसित है जिन्हें सब के सामने नहीं खोल सकती है, परन्तु उन समस्याओं के उदघाटन के लिए मुझे क्यों चुना है। मेरी उत्सुकता शीर्षबिन्दु का स्पर्श करने को आतुर होने लगी। मैने विष्णु को फोन किया कि मैं इलाहाबाद आ रहा हूँ।

रेलवे स्टेशन पर विष्णु जी मिले। मैने कहा,' विष्णु जी घर चलने से पहले चलिए कृष्णा से मिलते चलें। पता नहीं क्यों मुझको लगता है कि वह मुझे बुला रही है। उसने पत्र में लिखा है कि वह अकेले में कुछ बातें करना चाहती है।

हम दोनों कृष्णा के घर साउथ मलाका पहुंचे। गाड़ी से उतरकर घंटी बजाने जा रहा था कि कृष्णा के पड़ोसी ने सूचित किया कि घर में कोई नहीं है। वह चली गई। हम सब को छोड़कर चली गई। पता नहीं ईश्वर अच्छे लोगों को इतनी जल्दी क्यों बुला लेता है।, उसकी आँखें आँसुओं से नम हो गई थी।

बुझे मन से हम वापस लौटे। मेरे मने में यह प्रश्न रह रह कर आज भी उठता रहता है कि वह कौन सी बात रही होगी जो कृष्णा मुझसे कहना चाह रही थी और बिना कहे हुए वह चली गई।

सम्पर्क:- जिया लाल आर्य
"आर्य निवास"
23, आई०ए०एस० कॉलोनी
किदवईपुरी, पटना-1

आदर्श शिक्षक एवं आदर्श शिक्षण

✍ सुभाष शर्मा

भारतीय संविधान की धारा 47 के तहत यह व्यवस्था की गयी थी कि संविधान लागू होने के 10 वर्षों के अन्दर 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देने की व्यवस्था राज्य करेगा। के०पी० उन्नीकृष्णन के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने 1993 में यह फैसला दिया था कि यद्यपि शिक्षा राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों के अधीन है किन्तु यह अंतत: मौलिक अधिकार है। विभिन्न शिक्षा आयोगों और समितियों की सिफारिशों तथा भारत सरकार की नीतियों में सबको शिक्षा की मुख्य धारा में लाने की घोषणाएं बार-बार की जाती रहीं किन्तु अभी भी एक बड़ी जनसंख्या शिक्षा के मौलिक अधिकार से पूर्णत: या अंशत: वंचित है। जिन बच्चों ने विद्यालयों का मुँह तक नहीं देखा है अथवा अल्पकाल तक उनमें पढ़ने के बाद प्रतिकूल शिक्षा व्यवस्था ने उन्हें अपनी चारदीवारी से बाहर कर दिया, ऐसे बच्चों की संख्या भारत में करोड़ों में है। जाहिर है ऐसी पृष्ठभूमि में जब हम "आदर्श शिक्षक एवं आदर्श शिक्षण" की बात करते हैं तो सिर्फ उन्हीं बच्चों को ध्यान में रखकर ऐसा कहते हैं जो विद्यालयों में पढ़ते हैं। यह दूसरा मुद्दा है कि विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों की भी भिन्न-भिन्न श्रेणियां हैं। उदाहरणार्थ, पहली श्रेणी में भारत के महानगरों के मँहगे वातानुकूलित विद्यालयों में पढ़ने वाले वे छात्र हैं जिनके आने-जाने की परिवहन व्यवस्था भी वातानुकूलित है, जिनका अंग्रेजी माध्यम की पढ़ाई में बहुत ज्यादा खर्च होता है और उन बच्चों की दिली इच्छा विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करना और वहीं उच्चत्तम कोटि के रोजगार प्राप्त करना है। ये बच्चे बड़े-बड़े राजनेताओं, नौकरशाहों, व्यवसायियों, इंजीनियरों, चिकित्सकों, अधिवक्ताओं आदि के परिवारों के होते हैं। इन विद्यालयों के परिसरों में अंग्रेजी के अलावा दूसरी भाषा में बोलना-बतलाना मना है। दूसरी श्रेणी में अन्य नगरों में अंग्रेजी माध्यम से निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र होते हैं जो मध्यम वर्ग के होते हैं। इन विद्यालयों में भी अंग्रेजी माध्यम होता है किन्तु परस्पर बातचीत दूसरी भाषा में हो सकती है। इनका दृष्टिकोण भारत में उपलब्ध उच्चत्तम स्तर के शैक्षणिक संस्थानों में मँहगी शिक्षा प्राप्त कर रोजगार प्राप्त करना होता है। तीसरी श्रेणी में शहरों के सरकारी विद्यालय और देहात के सरकारी एवं निजी विद्यालय आते हैं जिनमें प्राय: निम्न वर्ग तथा निम्न-मध्य वर्ग के परिवारों के बच्चे पढ़ते हैं और

एक-दूसरे पर दोषारोपण करने के बजाय हम यह प्रयास करें कि "आज और अभी" तथा "यहीं से" हमारे शिक्षक अपने में उन आदर्श गुणों को समाहित करेंगे जो विद्यार्थियों को आदर्श बना सकें जिससे वे राष्ट्र-निर्माण में सक्रिय योगदान दे सकें।

उनका सपना कोई छोटा-मोटा रोजगार- विशेष कर सरकारी नौकरी-प्राप्त करना होता है। यहां मैं जिन बच्चों की बात कर रहा हूँ, वे तीसरी श्रेणी के हैं। सबसे अहम सवाल यह है कि निम्नतम श्रेणी के ऐसे छात्रों और छात्राओं को किस तरह उच्चत्तम गुणवत्ता की शिक्षा दी जाये, यदि हमने विभिन्न श्रेणियों के बीच व्याप्त खाई को समय रहते नहीं पाटा, तो हमें (शिक्षकों, प्रशासकों, नागरिकों को) उसके दुष्परिणाम कभी न कभी भुगतने होंगे। उसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर यह लेख लिखा जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा मानवधिकार की सार्वभौमिक घोषणा तथा संयुक्त राष्ट्र का बाल अधिकार समझौता, जिसे लगभग 200 देशों ने अनुमोदित किया है और भारत भी उसमें एक है, के अनुसार प्रत्येक राष्ट्र के प्रत्येक बालक-बालिका को 4 आधारभूत अधिकार प्राप्त हैं:-

(क)जीने का अधिकार (ख)संरक्षण का अधिकार (ग)विकास का अधिकार (घ)भागीदारी का अधिकार

जाहिर है कि शिक्षा, विकास के अधिकार में अंतर्निहित है किन्तु दुर्भाग्य है कि अभी तक भारत में समान रूप से और बिहार में विशेष रूप से हम अधिकांश बच्चों को ये चार अधिकार मुहैया नहीं करा पाये हैं जिसके लिए समेकित रूप से भारत सरकार व बिहार सरकार के साथ-साथ परिवार, गैर-सरकारी संगठन और समूचा समाज जिम्मेदार हैं। इस नकारात्मक परिदृश्य को बदल करके ही हम अपना पाप धो सकते हैं। एक-दूसरे पर दोषारोपण करने के बजाय हम यह प्रयास करें कि "आज और अभी" तथा "यहीं से" हमारे शिक्षक अपने में उन आदर्श गुणों को समाहित करेंगे जो विद्यार्थियों को आदर्श बना सकें जिससे वे राष्ट्र-निर्माण में सक्रिय योगदान दे सकें। कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों को अन्तत: अजरअंदाज नहीं कर सकता क्योंकि शिक्षक एक-दो नहीं बल्कि कई-कई पीढ़ियों का सतत् निर्माण करते हैं और यह नींव कमजोर हुई, तो राष्ट्र रूपी भवन धराशायी हो जायेगा।

सवाल यह उठता है कि आदर्श शिक्षक कौन है? क्या वह आदर्श शिक्षक है जो सफल है अर्थात् जिसके पढ़ाये हुये अधिकांश विद्यार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाते हैं या अच्छे अंक प्राप्त करते हैं? अथवा आदर्श शिक्षक वह सार्थक शिक्षक है जो अपने विद्यार्थियों को बेहतर मनुष्य बनाता है और भावी चुनौतियों के लिए तैयार करता है। सफल शिक्षक और सार्थक शिक्षक के बीच की दूरी दुर्भाग्यवश बढ़ती जा रही है। तथाकथित सफल शिक्षक अपने विद्यार्थियों को मात्र परीक्षा के दृष्टिकोण से पढ़ाते हैं। वे अपने विद्यार्थियों को ट्यूशन/कोचिंग पढ़ने की सलाह देते हैं और इनमें से कुछ शिक्षक इस हद तक पहुंच जाते हैं कि वे अपने विद्यार्थियों को कक्षा से

बाहर खुद के द्वारा संचालित ट्यूशन/कोचिंग, संस्थानों में पढ़ने के लिए मजबूर करते हैं। असफल शिक्षक कक्षा में पढ़ाने के अलावा सारे कार्य करते हैं-यथा गुटबन्दी, राजनैतिक दलों का पिछलग्गू होना, परीक्षा में नकल कराना, ठेकेदारी करना, सूदखोरी करना आदि। निकृष्टता और पतन का यह चरम है। दुर्भाग्यवश किस तरह सरकारी चिकित्सालयों में सरकारी चिकित्सक एवं स्टॉफ मरीजों के इलाज के लिए आसानी से उपलब्ध नहीं होते हैं और बेतहाशा धन कमाने के लिए निजी प्रैक्टिस में जुटे रहते हैं, ठीक उसी प्रकार बहुतेरे शिक्षक भी स्वार्थ और धन लोलुपता के शिकार हैं। लेकिन आदर्श शिक्षक का दायित्व है कि वह पाठ्यक्रम को समुचित तरीके से पढ़ाने के साथ-साथ पाठ्यक्रम के बाहर सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक परिवेश में भी अपने विद्यार्थियों को परिचित कराये और उन क्षेत्रों की प्रमुख चुनौतियों और मुद्दों को ठीक से समझाये। सार्थक शिक्षक को अंतर्वस्तु की दृष्टि से निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए:-

(क) विषय वस्तु क्या है?

(ख) वह विषय वस्तु क्यों?

(ग) वह विषय वस्तु कैसे?

(घ) वह विषय वस्तु किसके लिए उपयोगी है?

(ड) वह विषय वस्तु भविष्य में कैसी होनी चाहिये?

यदि कोई शिक्षक इन पांच सवालों को ध्यान में रखते हुए अपना विषय पढ़ाये तो जाहिर है कि वह बच्चों को संबंधित विषय के सभी पक्षों से अवगत करायेगा जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। पहले प्रश्न में विषय वस्तु का मूल निहित है। किसी भी शिक्षक का यह प्रथम दायित्व है कि वह उस विषय को गहराई में जाकर स्पष्ट व्याख्या करे अर्थात् वह बताये कि उस विषय के प्रमुख तत्व क्या-क्या हैं। अर्थात् वह सवाल किन-किन अंशों से बना है और प्रत्येक अंश का अर्थ क्या है? उदाहरणार्थ समाज के बारे में शिक्षक को विस्तार से बताना चाहिये कि समाज के तत्व क्या-क्या हैं, उसकी न्यूनतम इकाई क्या है? दूसरा सवाल संबंधित विषय के कारणों से जुड़ा है जो बच्चों में तर्कशक्ति का विकास करता है। यह विज्ञान और अन्ततः दर्शन के अधिकार क्षेत्र तक पहुंचता है। तीसरा सवाल कोई भी चीज कैसे घटती है, इससे जुड़ा है अर्थात् किसी चीज के बनने-बिगड़ने की प्रक्रिया को यहां स्पष्ट किया जाना है। इससे बच्चों में हुनर या कौशल विकसित होता है। चौथा सवाल किसी चीज की उपयोगिता से संबंधित है जो वर्तमान में सिद्ध हो चुकी है। लेकिन पांचवां सवाल उससे भी आगे जाता है और बताता है कि उस चीज से इनके अतिरिक्त क्या-क्या प्राप्त हो सकता है, या उस चीज का स्वरूप कैसे बदला जा सकता है, या उसे नयी चीजों से कैसे जोड़ा जा सकता है अथवा अलग किया जा सकता है, आदि।

जाहिर है, किसी भी आदर्श शिक्षक के लिए आदर्श शिक्षण पद्धति अपनाना जरूरी है। आदर्श शिक्षण पद्धति में निम्नलिखित चीजें अत्यंत महत्वपूर्ण हैं:-

(1) बाल-केन्द्रित शिक्षा-यह सर्वविदित है कि सन् 1762 में जे०जे० रूसों ने बाल-केंद्रित शिक्षा की अवधारणा प्रस्तुत की थी। अतः अध्यापकों को विद्यार्थियों पर कोई चीज थोपनी नहीं चाहिये। दरअसल उन शिक्षकों को यह नहीं समझाना चाहिये कि बच्चे खाली स्लेट की तरह साफ हैं और मनमाने तौर पर उस पर जो चाहें, लिख दिया जाये। बच्चे अपने गर्भस्थ जीवन से ही कुछ न कुछ सीखते रहते हैं और जब वे विद्यालय आते हैं तो अपने साथ अपने परिवार मित्रों तथा भौगोलिक परिवेश के तत्व भी साथ-साथ लाते हैं। दूसरे, बच्चों के दिमाग को डाकघर की पत्र-पेटिका अथवा बैंक का लॉकर नहीं समझना चाहिये, जहां लोग स्वेच्छा से अपनी चीजें डाल देते हैं बल्कि सीखना दोतरफा चलने वाली गतिशील एवं भागीदारी की प्रक्रिया है। अतः बच्चों से सर्जनात्मक परामर्श लिया जाना चाहिये और शिक्षकों को सुविधादाता की भूमिका अदा करनी चाहिये। यह कार्य निम्नलिखित तरीके से किया जा सकता है:-

(क) आदर्श शिक्षक का यह दायित्व है कि वह विद्यार्थियों में सीखने के प्रति प्रबल इच्छा एवं रूचि पैदा करे। ऐसा करने के लिए शिक्षक को बाल-मनोविज्ञान समझना पड़ेगा जिस विषय में बच्चों की अधिक रूचि हो, उसी से शिक्षण कार्य शुरू करना चाहिये और उससे जोड़ते हुये बाद में गंभीर एवं जटिल चीजें पढ़ाना चाहिये।

(ख) विद्यार्थियों में "कैसे सीखें", यह सीखने की जिज्ञासा विकसित करनी चाहिये। अर्थात् सिर्फ सूचनाओं का पिटारा खोलने के बजाय उसे परिवेश से जोड़कर ज्ञात से अज्ञात, मूर्त से अमूर्त व स्थल से सूक्ष्म चीजों की ओर बढ़ना चाहिये।

(ग) बच्चों को अधिक से अधिक सवाल पूछने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यदि छात्रों को सवाल पूछने में डर लगता हो तो विद्यार्थियों से घुलमिल कर वह डर सदा के लिए निकाल देना चाहिये। इस स्तर पर सही सवाल पूछना उत्तर खोजने से कम महत्वपूर्ण नहीं।

(घ) शिक्षक को सिर्फ किताबी ज्ञान तक ही सीमित नहीं रहना चाहिये बल्कि जीवन के दैनिक कार्यों से ज्ञान का क्षेत्र विस्तारित किया जाना चाहिये। उदाहरणार्थ, सुलभ, सस्ती और बेकार फेंकी गयी चीजों को उपयोग में लाकर कुछ प्रयोग या प्रोजेक्ट तैयार किया जाना चाहिये। दरअसल विद्यार्थियों को "पुस्तक-प्रेमी" सहज और सृजनात्मक

रूप से बनाना चाहिए, न कि किताबी कीड़ा।

(ड) असंज्ञानात्मक क्षेत्रों यथा खेलकूद, सौंदर्यबोध आदि पर भी छात्रों को शामिल करने का प्रयत्न किया जाना चाहिये।

(च) शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच सतत् एवं सक्रिय अंत: क्रिया स्थापित की जानी चाहिये अर्थात् जिस विषय को किसी अध्यापक ने पढ़ाया हो, उसे गुणवत्ता के स्तर को सभी छात्र प्राप्त कर लें, यह प्रयास किया जाना चाहिये। इसके अलावा विद्यार्थियों में परस्पर अन्त:क्रिया के लिए भी प्रेरित करना चाहिए।

(छ) विद्यालय और घर के भिन्न परिवेशों में तालमेल स्थापित किया जाना चाहिये। इसके लिए शिक्षक को विद्यार्थियों की भीतरी दुनिया और बाहरी दुनिया के बीच सेतु बनना होगा। यहां स्थान-काल संदर्भीकरण जरूरी होगा।

(ज) बच्चों द्वारा बताये गये उत्तरों में गलतियां ढूंढने का प्रयास करने के बजाय सुधारात्मक सुझाव दिया जाना चाहिये और गलतियों के कारण विद्यार्थियों को इतना हतोत्साहित नहीं कर दिया जाये कि वे भविष्य में सवाल तथा किसी सवाल का जवाब देने का प्रयास ही नहीं करें।

(झ) विद्यार्थियों में सर्जनात्मक एवं आलोचनात्मक शक्ति विकसित करने और स्वयं सोचकर समस्या हल करने हेतु समय-समय पर विचार मन्थन सत्र (brain storming session) चलाना चाहिए जिससे innovative सोच की उपलब्धि हासिल हो सके।

(क) माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर शिक्षक का यह प्रयास हो कि भाषा में कोई व्याकरणिक त्रुटियां न हों। शिक्षक खुद शुद्ध भाषा कक्षा में बोलें। हिन्दी या अंग्रेजी के शब्दों को विभिन्न बोलियों के शब्दों से मिलाकर दुर्पाच्य खिचड़ी नहीं बनायें। उच्चारण, वर्तनी, वाक्य-विन्यास, काल आदि का शुद्ध व्याहारिक ज्ञान इस स्तर पर हो। लेकिन मेरा यह तात्पर्य बिल्कुल नहीं है कि अंग्रेजी बोलने के लिए जीभ मरोड़ी जाये, मुंह बिचकाकर फैलाये जायें या कंधे उचकाये जायें। अंग्रेजी भाषा सीखने का उद्देश्य अंग्रेजियत आत्मसात करना नहीं है। आखिर अंग्रेजी हमारे घर में एक खिड़की मात्र की तरह होनी चाहिए और उसका मुख्य दरवाजा राष्ट्रभाषा हिन्दी हो।

(ट) अपना कार्यक्रम, शिक्षण, गृहकार्य, परीक्षण कालबद्ध और अनुशंसित तरीके से करें। अनुशासन का अर्थ सहज रूप से अपनी ओर दूसरे का ध्यान खींचना है।

अब्राहम लिंकन ने अपने बेटे के विद्यालय के प्रधानाध्यापक को जो सलाह दी थी, संक्षेप में वह यहां भी प्रासंगिक है:-

उसे सभी की सुनें, यह सिखाइये, मगर यह भी सिखाइये कि वह सच की छन्नी पर उसे छान ले और सिर्फ उसमें से अच्छा ही ग्रहण करे।

"यदि हो सके तो उसे किताबों के आश्चर्य बताइये......

- विद्यालय में उसे सिखाइये कि असफल होना ज्यादा सम्मानजनक है बजाय धोखाधड़ी करने के।
- उसे सज्जनों के साथ सज्जनता और दुर्जनों के साथ दुर्जनता करना सिखाइये।
- जब प्रत्येक व्यक्ति भीड़ के पीछे भाग रहा हो तो उसे उसका अनुसरण नहीं करना सिखाइये।
- उसे सभी की सुनें, यह सिखाइये, मगर यह भी सिखाइये कि वह सच की छन्नी पर उसे छान ले और सिर्फ उसमें से अच्छा ही ग्रहण करे।
- हो सके तो उसे दुख में भी हंसना सिखाइये........ सिखाइये कि आसुंओं में शर्म नहीं होती।

(2) समुदाय की भागीदारी- ऐसा देखा गया है कि शिक्षकों एवं शैक्षिक प्रशासकों में यह भ्रम है कि शिक्षा के प्रति माँ-बाप गंभीर नहीं हैं बल्कि वे अपने पाल्यों को विद्यालय भेजकर एक औपचारिक खाना पूरी करते हैं। दरअसल शिक्षक-अभिभावक संवाद यानि विद्यालय-समुदाय संवाद कायम होने से दोनों पक्षों को लाभ मिलता है। यदि विद्यालय के द्वारा किसी समुदाय के भावी नागरिक शिक्षित होकर बेहतर नागरिक बनते हैं तो दूसरी ओर बेहतर नागरिक अपने परिवेश के विद्यालय को बेहतर बनाने की कोशिश करते हैं और इस प्रकार विद्यालय का मान-सम्मान भी बढ़ता है। किन्तु दुर्भाग्यवश यह परस्पर संवाद अत्यंत कम एवं औपचारिक होने के कारण शिक्षा का सार्वजनीकरण नहीं हो सका। इसमें विद्यालय में बेहतर शिक्षा का अभाव होना भी एक कारण रहा जिसके फलस्वरूप या तो शुरू से बेहतर बच्चे विद्यालय में नामांकन ही नहीं कराये अथवा वे वहां से बीच में छोड़कर चले गये। बिहार जैसे राज्य में माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर लगभग दो तिहाई विद्यार्थी छीजन के शिकार होते हैं। लड़कियों में छीजन दर और ज्यादा है क्योंकि उनमें से कई अल्पायु में ही विवाहित होकर अपनी ससुराल चली जाती हैं तथा परिवार और समाज का रूख नकारात्मक रहता है। दरअसल पिछले दो दशकों में विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों द्वारा चलाये गये अभियानों (साक्षरता अभियान, बाल-श्रम-विरोध, महिला आंदोलन) संचार माध्यमों के प्रचार-प्रसार तथा सरकारी तंत्र की सुगबुगाहट के कारण शिक्षा के प्रति गरीब तबकों में भी ललक बढ़ी है। यही कारण है कि इंस्टीच्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, जयपुर द्वारा वर्ष 2000 में राजस्थान के दस जिलों में किये गये सर्वेक्षण में पाया गया कि 90 प्रतिशत मां-बाप बालकों को शिक्षा देने और 84 प्रतिशत माँ-बाप बालिकाओं को शिक्षा देने के पक्ष में है। इसके अलावा मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और बिहार में "प्रोब" अध्ययन टीम द्वारा वर्ष 1999 में किये गये शोध में पाया गया कि 98 प्रतिशत माँ-बाप बालकों तथा 89 प्रतिशत माँ-बाप बालिकाओं को शिक्षा देने के पक्ष में हैं। यह अलग बात है कि बालकों को शिक्षा दिलाने का मुख्य उद्देश्य उन्हें शहरों में उद्योग या सेवा क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करना होता है जबकि लड़कियों की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है पढ़े-लिखे एवं रोजगार प्राप्त लड़के से बेटी की शादी करने में सहूलियत होना। यद्यपि बिहार में

माध्यमिक विद्यालयों के लिए प्रबंधन समितियों औपचारिक संगठित हैं किन्तु अधिकांशतः सक्रिय नहीं हैं। इन प्रबंध समितियों की सक्रियता के लिए शिक्षकों, विशेषकर प्रधानाध्यापकों, को पहल करनी होगी। यह सही है कि निजी विद्यालयों को मेधा के आधार पर भर्ती करने की छूट रहती है जबकि दूसरी ओर सरकारी विद्यालयों में नामांकन कराने वाले सभी छात्रों-छात्राओं को भर्ती करने से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन पारस पत्थर का काम हर लोहे को सोना बनाना है, सिर्फ सुंदर, सुडौल एवं भारी लोहे को ही नहीं। इसलिए एक सार्थक शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह समान्य छात्र को उत्तम बनाने का हरसंभव प्रयास करे।

(3) रटना बनाम चिंतन-मनन- आदर्श शिक्षण पद्धति में विद्यार्थियों को रटन्त तोता बनाने के बजाय चिंतन कर समझने और विश्लेषण करने की शक्ति निहित हो। अच्छी सोच या चिंतन-मनन सभी विद्यार्थियों के द्वारा सीखा जा सकता है। विभिन्न शोधों से यह सिद्ध हो चुका है कि आई०क्यू०(इंटेलिजेंस कोशिएंट) मात्र आनुवंशिक नहीं हाता बल्कि परिवेश का भी प्रभाव पड़ता है। वैज्ञानिकों ने पाया है कि हर व्यक्ति का दिमाग प्रत्येक दिन उत्तम, मध्यम और निम्नतम वरणों से गुजरता है। यदि किसी छात्र का दिमाग उत्तम चरण (अल्फा स्टेज) से गुजर रहा है तो वह उस विषय को बहुत जल्दी सीखेगा। परंतु यदि किसी का दिमाग निम्नतम चरण (डेल्टास्टेज) से गुजर रहा है तो उसे कोई चीज समझने में ज्यादा समय लगेगा और अधिक कठिनाई होगी। यही कारण है कि कभी-कभी कुशाग्र बुद्धि के छात्र भी परीक्षा के दौरान निम्नतम चरण से गुजरने के कारण गलत उत्तर दे देते हैं। इसलिए अध्यापक को इस वैज्ञानिक सत्य को समझते हुये तथाकथित अल्पबुद्धिमान छात्रों के साथ नकारात्मक रूप से पेश नहीं आना चाहिये बल्कि भावनात्मकता (इमोशनल कोशिमेंट) को उतना ही महत्व देना चाहिए जितना आई० क्यू० को। दरअसल जीवन के यथार्थ को खंडों में नहीं देखा जा सकता। जैसा कि सी०ई० बीबे ने ठीक ही कहा है- "जीवन तो अपने आप में बेहद जटिल और उलझी हुई चीज है। उसके बारे में बच्चों को कुछ भी सिखा पाना टेढ़ी खीर ही है। जिस क्षण हम उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में काट देते हैं, तो संभव है कि बच्चे कुछ-कुछ समझने लगें। पर काटते समय यह संभावना भी रहती है कि हम उसे पूरी तरह मार डालें।"

(4) शिक्षण संसाधन/सामग्री- शिक्षण संसाधनों एवं सामग्रियों की महत्ता बहुत अधिक है क्योंकि ऐसा देखा गया है कि जो चीजें छात्र मौखिक रूप से समझाने पर नहीं समझ पाते हैं, उसे श्याम-पट्ट पर लिखकर समझाने, चित्र बनाने, नक्शा पर दिखाने, प्रयोग करने, अन्य चीजों से जोड़ने आदि पर सहज रूप से समझ जाते हैं। आजकल नये उपकरणों यथा दृश्य-श्रव्य माध्यमों के कारण बहुत सारी चीजें बेहतर ढंग से समझायी जा सकती हैं। यधपि यह सही है कि बिहार के कई विद्यालयों में पर्याप्त भवनों/कमरों तथा श्याम पट्टों का अभाव है, खल्ली, नक्शा, प्रयोगशाला की सामग्री आदि का अभाव है, फिर भी शैक्षिक यात्राओं के जरिये विभिन्न फसलों/पौधों/ऐतिहासिक स्थलों/वनों आदि तक पहुंच कर बच्चों को बेहतर ढंग से समझाया जा सकता है। बेकार पड़ी चीजों का इस्तेमाल किया जा सकता है जैसा- "एकलव्य" नामक संस्था ने सर्जनात्मक तरीके से किया है। आज के सूचना-प्रौद्योगिकी युग में सभी विद्यालयों में कम्प्यूटर की सुविधा होना नितान्त आवश्यक है। यद्यपि बिहार के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अभी तक कम्प्यूटर सुविधा उपलब्ध नहीं हो सकी है। फिर भी इस दिशा में प्रयास हो रहा है और निकट भविष्य में हम सफलीभूत हो सकते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि भविष्य, ज्ञान आधारित समाज का युग होगा इसलिए कोई भी सरकार, परिवार या समाज ज्ञान की महत्ता को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता। दरअसल कोरा वैज्ञानिक सिद्धांत के बजाय व्यावहारिक विज्ञान और पौधोगिकी पर ज्यादा जोर हो। मगर यह ध्यातब्य है कि सूचना-पौधोगिकी एक उपकरण मात्र है यानि एक साधन मात्र है न कि साध्य या लक्ष्य अर्थात् सूचना-प्रौद्योगिकी का उपयोग व्यक्ति और समाज की मदद के लिए किया जाना चिाहिये। यह भी बेहतर होगा कि अध्यापकों की ओर से प्रत्येक विषय का क्यैश्चन बैंक (प्रश्न निधि) तैयार किये जायें और उन सभी संभावित प्रश्नों के बारे में शिक्षक छात्रों को विधिवत् समझा दें जिससे विद्यार्थी सभी प्रश्नों को समझ कर मुकम्मल तैयारी करें न कि कुछ प्रश्नों को अंदाज़ लगाकर तैयार करें और अन्य को छोड़ दें क्योंकि ऐसा करने से यदि तैयार किये गये सवाल परीक्षा में नहीं पूछे गये तो छात्रों को मुँह की खानी पड़ेगी।

(5) विस्तृत एवं सतत् मूल्यांकन- बार-बार ऐसा दोहराया जाता है कि सिर्फ बाहरी परीक्षा क लिए विद्यार्थियों को तैयार नहीं किया जाना चाहिये बल्कि समय-समय पर मौखिक रूपों में आंतरिक परीक्षाएं होनी चाहिये जिससे वाह्य परीक्षा का भय दूर हो जाये। एन० सी० ई० आर० टी० ने विगत वर्ष अनुशंसा की थी कि वाह्य परीक्षा हटा देनी चाहिये किन्तु मैं इससे सहमत नहीं हूँ क्योंकि दरअसल वाह्य परीक्षा के बजाय वाह्य परीक्षा का डर विद्यार्थियों के मन से निकाल देना चाहिये। यह तभी हो सकता है जब छात्रों का समय-समय पर मौखिक एवं लिखित मूल्यांकन उनके विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा होता रहे। प्रत्येक दिन जो विषय पढ़ाये जायें उसके बारे में यह ज़रूर पूछा जाना चाहिये कि कितने छात्रों ने उसे समझ लिया है। यदि कुछ छात्रों की समझ में वह नहीं आया है तो उसे पुनः समझाना चाहिये, बेहतर ढंग से उसकी व्याख्या की जानी चाहिये। इसके अलावा लघु उत्तरीय तथा वस्तुनिष्ठ प्रश्न औचक टेस्ट में पूछे जाने चाहिये जो मुश्किल से कुछ मिनटों का होगा। लेकिन थोक में अनुत्तीर्ण करने का आतंक कायम नहीं हो क्योंकि इसका कुप्रभाव पड़ता है। जैसा कि बारबियाना स्कूल इटली के आठ बच्चों ने थोक भाव से अनुत्तीर्ण करने की मानसिक पीड़ा इन शब्दों में वक्त की है:-"आप फेल करके हमलोगों को सीधे खेतों में या कारखानों में ढकेल कर हमें बिल्कुल भूल जाती हैं...... किसी को फेल करना ऐसा ही है जैसे अंधेरे में तीर मारना। तीर चाहे खरगोश को लगे या किसी बच्चे को, यह तो हमें समय ही बतायेगा।"

("अध्यापक के नाम पत्र")

(6) आदर्श आचरण- आदर्श शिक्षक का आचरण भी आदर्श होना चाहिये, यानि जिन आदर्शों एवं मानवीय गुणों के बारे में वे कक्षाओं में पढ़ाते हों उन्हें अपने जीवन में

मनसा, वाचा, कर्मणा उतारते भी हों। मुख्य रूप से निम्नलिखित गुण प्रत्येक आदर्श शिक्षक के आचरण में होना चाहिये:-

(1) समदर्शी होना अर्थात् शिक्षक द्वारा किसी व्यक्ति या समूह से जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा, वंश, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाना चाहिये।

(2) समय का पाबंद होना, क्योंकि समय अमूल्य है।

(3) ओछी या अश्लील हरकतें नहीं करना तथा ऐसी हरकतें करने वालों से दूर रहना।

(4) छात्रों और अभिभावकों से सहज संवाद कायम करने की ललक हो।

(5) वह लैंगिक समानता का पक्षधर हो अर्थात् महिलाओं/ छात्राओं के साथ समान सकारात्मक व्यवहार करें। विद्यालय के अंदर या बाहर महिलाओं के शोषण सम्बन्धी कार्य नहीं करें।

(6) प्रगतिशील मूल्यों एवं विचारों का वाहक हो अर्थात् उसके अंदर दकियानूसी परंपराओं एवं रीतिरिवाजों को खारिज़ करने का साहस हो एवं जनहित में प्रगतिशील परंपराओं को स्थापित करने की ताकत हो। सूदखोरी, बालश्रम, बाल-विवाह, छुआछूत, सांप्रदायिकता आदि के विरोध करने का साहस हो।

(7) उसमें पुरस्कार एवं दंड का संतुलन हो अर्थात् सही को सही और गलत को गलत कहने का साहस हो।

(8) पर्यावरण और परिस्थितिकी के टिकाऊपन एवं संरक्षण की पहल करता हो।

(9) स्वयं गहन रूप से स्वाध्याय करता हो।

((7)) प्रभावी संप्रेषण- शिक्षक को चाहिये कि वह पठन-पाठन को आनंदप्रद बनाने हेतु प्रभावी संप्रेषण प्रक्रिया अपनाये अर्थात् उसकी अध्यापन शैली सरल, सरस और सहज हो। नीरस पाठ को सरल बनाने के लिए वह गीतों, कविताओं, पहेलियों, लोकगाथाओं, ऐतिहासिक चरित्रों एवं स्थलों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सहारा ले। उसकी पढ़ाने की शैली उस कक्षा एवं उम्र के अनुकूल संवाद करने में सक्षम हो। शिक्षक कोई चीज़ समझाने के लिए परानुभूति का सहारा ले अर्थात् विद्यार्थियों की जगह पर अपने को रखकर महसूस करे। दूसरे सम्प्रेषण तभी प्रभावी होता है जब वही कही गई चीजें श्रोता वैसा ही समझे जैसा कहने वाले का उद्देश्य था। इसलिए दूसरे पक्ष से बरावर फीडबैक लेना चाहिए। ऐसा मौखिक और, लिखित दोनों रूपों को एक दूसरे के पूरक मानकर करना चाहिए।

(8) गतिविधि आधारित सीखने की पद्धति-प्रत्येक अध्यापक का यह प्रयास हो कि वह विद्यार्थियों की उम्र और शैक्षिक स्तर के अनुरूप क्रिया या गतिविधि आधारित शिक्षण पद्धति अपनाये अर्थात् बच्चों को करके सीखने का अवसर दे। इसके लिए निम्नलिखित अधिगम प्रक्रियाएं सार्थक सिद्ध होंगी-

(क) अवलोकन- चीजों को गहन ढंग से देखकर, छूकर, सुनकर एवं समझकर।

(ख) विभेदीकरण- एक चीज को दूसरी चीज से भिन्न करके देखने की प्रक्रिया अर्थात् अनुलोम के बरवस विलोम चीजों का भेद करना।

(ग) श्रेणीकरण- समान चीज़ों को एक श्रेणी में और विभिन्न चीज़ों को विभिन्न श्रेणी में रखना।

(घ) मापन- किसी चीज़ को एक मापदंड से मापना।

(ड) परीक्षण- जाँच-परख करना।

(च) तुलना।

अध्यापक को चाहिए कि वह स्थानीय परिवेश से उन मूल या आधारभूत या बीज शब्दों को चुनें जो उनकी दैनिक समस्याओं, क्रियाओं के अंग हैं। जैसे उत्तर बिहार में बाढ, केन्द्रीय बिहार में हिंसा, झारखंड में कोयला, खान, जंगल आदि।

(9) शिक्षणेत्तर गतिविधियां- शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ संज्ञानात्मक विकास अर्थात् पढ़ना-लिखना और हिसाब-किताब करना, अध्ययन-अध्यापन करना, सिद्धांत और व्यवहार में परखना ही नहीं है बल्कि पूर्ण व्यक्तित्व विकसित करने हेतु असंज्ञानात्मक आयामों को भी विकसित करना है। इसके तहत शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहना, अंत:करण की संतुष्टि तथा सौंदर्यानुभूति प्राप्त करना शामिल हैं। प्रथम शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए पी० टी०, योगाभ्यास, व्यायाम, एकांत साधना, स्काउट एवं गाइड, एन०सी०सी० आदि गतिविधियां शामिल हैं। सौंदर्यानुभूति के लिए साहित्य, कला, संगीत, चित्रकला, कवि सम्मेलन, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाना चाहिये। अंत:करण की संतुष्टि के लिए मानव मूल्यों को सिद्धांत और व्यवहार में आत्मसात् करने की प्रेरणा दी जानी चाहिये। यहाँ शिक्षकों के आचरण सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं। वे मानव मूल्य हमारे संविधान में वर्णित समता, स्वंत्रता बंधुत्व, पंथ- निरपेक्षता, समाजवाद, नागरिकों के कर्त्तव्य आदि के रूप में वर्णित हैं।

(10) शारीरिक-मानसिक रूप से चुनौती वाले विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान-ऐसा देखा गया है कि शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग बच्चों को दूसरे बच्चे चिढ़ाते हैं और जाने-अनजाने हमारी दैनिक क्रियाओं में भी विकलांग बच्चों के विरूद्ध हम बोलते रहते हैं। उदाहरणार्थ-"अंधों में काना सरदार", "लंगड़ भचंगड़ के तीन मेहरी, एक टूटे, एक पीसे, एक बच्ची सड़किया पे भांग रगड़ी", "आंख का अंधा नाम नयनसुखा" इसलिए इन बच्चों के अंदर यह प्रेरणा एवं प्रोत्साहन कूट-कूट कर भरा जाना चाहिये कि वे दूसरे बच्चे से किसी मायने में कम नहीं है। ऐसे विद्यार्थियों को कक्षा में मॉनिटर या प्रीफेक्ट या समूह नेता आदि बनाकर प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। आखिर हेलेन केलर जन्मान्ध एवं गुंगी थी किन्तु उनकी असाधारण उपलब्धि सराहनीय हैं।

(11) परिवर्तन का भी प्रगति एवं मुक्ति के लिए शिक्षा- सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षा परिवर्तन का एक बड़ा साधन है जहाँ समय ज़रूर लगता है किन्तु शिक्षा सारे ज़रूरी अभिकर्त्ताओं को परिवर्तन के लिए तैयार करती है। पचास वर्ष पूर्व छुआछूत, सती-प्रथा, विधवा-विवाह विरोध, बाल-विवाह, अन्धविश्वास आदि के प्रति हमारी जो दकियानूसी सोच थी, वह शिक्षा के कारण अब काफी कुछ बदल गई है। हालांकि शिक्षा के साथ-साथ सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा चलाये गये अभियानों और आन्दोलनों की भी महती भूमिका रही है।

शेषांश पृष्ठ 46 पर........

शिक्षा का 'अंग्रेजीकरण' खतरनाक कदम

✍ डॉ० राधाकृष्ण सिंह

भूमंडलीकरण और बाजारवाद की आंधी में भारत भी शामिल हो गया है। इससे बिहार भी अछूता नहीं रहा। रहेगा भी कैसे। हाल में बिहार सरकार ने दो महत्वपूर्ण निर्णय लिये हैं जिसमें कहा गया है कि तीसरी कक्षा से अंग्रेजी की अनिवार्य पढ़ाई होगी तथा मैट्रिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए अंग्रेजी में उत्तीर्ण होना अनिवार्य होगा। दोनों फैसले 2002 से प्रभावी होंगे। अंग्रेजी को इतना प्रश्रय मिलना निश्चित रूप से विस्मयकारी कदम है। स्वाभाविक है कि मातृभाषा भक्त लोग इसका विरोध कर रहे हैं। अंग्रेजी भाषा का प्रभाव जहर के समान धीरे-धीरे फैल रहा है। कभी शासकों, नौकरशाहों और न्यायविदों की भाषा के रूप में तो कभी रोजगार और ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन के आवश्यक कारक के रूप में।

भाषा-नीति अनबूझ पहेली बनाकर रख दी गयी है जिसके कारण अपनी मातृभूमि में हिन्दी भाषा की निरंतर उपेक्षा हो रही है। हिंदी भाषा-भाषी आबादी बेगानी बनकर रह गयी है। अब हिंदी पट्टी प्रदेशों में बच्चों पर अंग्रेजी का बोझ थोपा जाना हमें गले नहीं उतर रहा है। शिक्षा के निजीकरण, आर्थिक उदारीकरण और भूमंडलीकरण की वजह से अंग्रेजी क्षेत्रीय भाषाओं को उदरस्त करने का प्रयास कर रही है। जन-संचार माध्यमों पर भी अंग्रेजी का सिक्का जमता जा रहा है। अंग्रेजी, अंग्रेजियत और अमेरिका का भूत हम पर सवार हो गया है।

हमने चीन, रूस, जापान, जर्मनी और फ्रांस जैसे समुन्नत राष्ट्रों से सबक नहीं सीखा है जिसने अपनी-अपनी मातृभाषा में शिक्षा, रोजगार और न्याय उपलब्ध कराने का उदाहरण पेश किया। हिंदी को उपेक्षित करके क्या भारत को स्वाभिमानी और स्वाबंलवी बनाया जा सकता है?

बिहार सरकार ने तीसरी कक्षा से अंग्रेजी को अनिवार्य करने का निर्णय बगैर किसी शैक्षिक तैयारी किये लिया है। तीसरी कक्षा से लेकर पांचवी कक्षाओं तक उसे अंग्रेजी पढ़ाने के लिए पाठ्य पुस्तक एवं शिक्षक उपलब्ध रखना पड़ेगा। मगर उसकी तैयारी नहीं है। इसका दुष्परिणाम यह होगा कि प्राइवेट प्रकाशन की ऊंची कीमतवाली पुस्तकें सरकारी स्कूलों में बिकेंगी। अंग्रेजी शिक्षक नहीं रहने के कारण सरकारी स्कूलों से छात्रों का प्राइवेट स्कूलों में पलायन होगा। अंग्रेजी कोचिंग का धंधा पनपेगा। अन्य विषयों के साथ-साथ छात्रों पर अंग्रेजी विषय का एक और बोझ बढ़ जायेगा। यह बात समझ में नहीं-आती है कि सरकार किस एजेंसी के दबाव में अंग्रेजी को अनिवार्य करने पर उतारू हो गयी।

30 नवम्बर, 2001 को हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड ने भी शैक्षिक सत्र 2002-2003 से मिडल एवं मैट्रिक में अंग्रेजी को अनिवार्य विषय बनाने का निर्णय लिया है। बोर्ड ने परीक्षाओं के अनिवार्य विषयों की सूची में हिंदी के साथ-साथ विज्ञान, गणित, अंग्रेजी और सामाजिक अध्ययन को भी जोड़ दिया है। इनमें से चार विषयों में उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

कहना न होगा कि दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली के कारण आज भारतीय समाज में 'अंग्रेजी' का महत्व बढ़ता जा रहा है। अंग्रेजी आज प्रतिष्ठा का मानदंड बन गयी है। अंग्रेजी स्कूलों का जाल फैल रहा है। स्कूलों, दुकानों, व्यावसायिक केंद्रों और बच्चों के नामाकरणों में भी अंग्रेजी का प्रभाव दिखलायी पड़ रहा है।

भारतीय संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक भाषा संबंधी व्यवस्था है। अनुच्छेद 343 (अ) में कहा गया है कि देवनागरी लिपि में हिंदी भारतीय संघ की सरकारी कामकाज (ऑफिशियल) भाषा होगी। लेकिन एक गंभीर साजिश के तहत अनुच्छेद 343 (ब) में कहा गया कि- 'लेकिन अभी आनेवाले 15 वर्षों में केंद्र सरकार के सारे मुख्य कामकाज अंग्रेजी में वैसे ही होंगे, जैसे इसके पहले होते आये हैं।' यह 'पंद्रह वर्ष' अभी भी जारी है। गरज यह कि संविधान लागू होने के साथ ही हिंदी को अंग्रेजी की 'चेरी' बनाकर रख दिया गया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अनुसार - " हिंदुस्तान को अगर सचमुच एक स्वावलंबी और स्वाभिमानी राष्ट्र बनाना हो, तो चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा तो हिंदी ही बन सकती है। क्योंकि जो स्थान हिंदी को प्राप्त है, वह किसी दूसरी भाषा को नहीं मिल सकती है।" स्वतंत्रता आंदोलन के रूप में स्वीकार किया गया। सन् 1942 में कांग्रेस का बेलगांव सम्मेलन महात्मा गांधी के सभापतित्व में संपन्न हुआ। इसमें कांग्रेस का कामकाज 'हिंदी' में करने का निर्णय लिया गया। कांग्रेस के इस निर्णय ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता प्रदान कर दी।

कहना न होगा कि दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली के कारण आज भारतीय समाज में 'अंग्रेजी' का महत्व बढ़ता जा रहा है। अंग्रेजी

आज प्रतिष्ठा का मानदंड बन गयी है। अंग्रेजी स्कूलों का जाल फैल रहा है। स्कूलों, दुकानों, व्यावसायिक केंद्रों और बच्चों के नामाकरणों में भी अंग्रेजी का प्रभाव दिखलायी पड़ रहा है।

अंग्रेजी के प्रभाव को देखते हुए बिहार सरकार ने तीसरी कक्षा से अनिवार्य रूप से अंग्रेजी में उत्तीर्णता को अनिवार्य बना दिया गया है। ये दोनों निर्णय वर्ष 2002 से लागू किये जायेंगे। इसके साथ ही वर्षों से जारी 'कर्पूरी डिवीजन' यानी 'विदाउट इंग्लिस पास' के प्रावधान पर विराम लग जायेगा। सरकार के इस कदम पर बौद्धिक वर्गों के बीच मतभेद उत्पन्न हो गया है।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) के निदेशक जे०एस० राजपूत की अध्यक्षता में विद्वजनों की एक समिति ने गत वर्ष पहली जनवरी, 2000 को 'नेशनल कैरिक्यूलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन' पर एक आधारपत्र तैयार किया है। इस आधारपत्र को केंद्र सरकार को सौंपा जा चुका है। इसमें 'शिक्षा माध्यम' यानी 'भाषा' पर विस्तार से परामर्श दिया गया है। जिसमें तीसरी कक्षा से 'अंग्रेजी' की पढ़ाई प्रारंभ करने पर बल नहीं दिया गया है। पूर्व से चली आ रही 'त्रि-भाषा-सूत्र' को यथावत रखने पर भी जोर दिया गया है। कहना न होगा कि 'त्रिभाषासूत्र' में मातृभाषा, भारतीय भाषा के अलावे अंग्रेजी को अनिवार्यरूप से शिक्षा का माध्यम भाषा बनाया गया है। इस फार्मूला को राष्ट्रीय विकास, सामाजिक-सांस्कृतिक एकता और अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव के लिए आवश्यक माना गया है।

शिक्षा किस भाषा में दी जाये, इसको लेकर सदैव विवाद कायम रहा है। भाषा पर राजनीति सवार होकर जनता को नियंत्रित करने का प्रयास करती है। यह सही है कि शासक की भाषा और शासित की भाषा में फर्क रहा है। वैदिक शिक्षा में संस्कृत जैसी अबोध-गम्य भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया गया। इस दौरान वेदों, धार्मिक ग्रंथों और गुरु वाक्यों को प्रधानता दी गयी। जबकि लोक या जनभाषा की उपेक्षा की गयी। बौद्ध-शिक्षा में जनसाधारण की भाषा-'पाली' को महत्व दिया गया। इसे शिक्षा का माध्यम भाषा बनाया गया। कहना न होगा कि मुस्लिम शिक्षा में अरबी- फारसी भाषाओं के पठन-पाठन पर अधिक जोर दिया गया। इन भाषाओं के माध्यम से धार्मिकता का परचम फहराया गया।

अंग्रेजी शासन के दौरान 'मेकाले' की शिक्षा नीति का बीजारोपण किया गया। इसमें अंग्रेजी को शिक्षा का अनिवार्य माध्यम बनाया गया। भारतीय भाषाओं की आलोचना की गयी। कानून की जानकारी के लिए संस्कृत, अरबी और फारसी के शिक्षालयों पर होने वाले खर्चों पर रोक लगायी गयी तथा कानूनों को अंग्रेजी में लिखने की सलाह दी गयी। इस निति के तहत भारतीय भाषाओं को अपमानित करने का प्रयास किया गया। दरअसल, मैकाले को रंग और रक्त में भारतीय, किंतु अभिरूचि और बौद्धिकता में अंग्रेजी पसंद था। डॉ० राममनोहर लोहिया के अनुसार, ऐसे 'अंग्रेजीदां' से देश को काफी नुकसान हुआ।

शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में अनेक प्रयोग होते रहे हैं। इस विषय पर अनेक समितियों और आयोगों के गठन हो चुके हैं। 1854 में 'वुड घोषणा-पत्र' में भारतीय भाषाओं के महत्व को तो स्वीकार किया गया, पर अंग्रेजी के महत्व को सर्वोपरि रखा गया। माध्यमिक पाठयक्रमों में शिक्षा के माध्यम के रूप में भारतीय भाषाओं को स्वीकार किया गया। यह भी कहा गया कि यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान को देशी भाषाओं में अनुवाद करने के लिए पुरस्कार की व्यवस्था की जाये। 1882 में इंटर कमीशन ने प्राथमिक शिक्षा में भारतीय भाषाओं को माध्यम भाषा के रूप में महत्व दिया, पर अंग्रेजी के ज्ञान को भी अनिवार्य बताया।

स्वतंत्रता प्राप्त हाने के बाद शिक्षा के माध्यम को लेकर भारतीय चिंतकों, शिक्षाविद्‌ों और राजनेताओं के विचार सामने आये। भारतीय मनीषियों ने मातृभाषा में ज्ञानार्जन को समाजोपयोगी बतलाया। कविगुरु रवींद्र नाथ टैगोर ने अंग्रेजी भाषा का विरोध करते हुए कहा कि- 'अंग्रेजी भाषा घूंघट में छिपी विद्या, स्वभाव से ही हमारी सहवर्तनी बनकर नहीं चल सकती है।' आजादी के बाद शिक्षा पर सर्वपल्ली डॉ० राधकृष्णन की अध्यक्षता में गठित विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) में साफ तौर से कहा गया कि उच्च शिक्षा के माध्यम के लिए किसी प्रादेशिक भाषा का प्रयोग किया जाये। माध्यमिक शिक्षा के लिए गठित मुदालियर कमीशन (1952-53) ने भी शिक्षा का माध्यम मातृभाषा अथवा प्रादेशिक भाषा बताया। पर यह भी परामर्श दिया कि मिड्ल स्कूल के अंतिम भाग में अंग्रेजी और हिंदी भी पढ़ायी जाये। माध्यमिक कक्षाओं में कम-से-कम दो भाषाएं अवश्य पढ़ायी जायें। मुदालियर कमीशन के तर्ज पर ही 'कोठरी कमीशन' (1964-66) ने मातृभाषा को सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम बनाने का परामर्श दिया। उसने त्रिभाषा फार्मूला को भी विचारार्थ रखा जिसके अंतर्गत माध्यमिक कक्षाओं में मातृभाषा अथवा प्रादेशिक भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर बल दिया गया। इसके

स्वतंत्रता प्राप्त हाने के बाद शिक्षा के माध्यम को लेकर भारतीय चिंतकों, शिक्षाविद्‌ों और राजनेताओं के विचार सामने आये। भारतीय मनीषियों ने मातृभाषा में ज्ञानार्जन को समाजोपयोगी बतलाया। कविगुरु रवींद्र नाथ टैगोर ने अंग्रेजी भाषा का विरोध करते हुए कहा कि- 'अंग्रेजी भाषा घूंघट में छिपी विद्या, स्वभाव से ही हमारी सहवर्तनी बनकर नहीं चल सकती है।'

अतिरिक्त अंग्रेजी को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ने पर बल दिया गया। साथ ही अहिंदी भाषी क्षेत्रों के लिए हिंदी तथा हिंदी भाषी क्षेत्रों के लिए अन्य भारतीय भाषा (दक्षिण भारतीय भाषा) पढ़ना अनिवार्य माना गया। इस फार्मूला को सभी राज्यों में अमलीजामा पहनाया गया।

जब्बार हुसेन की अध्यक्षता में गठित बिहार माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी त्रिभाषा फार्मूला को सख्ती से लागू करने का सुझाव दिया था। यहां उल्लेखनीय है कि 1937 में राष्ट्रपिता माहात्मा गाँधी ने वर्धा शिक्षा सम्मेलन कराया था जिसमें शिक्षा के माध्यम को मातृभाषा रखने पर बल दिया गया था। बुनियादी शिक्षा मातृभाषा में दी जाती थी। 1956 में बी० जी० खेर की अध्यक्षता में भाषा आयोग का गठन किया गया था। इस आयोग ने शिक्षा का माध्यम राष्ट्रभाषा 'हिंदी' बनाने का सुझाव दिया गया था। आयोग ने यह भी परामर्श दिया कि सभी विश्वविद्यालय अपनी परीक्षाएं 'हिंदी' में लें। यदि आवश्यक हो तो अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी इन परीक्षाओं का माध्यम बनाया जा सकता है।

भारतीय संविधान के अनुसार- 'अनुच्छेद 351 कहता है कि केंद्र सरकार और राज्य सरकारों का देश की समन्वय-संस्कृति के विकास के लिए हिंदी का विकास करना अनिवार्य कर्त्तव्य है। बिहार सरकार के राजभाषा अधिनियम 1950 के मुताबिक हिंदी को प्रयोग में लाकर अंग्रेजी मुक्त राज्य बनाने के लिए बाध्य है।

महात्मा गांधी ने कहा था- 'मां के दूध के साथ जो संस्कार मिलते हैं और जो मीठे शब्द सुनाई देते हैं, उनके और पाठशाला के बीच जो मेल होना चाहिए वह विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा लेने से टूट जाता है। जिसे तोड़ने का हेतु पवित्र हो तो भी वे जनता के दुश्मन हैं।' यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि एनसीईआरटी के निदेशक जे०एन०राजपूत ने अंग्रेजी को विश्वभाषा मानते हुए इसे तीसरी कक्षा से पढ़ाने का परामर्श दिया है। उनका कहना है कि भूमंडलीकरण के दौर में अंग्रेजी की महत्ता को खारिज नहीं किया जा सकता है। 'संपर्क भाषा' के रूप में अंग्रेजी का ही प्रयोग किया जाता है। राजपूत ने पांचवी से दसवीं कक्षा तक त्रिभाषा फार्मूला लागू करने पर बल दिया है। प्रकारांतर से उन्होंने हिंदी के महत्व को खारिज कर मैकाले शिक्षा नीति की ओर कदम बढ़ाया है। उधर, मानव संसाधन मंत्रालय ने संस्कृत भाषा के अभ्युत्थान के लिए ज्योतिष विद्या को पाठयक्रम का अंग बनाने का प्रयास किया है। सत्ता-प्रतिष्ठान ने एक तरह से हिंदी से अपना मुह मोड़ लिया है। जबकि एक अरब की आबादी वाले भारत वर्ष में 60 करोड़ लोग हिंदी बोलनेवाले हैं। मुश्किल से दो फीसदी आबादी अंग्रेजी बोलते और समझते हैं। स्टार टीवी चैनेल के लोकप्रिय प्रोग्राम 'कौन बनेगा करोड़पति' के माध्यम से सुपर स्टार अमिताभ बच्चन ने यह प्रमाणित कर दिया है कि हिंदी बोलने और समझने वाले लोग भारत क सभी हिस्सों और प्रांतों में रहते हैं। राष्ट्रव्यापी भाषा बनने की क्षमता हिंदी में सर्वाधिक है। राष्ट्रीय मेल और राष्ट्रीय एकता के लिए सारे देश में हिंदी और देवनागरी लिपि का प्रचार आवश्यक है। उत्तर और दक्षिण भारत का सेतु हिंदी ही हो सकती है। हिंदी के बिना जनतंत्र की बात केवल धोखा मात्र है। हिंदी का आंदोलन भारतीयता का आंदोलन है।

भारतीय संविधान के अनुसार- 'अनुच्छेद 351 कहता है कि केंद्र सरकार और राज्य सरकारों का देश की समन्वय-संस्कृति के विकास के लिए हिंदी का विकास करना अनिवार्य कर्त्तव्य है। बिहार सरकार के राजभाषा अधिनियम 1950 के मुताबिक हिंदी को प्रयोग में लाकर अंग्रेजी मुक्त राज्य बनाने के लिए बाध्य है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 350(ए) और (बी) के अनुसार-मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षण संस्था खोलने के लिए राष्ट्रपति का आदेश लेना अनिवार्य है। अनुच्छेद 30 में भाषाई एवं धार्मिक अल्पसंख्यकों को अपनी भाषा में प्राथमिक शिक्षण संस्था खोलने का प्रावधान है। अंग्रेजी को धार्मिक और भाषाई दृष्टि से अल्पसंख्यकों की भाषा का दर्जा नहीं प्राप्त है। ऐसी परिस्थिति में अंग्रेजी विद्यालय खोला जाना संविधान का सीधा उल्लंघन है। यह दंडनीय अपराध है।

अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी शिक्षा का सबसे दुर्भाग्यपूर्ण पहलू यह है कि यह देश की प्रतिभाओं को देश से विमुख कर रही है। यह धीमे जहर का काम कर रही है। सामाजिक एकता को तोड़ने में यह सक्रिय है। यह देश में अंदरूनी औपनिवेशिकता का निर्माण कर रही है। अंग्रेजी शिक्षा के कारण हमारे वैज्ञानिकों या तकनीकी विशेषज्ञों का बड़े पैमाने पर अमेरिका और ब्रिटेन में पलायन हुआ है। उन्हें तैयार भारतीय विशेषज्ञ कौड़ियों के मोल मिल जाते हैं। प्रत्यक्षत: यह औपनिवेशि शोषण है। इसलिए भारतीय राजनेताओं को हिंदी भाषा के बारे में स्पष्ट राय बनाने का प्रयास करना चाहिए। जिस प्रकार के उदार विचार कविगुरू रवीन्द्र नाथ टैगोर, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, केशवचंद्र सेन, बंकिम चंद्र चटर्जी, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, शिव प्रसाद गुप्त, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, पुरुषोत्तम दास टंडन, डॉ० राम मनोहर लोहिया, डॉ० जयंत विष्णु नोर्लेकर आदि देशभक्तों के थे। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने आपातकाल में हिंदी के बारे में प्रासंगिक कविता लिखी है-

'बनने चली विश्वभाषा जो, अपने घर में दासी।
सिंहासन पर अंग्रेजी को रखकर दुनियां हांसी।।
रखकर दुनियां हांसी, हिंदी बोले है चपरासी।
अफसर सारे अंग्रेजी पथ, अवधी हो मद्रासी।।
कह कैदी कविराय, विश्व की चिंता छोड़ो।
पहले अपने घर में अंग्रेजी के गढ़ तोड़ो।।

संपर्क: 50ए/1605, ऑफ कांटी फैक्टरी रोड,
महात्मा गांधी नगर, पटना-800020

संभावनाओं से भरा संस्थान

इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ हेल्थ एजुकेशन एण्ड रिसर्च, पटना में

प्रशिक्षण ही प्रशिक्षण

प्रस्तुतिः डॉ० राजेश कुमार

विकलांगों के उपचार और उनके पुनर्वास के क्षेत्रों में काम करने वाली विशेषज्ञताओं में नयी तकनोलॉजी के विकास से इस क्षेत्र में युगान्तरकारी और सकारात्मक परिवर्तन आये हैं। इससे एक ओर जहां विकलांगता निवारण तथा विकलांगों के उपचार में सफलता का दर बहुत तेजी से बढ़ा है, वहीं इस क्षेत्र में अपना कैरियर बनाने वाले पुनर्वास कर्मियों का भी विशिष्टता के साथ देश-विदेश में रोजगार के बड़े अवसर प्राप्त हो रहे हैं। नयी तकनोलॉजी के विकास के साथ इस क्षेत्र में प्रशिक्षण के पाठ्यक्रमों जैसे फिजियोथेरापी, अकुपेशनल थेरापी, ऑडियोलॉजी एण्ड स्पीच थेरापी, प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थेटिक इंजीनियरिंग, स्पेशल एजुकेटर आदि में कोर्स का भी विस्तार हुआ है और उन्हें परिष्कृत कर अन्य चिकित्सकों की समकक्षता के काफी करीब ले आया गया हैं। इन पाठ्यक्रमों में डिग्री स्तर की शिक्षा में विशेषज्ञों को इतना योग्य बना दिया जाता है कि वे अपने-अपने कार्य में स्वतंत्र रूप से रोगियों की पहचान, और उपचार करने में दक्ष हो जाते हैं। फिलवक्त पूरे देश में विकलांगों के पुनर्वास से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों में डिग्री स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने वाले संस्थान कुछ एक ही हैं। उन्ही में से एक संस्थान, इंडियन इंस्टीच्युट ऑफ हेल्थ इजुकेशन एण्ड रिसर्च, हेल्थ इंस्टीच्युट रोड, बेऊर (सेंट्रल जेल के निकट),पटना है, जहां फिजियोथेरापी, अकुपेशनल थेरापी, ऑडियोलॉजी एण्ड स्पीच थेरापी, प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थेटिक इंजीनियरिंग तथा मेटल रिटार्डेशन में बैचलर डिग्री के पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। यह संस्थान एक पंजीकृत गैर सरकारी संगठन मानव मानवी समाज कल्याण केन्द्र, पटना द्वारा बिहार चिकित्सा शिक्षा संस्थान (विनियमन एवं नियंत्रण) अधिनियम- 1981 के प्रावधानों के तहत राज्य सरकार की पूर्वानुमति प्राप्त कर चलाया जा रहा है। यह बिहार का पहला और एक मात्र संस्थान है, जिसे इन प्रोफेशन्स में डिग्री स्तर का पाठ्यक्रम चलाने तथा भारतीय पुनर्वास परिषद, भारत सरकार समेत मगध विश्वविद्यालय, बोध गया से मान्यता प्राप्त होने का गौरव मिला है।

अनिल सुलभ
संस्थान के संस्थापक

पत्रकारिता से अपना कैरियर शुरू करनेवाले और इस समय राज्य के चर्चित समाज सेवी श्री अनिल सुलभ इस संस्थान के अध्यक्ष सह निदेशक-प्रमुख हैं, जिनके निष्ठापूर्ण सतत प्रयास से यह संस्थान पिछले एक दशक में न केवल सैकड़ों छात्रों को एक बेहतरीन कैरियर ही दिया है, बल्कि हजारों विकलांगों को विशेषज्ञ चिकित्सा एवं पुनर्वास सुविधाएं भी निःशुल्क उपलब्ध कराया है। इस संस्थान की शुरूआत 1990 में फिजियोथेरापी, प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थेटिक, मेडिकल लैब टेक्नोलॉजी, एक्स-रे टेक्नोलॉजी तथा हॉस्पीटल मैनेजमेंट में डिप्लोमा की पढ़ाई से हुई थी। शैक्षणिक सत्र 1997-98 से इसमें उपरोक्त डिग्री पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। मगध विश्वविद्यालय डिग्री पाठ्यक्रमों की परीक्षा ले रही है।

डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के लिये संस्थान की एक अलग परीक्षा समिति है, जिसे राज्य सरकार का अनुमोदन प्राप्त है। इस समिति में, बिहार के स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के अपर निदेशक पदेन "गवर्नमेंट नोमिनी" सदस्य होते हैं, जो संस्थान से प्रदान किये जाने वाले मूल प्रमाण-पत्रों पर हस्ताक्षर भी करते हैं। संस्थान शैक्षिणिक सत्र 2001-2002 में नामांकन हेतु योग्य छात्र-छात्राओं से प्रेसक्राइब्ड फॉर्म में आवेदन पत्र आमंत्रित किये गये हैं। आइये संक्षिप्त में इन डिग्री पाठ्यक्रमों के बारे में कुछ जाने:-

बैचलर ऑफ पिजियोथेरापी:- यह पाठ्यक्रम ऐसे ग्रेजुयेट फिजियोथेरापिस्टस तैयार करने के उद्देश्य से बनाया गया है, जो स्वतंत्र रूप से शारीरिक एवं मानसिक विकलांगता के मरीजों की जांच-पड़ताल एवं उपचार कर सके। यह बताने की जरूरत नहीं है कि इस विशेष चिकित्सा पद्धति के माध्यम से, पोलियों और लकवा हड्डी, जोड़, नस एवं मांसपेशियों से संबंधित सभी प्रकार के दर्द एवं विकलांगता का इलाज किया जाता है, जो किसी भी अन्य प्रकार से संभव नहीं है। इस पद्धति में भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यायामों तथा इलेक्ट्रीकल एवं कंप्युटराइज्ड मशीनों एवं उपकरणों की मदद से उपचार किया जाता है, लेजर थेरापी, माइक्रोवेव डायथर्मी, शॉर्ट वेव डायथर्मी, अल्ट्रासाउन्ड, ऑटोट्रैक्शन, मायोग्राफर, इलेक्ट्रीक स्टूमलेशन, हाइड्रोथेरापी, इंटर फेरेशियल करेंट थेरापी आदि शामिल हैं।

एक ग्रेजुएट पिजियोथेरापिस्ट की देश-विदेश में बड़ी मांग है। अमेरिका और खाड़ी के देशों के अलावा यूरोप के देशों में एक फिजियोथेरापिस्ट की मासिक आमदनी भारतीय मुद्रा में एक से डेढ लाख रुपये तक की है। विभिन्न अस्पतालों, विकलांग पुनर्वास केन्द्रों, नर्सिंग होम, विकलांग विद्यालयों सहित चिकित्सा महाविद्यालयों में भी नौकरी के अवसर होते हैं। इनके अतिरिक्त निजी प्रैक्टीश के माध्यम से भी पर्याप्त उपार्जन किया जा सकता है।

साढ़े चार वर्षीय (जिसमें 6 माह का इंटर्नशिप शामिल है) इस पाठ्यक्रम में नामांकन की न्यूनतम योग्यता- इंटरमीडियेट विज्ञान है।

बैचलरऑफ अकुपेशनलथेरापी:- यह पाठ्यक्रम भी बैचलर ऑफ फिजियोथेरापी कोर्स से बहुत हदतक मेल खाता है। किन्तु इस पद्धति में इलेक्ट्रीकल उपकरणों के इस्तेमाल कम होते हैं। इसके द्वारा ऐसे विकलांगों को पुनर्वासित करने का कार्य किया जाता है, जो फिजियोथेरापी की सीमा से आगे बढ़ चुके होते हैं और उनमें स्थायी विकलांगता आ चुकी होती है। एक अकुपेशनल थेरापिस्ट, स्थायी रूप से विकलांग हो चुके मरीजों को न केवल स्वतंत्र रूप से अपना सभी आवश्यक कार्य संपन्न करने योग्य बनाता है, बल्कि उसके योग्य रोजगार परक अकुपेशन (प्रशिक्षण) अपनाने की सलाह भी देता है। वस्तुतः ऐसे विकलांगों के लिये एक अकुपेशनल थेरापिस्ट देवदूत सरीखा होता है।

संप्रति पूरे देश में गिनती के 6 संस्थानों में ही अकुपेशनल थेरापी में डिग्री की पढ़ाई होती है। इसलिये भी इसमें प्रशिक्षित स्नातकों की बड़े पैमाने पर कमी है। विदेशों में इसकी मांग फिजियोथेरापिस्टों की तुलना में कहीं ज्यादा है। उपार्जन की दृष्टि से भी यह कमतर नहीं है।

बैचलर ऑफ स्पीच, लैंग्वेज एण्ड हियरींग:- यह पाठ्यक्रम ऐसे ग्रेजुएट हियरींग एण्ड स्पीच पैथालॉजिस्ट (हियरींग एण्ड स्पीच थेरापिस्ट) तैयार करने के उद्देश्य से बनाया गया है, जो स्वतंत्र रूप से श्रवण (हियरींग) एवं वाक् (स्पीच) दोषों के मरीजों की जांच और उपचार कर सके। स्पीच पैथोलॉजी तथा ऑडियोलॉजी एक दूसरे के पूरक चिकित्सा विज्ञान है और इसी लिये ये दोनों विषय एक साथ पढ़ाये जाते हैं ताकि इसके ग्रेजुएट दोनों ही क्षेत्रों में अपना कैरियर बना सके। स्पीच थेरापी के माध्यम से आवाज, वाक् तथा उच्चारण के दोषों को ठीक किया जाता है, जबकि ऑडियोलॉजी का सम्बन्ध श्रवण-दोष की विभिन्न प्रकार की जांच के तरीकों से है। इसके द्वारा श्रवण-क्षमता की सटीक जांच की जाती है तथा कम सुननेवाले एवं बहरे लोगों का उपचार और हियरींग-एड (श्रवण-यंत्र) की सहायता से उनका पुनर्वास भी किया जा सकता है।

इसमें प्रशिक्षित व्यक्तियों के लिये रोजगार एवं निजी प्रैक्टिश के व्यापक क्षेत्र हैं। इनका समायोजन अस्पतालों, स्पीच एण्ड हियरींग केन्द्रों, नाक, एवं गला विभाग, शिशुरोग विभाग सहित न्युरोलॉजी, प्लास्टीक सर्जरी, रिहैब्लिटेशन मेडिसीन, प्रिवेन्टीव मेडिसीन विभागों तथा गुंगे-बहरे एवं मानसिक विकलांग विद्यालयों में स्पीच पैथोलॉजीस्ट और/या ऑडियोलॉजिस्ट के पदों पर किया जाता है। इनके अतिरिक्त वे आर्म्ड मेडिकल सर्विस,

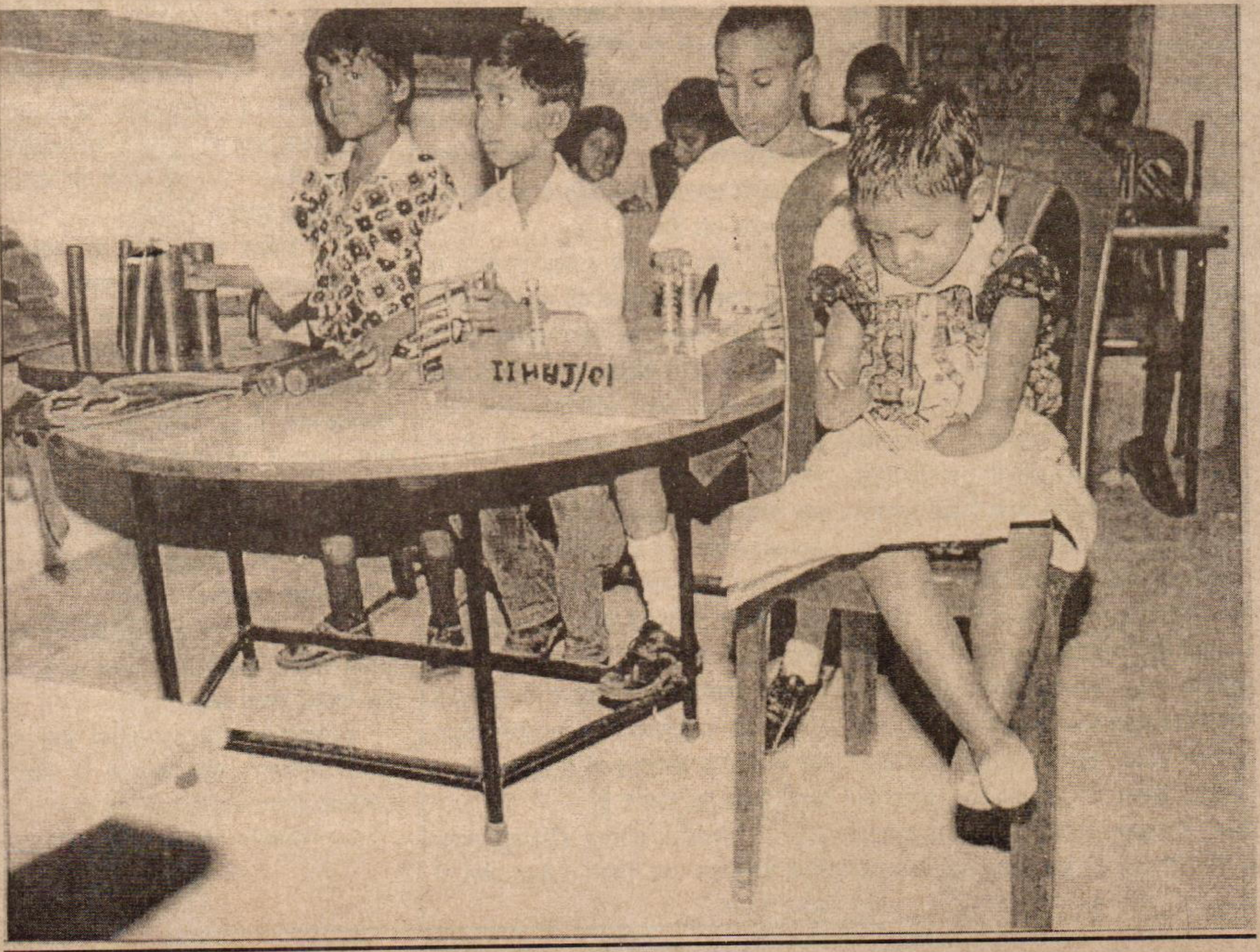

औद्योगिक प्रतिष्ठानों तथा पुनर्वास केन्द्रों में भी नियुक्ति पा सकते हैं। निजी प्रैक्टिस के माध्यम से भी अच्छा उपार्जन हो सकता है।

साढे तीन वर्षीय(इसमें 6 माह का इंटर्नशिप शामिल है।) इस पाठ्यक्रम में नामांकन की न्युनतम योग्यता इंटरमीडीएट विज्ञान है।

बैचलर ऑफ प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक इंजीनियरींग:- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य ऐसे प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक ग्रेजुएट इंजीनियर तैयार करना है, जो स्थायी रूप से विकलांग व्यक्तियों के पुनर्वास के लिये स्वतंत्र रूप से मरीजों को पहचान तथा उन्हें आवश्यक कृत्रिम अंग (आर्टिफिशियल लिम्ब) देकर उन्हें सामान्य जीने योग्य बना सके।

यह विज्ञान विकलांगों के पुनर्वास के क्षेत्र में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि स्थायी रूप से विकलांग हो गये व्यक्ति जिनके हाथ या पैर कट चुके होते हैं, उन्हें सारा जीवन कृत्रिम अंग के सहारे जीना पड़ता है। यह प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक इंजीनियर ही है, जो उनके शारीरिक बनावट और कटे हुये स्थान के मुताबिक कृत्रिम पैर या हाथ (जरूरत के अनुसार) देकर उन्हें सामान्य जीवन जीने लायक बनाते हैं।

इस क्षेत्र में तेजी से वैज्ञानिक और तकनीकी विकास हो रहे हैं। आज इस तरह के कृत्रिम हाथ-पैर बनाये जा रहे हैं, जो न केवल देखने में, बल्कि उपयोग में भी प्राकृतिक जैसे लगते हैं। इनके अतिरिक्त एक प्रोस्थेटिक इंजीनियर पोलियो के जूते, कैलिपर, बैशाखी, गर्दन के कॉलर, कमर के बेल्ट तथा कई अन्य सहायता सामग्री एवं उपकरण बनाते हैं, जिनकी फिजियोथेरापी, अकुपेशनल थरापी तथा पुनर्वास के लिये जरूरत होती है। एक प्रोस्थेटिक ऑर्थोटिक इंजीनियर के बिना किसी पुनर्वास केन्द्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती। लिहाजा यह एक बहुत ही रोजगार परक क्षेत्र है। अपना "कृत्रिम अवयव निर्माण केन्द्र" स्थापित कर लाभप्रद स्वरोजगार भी प्राप्त किया जा सकता है। भारत सरकार के अंतर्गत कल्याण मंत्रालय तथा स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा देश के प्रत्येक क्षेत्र में अनुदान आधारित "लिम्ब फिटींग सेन्टर" स्थापित करने के प्रस्ताव हैं। किन्तु प्रशिक्षित व्यक्तियों के अभाव में भारत सरकार की शतप्रतिशत अनुदान राशि से चलायी जाने वाली यह योजना हर जगह लागू हो पा रही है। इस योजना के तहत एक बड़ी संख्या में प्रशिक्षित प्रोस्थेटिक ऑर्थोटिक इंजीनियरों की जरूरत है। अन्य रिहैब्लिटेशन प्रोफेशनल्स की तरह इसकी भी विदेशो में बड़ी मांग है।

तीन वर्ष और 6 माह इंटर्शिप के इस पाठयक्रम में नामांकन की न्यूनतम योग्यता इंटरमीडियेट विज्ञान है।

बैचलर ऑफ मेंटल रिटार्डेशन: यह पाठ्यक्रम ऐसे ग्रेजुएट स्पेशल एजुकेटर तैयार करने के उदेश्य से बनाया गया है, जो काफी हदतक स्वतंत्र रूप से मंदबुद्धि तथा मानसिक विकलांग बच्चों की जांच एवं उपचार सहित उनका पुनर्वास करते हुये उन्हें दैनन्दिनी के कार्यो सहित व्यवहारिक शिक्षा भी प्रदान कर सके।

पूरे देश में बड़ी तादाद में मंद-बुद्धि और मानसिक विकलांग बच्चे हैं, जिनके अनुपात में ऐसे प्रशिक्षित व्यक्तियों की भारी कमी है। प्रशिक्षित व्यक्तियों के अभाव में भारत सरकार की कई महात्वाकांक्षी योजनाएं जो मंदबुद्धि बच्चों के विद्यालयों से सम्बन्धित है, नहीं पूरी हो पा रही है।

मेंटल रिटार्डेशन में स्नातक डिग्री प्राप्त प्रोफेशनल्स को पूरी उदारता के साथ शत-प्रतिशत अनुदान राशि के साथ विद्यालय चलाने की योजनाओं को भारत सरकार स्वीकृति प्रदान कर रही है।

तीन वर्ष और 6 माह इंटर्नशिप के इस पाठ्यक्रम में नामांकन की न्यूनतम योग्यता इंटरमीडियेट विज्ञान है। नये शेक्षणिक सत्र में नामांकन के लिये संस्थान द्वारा प्रक्रिया शुरू कर दी गयी है। फॉर्म भरने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल है। नामांकन परीक्षा 14 मई को ली जायेगी। मेधा सूची में आनेवाले छात्र 24 मई तक नामांकन करा सकेंगे। फॉर्म तथा प्रॉस्पेक्टस संस्थान कार्यालय से 100 रुपया नगद भुगतान कर अथवा 120 रुपये का बैंक डिमान्ड ड्राफ्ट, जो "इंडियन इंस्टीच्युट ऑफ हेल्थ एजुकेशन एण्ड रिसर्च, पटना", के नाम देय हो, भेजकर डाक से प्राप्त किया जा सकता है। स्मरणीय है कि सभी पाठ्यक्रमों में स्थान सीमित किये गय हैं। विशेष जानकारी के लिये संस्थान से संपर्क किया जा सकता है।

सम्पर्क:- इंडियन इंस्टिच्यूट ऑफ हेल्थ एजूकेशन एण्ड रिसर्च, (बेऊर जेल के पास) पटना

पृष्ठ 40 का शेष भाग

भारतीय संस्कृति शिक्षा को परिवर्तन ही नहीं, बल्कि मुक्ति का साधन मानती है। कहा गया है- "या विद्या या विमुक्तये" (विद्या वही है जो मुक्त करती है) किन्तु दुर्भाग्यवश शिक्षा व्यवस्था भी कतिपय अवांछित तत्वों के चंगुल में फंसी विवश दिखती है। अत: इसकी भी मुक्ति जरूरी है और मनुष्य, जो इतिहास का निर्माता है, ही उसे यह मुक्ति दिला सकता है। ऐसा करने के लिए हम सभी को एक जुट होना होगा जिससे हम अपने सपने को मरने नहीं दें क्योंकि परिवर्तन की आकांक्षा और सपना बरकरार नहीं रहा, तो उसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ेगा। पंजाबी के प्रसिद्ध कवि पाश के शब्दों में कहने को मैं बाध्य हूँ:-

"सबसे खतरनाक होता है/ सपनों का मर जाना।"

कहने की जरूरत नहीं कि परिवर्तनकामी प्रगति लाने के लिए शिक्षक को परिवर्तन की प्रक्रिया का हिस्सा बनना पड़ेगा और उसका नेतृत्व भी उसे करना होगा। यह परिवर्तन प्रगतिमूलक होना चाहिए। यह काम कठिन जरूर असंभव नहीं। जैसा कि मशहूर शायर मुरादाबादी ने ठीक ही कहा है-

"कुछ सोच कर ही हुआ हूँ मौजे-दरिया का हरीफ। यूँ तो मैं भी जानता हूँ अफियत साहिल में है॥

आखिर हजार मीलों की यात्रा के लिए हमें पहला कदम बढ़ाना ज़रूरी है और पहले कदम की सच्ची पहल सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। सच्ची पहल हो जाने पर तमाम लोग एक साथ कारवां बनाने के लिए तन-मन-धन से जुट जाते हैं। यहाँ मशहूर शायर मजरूह सुल्तानपुरी के शेर से इस पावन यज्ञ में आहुति देने के लिए मैं सभी शिक्षकों, अभिभावकों, अधिकारियों, बुद्धिजीवियों, गैर- सरकारी संगठनों और आम नागरिकों का आह्वान करता हूँ:-

मैं तो तन्हा ही चला था,
जानिबे-मंजिल मगर। लोग साथ आते गये
और कारवां बनता गया॥

(लेखक भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी तथा वर्तमान में बिहार माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष हैं।)

सम्पर्क:- 22/60, ऑफिसर्स फ्लैट
बेली रोड, पटना-800007

खण्डित होती जिजीविषा और आदमीपन की तलाश

समीक्षकः सिद्धेश्वर

वर्तमान समय में कविताओं से आम पाठकों की अभिरूचि घट रही है क्योंकि आज निराशावादी, नकारात्मक या बिना सिर-पैर की कुछ न समझ में आनेवाली दुरूह, जटिल कविताओं का दौर चल रहा है। इससे कविता-प्रेमी पाठक भी कविता से अब ऊब चुके हैं। ऐसी परिस्थिति में नवगीत के सशक्त कवि **सत्यनारायण** का यह काव्य संग्रह- **सभाध्यक्ष हंस रहा है** बिल्कुल मानवीय मूल्य और मर्यादा को बचाने वाली आशावादी सकारात्मक तेवर की हृदय को स्पन्दित करनेवाली कविताओं के साथ सद्‌यः प्रकाशित हुआ है। दृष्टि और संभावनाओं से भरपूर ये कविताएं आज की समूची मानसिकता,खण्डित जिजीविषा और आदमीपन की तलाश के साथ-साथ कविता की नई आहटों के संकेत भी हैं।

हमारे जमाने का शायद यह सबसे बुरा दौर है जब आदमी खासकर प्रबुद्धजनों की संवेदना जाती रही है। वह हर गलत को मान लेने को तैयार और उसे नियति मान बैठा है। वह हर अन्याय को सह जाने को तत्पर है, जो किसी दूसरे की जिन्दगी में घट रहा है। यह आदर्शों के बूत गिराने का वक्त है। लेकिन इस दौर में भी सड़सठ की दहलीज पार कर रहे इस संग्रह के कवि में आग बाकी है, अपने लिखने पर उसका यकीन अब भी बचा है- सारी विषमताओं के बावजूद। इस दीवाने कवि को अब भी विश्वास है कि उसका एक भी शब्द बेकार नहीं जाएगा। तभी तो वह कहता है--

शब्द
एक जरूरत है
उसे मोड़ो
जैसे फसल के लिए
किसान
मेड़ काटकर
पानी मोड़ता है।

दृष्टि-पथ के पार
कोई है
मुझे जो लिख रहा
मौन रहकर भी
मुझे
नित शब्द से
भरता हुआ!

जल-तरंग आठ पहर का, जंगल मुंतजिर है और लोकतंत्र में- इन तीन शीर्षकों में विभाजित इस संग्रह की अधिकांश कविताओं में कवि ने अपने परिवेश की व्यथा और उत्पीड़न के ऐसे जीते-जागते चित्र खींचे हैं, जिनमें आम-जन की जिन्दगी और इस जिन्दगी के बीच से पाई गई अनुभूतियों, विचारों और सच्चाईयों की नींव पर एक ठोस संसार की रचना की गई है। पुस्तक की भूमिका लिखी है **कन्हैया लाल नन्दन** ने, जिसे पढ़कर सुधी पाठक इस काव्य-संग्रह के वास्तविक 'मूल्य' को जान लेगा। वैसे भी जाग्रत पाठक भूमिका को बड़ी गंभीरता से लेता है।

इस संकलन में कुल 69 कविताएं संग्रहित हैं और इन सभी में अवचेतन के अनेक उतार-चढ़ावों से लेकर तमाम राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक अवमूल्यों के खिलाफ लड़ रहे व्यापक जन-समुदाय की आकांक्षाओं-संघर्षों को कवि ने बखूबी शब्द दिए हैं। दरअसल इन कविताओं को कवि एक हथियार की तरह इस्तेमाल करता है और राजनीति तथा लोकतंत्र की विडम्बनाओं पर व्यंग्य तो कसता ही है, साथ ही उसकी जीवन्तता बनाए रखने के लिए एक अहिंसक प्रयोग भी करता है। देखें इन पंक्तियों को---

राजा को सिंहासन सोहे
परजा को फुटपाथ
परजा चंवर डुलाए, छत्र-मुकुट
राजा के माथ
पाँच बरस पर राजा जाए
परजा के घर-द्वार
गद्‌गद् परजा किया करे
राजा की जय-जयकार
पाँच बरस पर राजतिलक का
नाटक हुआ करे!

भारत के राजनीतिक क्षेत्रों में इधर जितनी तेजी से स्वेच्छाचरिता और निरंकुशता बढ़ी है, संविधान की कुछ बुनियादी बातों को छोड़ सत्ता की कुर्सी हथियाने में जिस तरह नेताओं ने अपने को विरूपित कर पेश किया है और संसद तथा विधान सभाओं में जिस प्रकार असंसदीय आचरण और अशिष्टता के नजारे विगत वर्षों में देखने को मिले हैं उसके परिणामस्वरूप लोकतंत्र एक बेलगाम भीड़तन्त्र में बदल चुका है। कवि सत्यनारायण ने संग्रह के तीसरे शीर्षकान्तर्गत लोकतंत्र में गठबंधन सरकार पर तीखा प्रहार करते हुए अपने शब्द-विवेक का उचित प्रयोग कर उसे बखूबी सिद्ध किया है। -देखें उसकी कुछ पंक्तियों को-

एक गिद्ध के तरह डैने
लोकतंत्र में देखे मैंने
पांख पसारे मंडराता है
'जन गण मन जय हे' गाता है!
कैसी ईंट, कहां का रोड़ा
जैसे-तैसे कुनबा जोड़ा
किसके हाथों में लगाम है
कुद रहा है किसका घोड़ा
देखा, एक अचम्भा देखा
सांप-नेवले में नाता है।

राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अन्तर्विरोधों के इस युग में रचनाओं की पड़ताल लगातार प्रश्नों के घेरे बनती चली जाती है। इसकी उच्चवर्गीय व्यापक संकीर्णता ने कभी सही को कम सही और कभी उद्यात के पक्ष में सही के विपरीत को अंकित किया है और कभी दोनों का अतिक्रमण कर उनमें लोकप्रियता और सामाजिक रुचि के नए आयामों को खोजा है। इन कविताओं में वर्तमान की भयावहता का गहरा अहसास है। समय के अन्तर्विरोध को अपने निकटतम और निकृष्टतम रूप में नगर और गांव के डगर में कवि ने करीब से देखा है। आजादी के बाद का माहौल घोर आर्थिक वैषम्य, भ्रष्टाचार, क्षेत्रवाद, जातिवाद, राजनीतिक अपराधीकरण, भाई-भतीजावाद जैसी विकृतियाँ ही इनकी चिंताओं के विषय रहे हैं। असहमति, विद्रोह, उग्रता तथा आक्रोश के स्वर ही इनकी कविता में उपजे हैं। तभी तो कवि कहता है **कह आजादी** शीर्षक अपनी कविता में--

यह पचासवां आया साल
कह आजादी, क्या है हाल?
तूने क्या-क्या किए कमाल?

आ जाइए शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियों को भी देखें-

लूट, हत्या, अपहरण, उन्माद यह
रोज का व्यापार है, आ जाइए!
छोड़िए भी अब चुनावों के गणित
एक कारोबार है, आ जाइए!

कवि में अपनी बात कहने का खास अंदाज है। अपनी हर बात पूरी शिद्दत से कहते हैं। यही कारण है कि अपने समकालीन ही नहीं बल्कि सभी उम्र और स्तर के सहधर्मियों, समाज सेवियों तथा राजनेताओं में उन्हें एक विशिष्ट पहचान देता है। इनकी रचना से गुजरते हुए एक बात जो मुझे अधिक आकर्षित करती है वह है इनकी स्पष्टवादिता। ..ी तो इनकी लेखनी इन राजनीतिज्ञों, अफसरों और चापलूसों पर पूरा व्यंग्य करती है जो समाज में घट रही घटनाओं से अनभिज्ञ हैं देखें इनकी कुछ पंक्तियों को-

तेरी यह जन सत्ता है
मधुमक्खी का छत्ता है
गद्दी पर नेता बैठा
वोटर खड़ा निहत्था है
उसी डाल पर फिर बेताल।
कुरसी चांपे हुए खड़े
एक-एक से बढ़े-चढ़े
नहीं किसी से कोई कम
सब के सब ऐंठे-अकड़े
टोके, किसकी यहां मजाल!

संग्रह के **बाबूजी** शीर्षक कविता की निम्न पंक्तियाँ नई सभ्यता के नाम हो रहे नैतिक ह्रास की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं--

भइया
सात समुन्दर पार जा बसे
पिछले साल आए
जाते-जाते
बाबूजी को कह गए
आधा घर
किराए पर उठा दीजिए
खर्च निकल आएगा।
बाबूजी को जैसे काठ मार गया था
तब से
एकदम चुप रहते हैं बाबूजी
सिर्फ आँखें बोलती हैं

शब्द-विवेक सिद्ध साहित्यकार की पहली पहचान है। किस शब्द का कहाँ प्रयोग हो, जो सटीक, सूक्ष्म और प्रभावोत्पादक हो, सन्दर्भ को ज्योतिर्मय बनाने में समर्थ हो, इसके लिए प्रत्येक सर्जक जागरूक और पर्यत्नशील रहता है। कवि सत्यनारायण एक ऐसे ही सर्जक हैं, जो शब्द-विवेक के द्वारा साधारण शब्दों में नयी जान प्राण-प्रतिष्ठा कर देते हैं। अपनी कविता यात्रा में कवि ने अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य का बोध तो कराया ही है, साथ ही इतिहास पर भी उनकी पैनी दृष्टि गयी है। संग्रह के प्रथम शीर्षक **जल तरंग आठ पहर का** में जहां बोध गया, पाटलिपुत्र और वैशाली के ऐतिहासिक तथ्य हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं वहीं वैशाली के गौरवमय गणतंत्र के मद्देनजर आज के गणतन्त्र पर कवि के तीखे व्यंग्य भी स्पष्ट नजर आते हैं-

वैशाली तो
आज मगन है
झंडे नारों में
चीख प्रजा की
डूब गई है
जय-जयकारों में
अजब हाल है
वर्द्धमान की
इस वैशाली का
जन प्रतिनिधियों के
हिस्से है
सारी हरियाली।

नवगीत लिखनेवाले कुछ रचनाकारों में एक महत्वपूर्ण नाम सत्यनारायण का है। सम्पूर्ण संग्रह में बिम्बों का आलम्बन लेने के बाद भी न भाव में दुरूहता है और न भाषा में। रचनाकार ने आम आदमी के बीच प्रचलित शब्दों को अपने गीतों में इस तरह आत्मसात किया है कि वे शब्द कहते हुए से लगते हैं। उन्होंने गीत को अपने में रसा-बसा लिया है और लोगों को यह सोचने को बाध्य किया है कि गीत **राजपथ** पर नहीं चलता, **जनपथ** पर चलता है।

इस संग्रह का नाम-**सभाध्यक्ष हँस रहा है** इसके कथ्य और तथ्य की दृष्टि से खूब सटीक नहीं लगता। सम्भव है कवि ने संग्रह की कविताओं के व्यंग्यात्मक स्वर को मुखर करने के ख्याल से इस नाम का चयन किया हो।

जो हो, संग्रह की कविताओं को पढ़ने से एक चीज, जो साफ नजर आती है वह है कवि की सोच। कवि ने सही और गलत के बीच के अन्तर को अच्छी तरह रेखांकित किया है अपनी कविताओं में। जाहिर है, कवि के अन्दर समाज को लेकर, राजनीति को लेकर लोकतन्त्र को लेकर, जीवन स्थितियों और संघर्षों को लेकर जो छटपटाहट है, उसे वह कविता के माध्यम से कागज पर उतारा है। उसकी इच्छा है कि जो छटपटाहट उसके अन्दर है वह सम्पूर्ण चेतना बनकर समाज में फैले और यह समाज व्यवस्था, सोच में परिवर्तन हो, जीवन स्थितियों, राजनीति व लोकतन्त्र के तौर-तरीकों में बदलाव आए। यह काम सत्यनारायण सरीखे कवि हर समय चुपचाप जागने वाला कवि ही कर सकता है। ऐसा कवि समाज तो नहीं बदल सकता, किन्तु वह समाज को एक दिशा, आईना दिखाने का काम जरूर कर सकता है, इस संग्रह की यही सबसे बड़ी विशेषता है। सम्भव है संग्रह की सारी कविताएं आम पाठकों के गले न उतर पाएं, किन्तु यह सच है कि हिन्दी साहित्य में इस काव्य-संग्रह का योगदान नकारा नहीं जा सकता।

कुल मिलाकर इस संग्रह में कवि की चिन्ता एक बार पाठक की मानसिकता को झकझोरने के लिए बाध्य करता है। पाठकगण इसी भाव से इस रचना का स्वागत करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

काव्य संग्रह: सभाध्यक्ष हँस रहा है
लेखक: सत्यनारायण
समीक्षक: सिद्धेश्वर
प्रकाशक: अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली-2
मूल्य: 120 रुपये

संपर्क: सम्पादक, विचार दृष्टि
'दृष्टि', 6, विचार विहार
यू०-207, शकरपुर,
विकासमार्ग, दिल्ली-92
दूरभाष: 011-2230652

नेपाल में माओवादी विद्रोह से भारत को चिन्ता

✍ संजय सौम्य

पड़ोसी देश नेपाल माओवादी विद्रोह के चलते एक बार फिर से सुर्खियों में है। करीब छह माह पूर्व वहाँ के राजा **वीरेन्द्र** और रानी **एश्वर्या** सहित शाही परिवार के अनेक सदस्यों की सामूहिक हत्या के करण नेपाल खबरों में था। हाल फिलहाल उसके पश्चिमी इलाके माओवादी हिंसा की चपेट में है जिसके परिणामस्वरूप राजधानी काठमांडू भी इस हिंसा से प्रभावित है।

नेपाल विश्व का एक मात्र संप्रभु और स्वतन्त्र हिन्दू राष्ट्र है जितना भारत से मधुर सम्बन्ध रहा है। हाँ, एकाध बार संबंध बिगड़ा भी है तो वह भारत के राजनेताओं के गलत बयानबाजी के चलते। हाल ही में इन नेताओं द्वारा नेपाल के माओवादियों में क्षोभ और गुस्सा उभर आया। दरअसल हमें यह समझ लेना होगा कि नेपाल के वामपंथियों के साथ हैं वहाँ के लगभग ४० प्रतिशत मतदाता १९९९ के चुनाव में सत्तारूढ़ नेनाली कांग्रेस को जहाँ कुल ३७.१७ प्रतिसत वोट मिले थे। वहीं वामपंथी दलों का सम्मिलित वोट ४१.०५ प्रतिशत रहा। इस दृष्टि से हम भारत वासियों को यह भी विचार करना होगा कि माओवादी वहाँ की जनता ने विद्रोह का रास्ता आखिर क्यों अखितयार किया। क्या नेपाली सरकार और वहाँ के प्रशासन की नाकामी माओवादी विद्रोह के लिए जिम्मेदार नहीं है? यह सत्य कि माओवादी अपनी मांगों को मनवाने के लिए हिंसा की राजनीति कर रहे हैं और हिंसा का समर्थन हम नहीं कर सकते किन्तु गौर करने वाली बात यह भी है कि माओवादियों को नेपाल के एक बड़े हिस्से में जन समर्थन प्राप्त है जिसको नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। वह अपनी मानसिक संघर्ष करता रहता है। इसलिए भारत को नेपाली जनता की भावनाओं के ठेस पहुँचाने वाले बयानो और नीतियों से परहेज करना चाहिए।

यह कहने की आवश्यकता नहीं की माओवादियों की मुख्य माँग राजशाही को खत्म कर नेपाल को गणतन्त्र घोषित करना है, सामाज्यवादी और औपनिवेशिक संस्कृति पर प्रतिबन्ध लगना है, नेपाल के उद्योग और व्यवसाय में विदेशी पूंजी के प्रभुत्व पर रोक लगाना हैं, नेपाल को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित करना है। इसके अतिरिक्त उनकी माँगें हैं कि १९५० की भारत–नेपाल संधि तथा १९९६ में सम्पन्न हुई कथित एकीकृत महाकाली संधि तुरन्त रद्द की जाए तथा खेत जोतने बोने वाले को ही खेत का मालिक घोषित किया जाए। यानी ये सारी माँगें राष्ट्रीयता, प्रजातांन्त्रिक लोकतन्त्र और आम आदमी की आजीविका से जुड़ी हुई हैं। इन मांगो को मनवाने के लिए उन्होंने युद्ध और वार्तालाप दोनों तरीकों को अख्तियार किया है किन्तु जब वार्ता असफल रही तो माओवादियों ने व्यापक पैमाने पर हिंसात्मक कारवाईयाँ प्रारंभ कर दी। इसकी अंतिम परिणति यह हुई कि मंत्रिपरिसद की सलाह पर २६ नवम्बर को राजा **ज्ञानेन्द्र** ने कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए नेपाल में आयातकाल की घोषणा कर दी।

पिछले दस सालों में नेपाल में दस सरोकारें आई और गई। फिलहाल २३ जुलाई २००१ से कोई सरकार के इस्तीफे के बाद शेर बहादुर देऊबा प्रधान मंत्री के पद पर आसीन हुए। माओवादियों को देऊबा से बड़ी उम्मीदें थीं। राजनीतिक घटना क्रम ने देऊबा से वह सब करा लिया, परिस्थितियाँ नेपाल कांग्रेस को एकजुट रहने को विवश कर रही हैं। अपनी समस्त त्रुटियों के बावजूद भी नेपाली कांग्रेस में लोकतान्त्रिक और भागीदारी संस्कृति काफी सबल रही है।

दरअसल नेपाल के प्रति हमारा दृष्टिकोण मूलतः सामंती है। भारत हर छोटी–छोटी बातों के लिए नेपाल को फटकरता रहता है। हम अपने यहाँ तो आईएसआई को रोक नहीं पाए, पर चाहते हैं कि नेपाल अपने यहाँ इन पर अंकुश लगाए। सच तो यह है कि माओवादियों द्वारा छेड़ा गया आन्दोलन सामाजिक न्याय की माँग लगता है न कि आतंकवाद। उनका संघर्ष आर्थिक असमानता, गरीबी, और अशिक्षा से उपजा है। माओवादी कहते हैं कि उनकी लड़ाई वैचारिक है। वे यह भी कहते हैं कि वे निर्दोष जनता को मारने के पक्ष में नहीं है। माओवादी भी भारत से अच्छे रिश्तों की बात करते हैं। इसलिए माओवादी को आतंकवादी कहना उचित नहीं। यह एक प्रकार का विद्रोह है व्यवस्था के प्रति व्यापारियों का अपहरण करना, फिरौती वसूलना, आम आदमी की हत्या करना आदि आतंकवादी गतिविधियाँ हैं, जबकि विद्रोह व्यवस्था के विरूद्ध होता है। आतंकवाद आम आदमी की खिलाफ़ जाता है। क्योंकि पिछले दस साल से वहाँ की लोकतांत्रिक सरकारें जन आकांक्षाओं पर खरी नहीं उतरी हैं इसलिए वहाँ के माओवादियों ने व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह किया है।

नेपाली माओवादियों का मुख्य सामाजिक जनाधार वहाँ के अल्पसंख्यकों में है। ये अल्पसंख्यक मुख्यतः जनजातीय हैं और उनमें से अधिकतर बौद्ध धर्म को मानते हैं। वहाँ के अल्पसंख्यक में मुसलमान न के बराबर हैं। गुरूंग, मगर, टाई, केराती आदि वे जनजातियाँ हैं जो यह समझती हैं कि नेपाल की लोकतांत्रिक व्यवस्था में उनके सामाजिक तथा आर्थिक हितों की अवहेलना हुई है। यही वजह है नेपाल में विद्रोह का।

नेपाल में विपक्ष की राजनीति मूलतः भारत विरोध की राजनीति है और इस लम्बी राजनीतिक लड़ाई में नेपाल एक बड़े वर्ग को मानसिक रूप से भारत विराधी बना दिया है। यही कारण है भारत के चिन्ता का। इसलिए जरूरत इस बात की है कि हम नेपाल के प्रति हम अपने सामंती दृष्टिकोण को बदलें। भारत को चाहिए कि वह नेपाली नौकरशाहों के डर को दूर करें। गोरखा सिपाहियों की मदद से अपनी अच्छी छबि पेस करें। नेपाली प्रवासियों का शोषण न होने दें तथा नेपाल के विकास में आर्थिक मदद दें ताकि वहाँ के भारत विरोधी स्वर को दबाया जा सके। दूसरी बात यह है कि नेपाल में सुधारवादी कार्यक्रमों को भी सख्ती से लागू किया जाए। ऐसा करके ही माओवाद के प्रभाव को खत्म किया जा सकता है। सम्पर्क : ४७, मानसरोबर पार्क, शहादरा, दिल्ली, दूरभाष– ०११–४६२१३६३

ऋण लेने में राजस्थान के किसान अग्रगणी

सुनीता रंजन

किसान क्रेडिट कार्ड के जरिए देश में राजस्थान के किसान सबसे ज्यादा ऋण लेते हैं। इस मामले में आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश के किसान क्रमशः दूसरे, तीसरे और चौथे स्थान पर हैं। लेकिन जहाँ तक बैंकों से ऋण लेने के लिए क्रेडिट कार्ड धारक किसानों की संख्या का सवाल है, इस मामले में राजस्थान 16 लाख 52 हजार क्रेडिट कार्ड धारक किसानों के साथ चौथे स्थान पर है। आंध्र प्रदेश 44 लाख क्रेडिट कार्ड धारक किसानों के साथ प्रथम स्थान, 27 लाख किसानों के साथ उ० प्र० दूसरे तथा 20 लाख के साथ महाराष्ट्र तीसरे स्थान पर है।

किसानों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि सरकार द्वारा निर्धारित नियम के अनुसार सिंचित क्षेत्रों में दो एकड़ और असिंचित क्षेत्रों में पाँच एकड़ जमीन के मालिक किसान बैंकों से ऋण लेने के लिए क्रेडिट कार्ड ले सकते हैं।

केन्द्रीय वित्त मंत्रालय के बैंकिग प्रभाग से प्राप्त जानकारी के मुताबिक 28 राज्यों और 7 केन्द्र शासित प्रदेशों में अबतक कुल एक करोड़ 89 लाख 31 हजार से अधिक किसान क्रेडिट कार्ड हासिल कर चुके हैं। 30 सितम्बर, 2001 तक ये किसान क्रेडिट कार्ड के जरिए 4 खरब 36 अरब 42 करोड़ रुपये से अधिक का ऋण ले चुके हैं। इसमें 59 अरब 71 करोड़ ऋण राजस्थान के क्रेडिट कार्ड धारक किसानों ने लिया है। आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और उ० प्र० के किसान क्रमशः 57 अरब 33 करोड़, 53 अरब 0 करोड़ तथा 46 अरब 10 करोड़ रुपये से अधिक का ऋण ले चुके हैं।

बैंकों के क्रेडिट कार्ड धारक किसान राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना के अन्तर्गत फसल बीमा और व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा के पात्र हैं। बैंकों से फसल पर ऋण लेने वाले किसानों के लिए फसल बीमा अनिवार्य है। व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना के तहत क्रेडिट कार्ड धारक किसानों को दुर्घटनावश मृत्यु अथवा स्थायी आंशिक विकलांगता की स्थिति में मिलने वाली धनराशि की अधिकतम सीमा 50 हजार रुपये है, जिसमें फसलों की बीमित राशि को अतिरिक्त प्रीमियम के भुगतान पर फसल की औसत उपज के मूल्य से 150 प्रतिशत अधिक तक बढ़ा सकते हैं।

मजदूरों के बाद अब बिहार से किसानों का पलायन

बिहार में खेती की स्थिति इतनी दयनीय हो गयी है कि मजदूरों के साथ-साथ अब यहां के युवा किसान भी अन्य राज्यों में मजदूरी के जरिए अपनी जीविका का निर्वाह करने के लिए पलायन कर रहे हैं जिसका मुख्य कारण है कि यहाँ पर खेती में इतना लागत आ रहा है कि किसानों को बहुत कम बचत हो रही है। फलतः किसान अपने खेतों में काम करने के बजाए अन्य प्रदेशों में मजदूरी करना अच्छा समझते हैं।

कृषि में हो रहे अनुसंधान को प्रयोगशाला से किसानों तक पहुँचाकर राज्य की विकास की गति को तेज किया जा सकता है। किसान वर्तमान में प्रदेश के कृषि विज्ञान केन्द्रों से सम्पर्क कर रवि फसल के बारे में नवीनतम जानकारी हासिल कर सकते हैं। ये विचार हैं कृषि अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक डॉ० भरत प्रसाद के, जिसे उन्होंने राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय द्वारा रवि फसल के बारे में किसानों को नवीनतम जानकारी देने के लिए आयोजित कृषि वैज्ञानिकों के एक सम्मेलन में व्यक्त किए। उन्होंने पुनः बताया कि केन्द्र सरकार के सहयोग से राज्य में डीफीड परियोजना तथा राष्ट्रीय कृषि प्राद्यौगिकी कार्यक्रम के अन्तर्गत किसानों की खेती की जुताई एवं बीज का वितरण किया जा रहा है।

एक गांव के पुनर्जन्म की सच्ची कहानी

मध्य प्रदेश के पूर्व निमाड़ जिले के अन्य गांवों की तरह पाडिया देह गांव भी विपन्न था तथा उसकी तस्वीर भी बदरंग थी- वही संकरी गलियां, कच्चे रास्ते, बेतरतीब मकान तथा खेती बाड़ी का मौसमी रोजगार! विकास की आँधी, तरक्की का सूरज गांवों का कायाकल्प-जैसे जुमले इस गांव के लोगों ने भी सुने थे। किन्तु निर्माणाधीन इंदिरा सागर बांध के चलते इस गांव को खाली कराकर जिस नये गांव का निर्माण किया गया है उस गांव का नाम है-- बड़ौदा सतवास! देवास जिले में विकास खण्ड मुख्यालय सतवास के पास इंदौर-नेमावर मार्ग पर बसाया गया सौ परिवारों वाला बड़ौदा सतवास प्रकृति की खुली गोद में किसी सुन्दर स्वस्थ शिशु की तरह विकसित हो रहा है। यहां सुन्दर और व्यवस्थित ढंग से आवास तथा नलकूपों से पेयजल की पर्याप्त व्यवस्था की गयी है। प्राथमिक स्कूल औषधालय, खाद-बीज गोदाम सामूदायिक भवन का निर्माण भी किया जा रहा है। 50 पक्की दुकानों का एक बाजार और बस बड्डा भी इस गांव में होगा। सड़कें भी बन चुकी हैं और उस पर तथा पूरे गांव में छायादार वृक्षों के पौधों रोपे गए हैं।

गांव की महिलाओं को सम्मान जनक रोजगार देने के लिए एक हस्त शिल्प प्रशिक्षण और उत्पादन परिसर का निर्माण प्रगति पर है। कमल तालाब का निर्माण तथा मछली पालन की भी व्यवस्था की जा रही है। 40 हेक्टेयर जमीन पर ईंधन वन लगाने तथा इस वन में पशुचारा और जलाऊ लकड़ी की पूर्ति करनेवाला जंगल विकसित किया जाएगा।

पाडिया देह के निवासी का अपनी खेती की जमीनों और मकानों के मुआवजों के रूप में करीब एक करोड़ 30 लाख रुपये मिल चुके हैं जिससे वे खेती की जमीनें खरीद रहे हैं तथा सुविधायुक्त मकान बना रहे हैं। इस प्रकार विपन्न पाडिया देह का बड़ौदा सतवास के रूप में परीक्षाओं सरीखा कायाकल्प होना एक सच्ची कहानी है।

सम्पर्क : यू-207 ,शकरपुर, दिल्ली-92

साठोत्तर राजस्थान की महिला रचनाकारों का हिन्दी साहित्य में योगदान

ऐतिहासिक, राजनैतिक व सामाजिक परिदृश्य:

✍ डॉ० तारालक्ष्मण गहलोत

स्वतन्त्रता संग्राम के शंखनाद-'अंग्रेजों भारत छोड़ो' 'करो या मरो' 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' के नारों ने साहित्यकारों की लेखनी को देश पर मर मिटने हेतु प्रेरित करने वाले गीत लिखने की प्रेरणा दी। आजादी के दिवाने राजस्थान के राजनेता, कवि व कवयित्रियां राष्ट्रप्रेम बलिदान, क्रान्ति, हुंकार व समाजिक समस्याओं को समाप्त कर स्वातन्त्रयोत्तर काल के मधुर इनद्रधनुषी सपनों के संसार की काव्यमय रचनायें करने लगे।

काल के शिलाखण्डों को तोड़ते, रचनाधर्मिता के निरन्तरता बोध ने राजस्थान की कवयित्रियों को सदैव सामाजिक सरोकारों से जोड़े रखा है। यहां तक कि उनकी अपनी निजी आकांक्षाओं के रचना विधान के तले भी सामाजिक चिन्ताओं ने ही रूपाकार ग्रहण किया है। रेतीले अक्षरों में लिखी सुनहरे भोर की प्रतिक्षा में अंधेरे पीती, स्वच्छन्द आंधियों से जूझती, सामाजिक संवेदना के तरल-गरल तंतुओं से निर्मित कुछ समर्थ कवितायें हमारे चिन्तन का ध्यान आकर्षित करती हैं।

छठवें दशक और उसके पश्चात की समकालीन लेखिकाओं ने बिना किसी नारे बाजी और आन्दोलन के अपनी संवेदनाओं की अनुभूतियों को विस्तृत व विभिन्न फलकों पर उकेरा है। अछूते बिम्बों की कलात्मक संयोजना ने भाव और भाषा के नये क्षितिज तलाश किये हैं। अनुभूतियों की तपिश ने उसे अभिव्यक्ति के सशक्त स्वर दिये हैं और उनके चिंतन को एक नया आकाश दिया है। राजस्थान की वरिष्ठ एवं देश में स्थापित लेखिकाओं ने अपने समय की धड़कन से नई संवेदनाओं की आहट लाने वाली युवा लेखिकाओं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि राजस्थान का महिला लेखन अपने आस पास से बेखबर केवल व्यक्तिगत संसारिक ही लेखन नहीं है, बल्कि यह समाज व व्यक्ति का भोगा, देखा व अनुभव किया हुआ यथार्थ है, जो समाज की समिकृत संस्कृति का स्वप्न द्रष्टा बन कर यथार्थ के वस्तुनिष्ठ समीकरणों में अभिव्यक्ति पाता रहा है।

साठोत्तर राजस्थान की महिला रचनाकारों का हिन्दी लेखन तीन प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

पहली श्रेणी में वह शोधर्पूण साहित्य आता है जिसे विभिन्न विश्वविद्यालयों की हिन्दी में पीएच० डी० की उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध के रूप में लिखा गया और डिग्री प्राप्त करने के पश्चात पुस्तक रूप में प्रकाशित कराया गया। इस का क्षेत्र व विषय विशाल है। रामायण के पात्रों, साहित्य सौंदर्य भावभूमि से लेकर साहित्य के सभी कालखण्डों के सन्तों, कवियों, लेखको, व भक्तों से होते हुए अज्ञेय, नागार्जुन व आज तक के साहित्यकारों-उनके व्यक्तित्व व कृतित्व, कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक निबन्ध, आलोचना, उनके नारी पात्र भाव-भूमि सामाजिक पक्ष आदि सभी अंगों पर विस्तृत शोध व आलोचनायें हैं। इससे हिन्दी साहित्य का भण्डार गुणात्मक व संख्यात्मक दोनों रूपों में समृद्ध हुआ।

दूसरी श्रेणी में हिन्दी साहित्य में स्वतन्त्र चिंतन युग बोध व समकालीन सामाजिक सोच को लेकर लिखे गये- कहानी, उपन्यास, काव्य, नाटक, संस्मरण, हास्य व्यंग्य, निबंध, आलोचना आदि हैं। महिला रचनाकारों का अधिकांश साहित्य इसी श्रेणी में आता है और इस परिपत्र में आगे चलकर इस पर ही विस्तार से प्रकाश डाला जायगा।

तीसरी श्रेणी में वे रचनायें आती हैं, जो विषय वस्तु की दृष्टि से विशुद्ध साहित्य की सीमा रेखा का उल्लंघन कर साहित्येत्तर विषयों -यथा वस्तुकला, पाक कला, बालक, मातृत्व, पोषण, आहार विज्ञान आदि विषयों पर मौलिक लेखान अथवा अनुवाद आदि को अपने में समेट कर हिन्दी भाषा के साहित्य भण्डार को भरते हैं।

साहित्यिक पृष्ठ भूमि: काव्य की भावभूमि:

काल के शिलाखण्डों को तोड़ते, रचनाधर्मिता के निरन्तरता बोध ने राजस्थान की कवयित्रियों को सदैव सामाजिक सरोकारों से जोड़े रखा है। यहां तक कि उनकी अपनी निजी आकांक्षाओं के रचना विधान के तले भी सामाजिक चिन्ताओं ने ही रूपाकार ग्रहण किया है। रेतीले अक्षरों में लिखी सुनहरे भोर की प्रतिक्षा में अंधेरे पीती, स्वच्छन्द आंधियों से जूझती, सामाजिक संवेदना के तरल-गरल तंतुओं से निर्मित कुछ समर्थ कवितायें हमारे चिन्तन का ध्यान आकर्षित करती हैं। समाज हमारी धारणाओं, कल्पनाओं और आशाओं की रंगभूमि व कर्मभूमि है। हमारी रचना और

सर्जना संसार भी समाज से प्रतिबद्ध है-यह प्रकृति और समाज के सायुज्य का प्रतीक है। नारी का स्वतः स्फूर्त काव्य संसार, आज उसके अंतरंग परिवेश का उद्घाटन अश्रुविगलित दीन पुकार-बेचारगी व असहायता, निर्बल रोती प्रतिमा के रूप में न होकर एक वस्तु-परक-प्रयोजनवादी लोक कल्याणमयी चेतना स्वकीय संबोधित होते हुए भी उस में युग परिवर्तन की संकल्पना का संदेश है।

काव्य संसार: सामाजिक परिवर्तन और पाश्चात्य प्रभावों की आंधी ने जहां एक ओर रूढ़ियों का विध्वंश किया है, वहीं मूल्य विघटन ने मानवीय संवेदनाओं की सहजता व सरलता को सोख लिया है। अर्थ प्राप्ति व प्रदर्शन जीवन का एक मात्र उद्देश्य बन गया है। आम आदमी अतृप्ति व असन्तोष की चरम सीमा तक महत्वकांक्षी बन गया है। रागात्मक व भावात्मक जीवन मूल्यों के लिए संकट पैदा हो गया है। अवसरवादिता, स्वार्थान्धता, बेइमानी सीना तान कर सिर उठा कर खड़े भ्ष्टाचार के सुमेरू पर्वतों ने समाज में अव्यवस्था व विषमता उत्पन्न कर दी है। अवमूल्यित समाज में अव्यवस्था, दायित्वहीनता, सत्ताधीशों की निरंकुश तानाशाही ने आम आदमी की आकांक्षाओं को विखण्डित कर जीवन को दुरूह बना दिया है। समाज की छाती पर भूख, गरीबी और बेकारी सिसक रही है, तिस पर पाश्चात्य संस्कृति की कोख से उत्पन्न 'अपसंस्कृति' ने नैतिक मूल्यों के ह्रास में कोई कसर नहीं छोड़ी है। राजस्थान की कवयित्रियों ने इन स्थितियों के तल में जाकर छानबीन की है और उनकी सघन जटिलताओं के प्रति अपने नुकीले तीखे आक्रोश को भी प्रतिकों में व्यक्त किया है। सावित्री परमार, रमासिंह तारालक्ष्मण गहलोत, सावित्री डागा, सुधा गुप्ता, प्रभा वाजपेयी आदि की कविताओं में ये ही स्वर मुखरित हुए हैं।

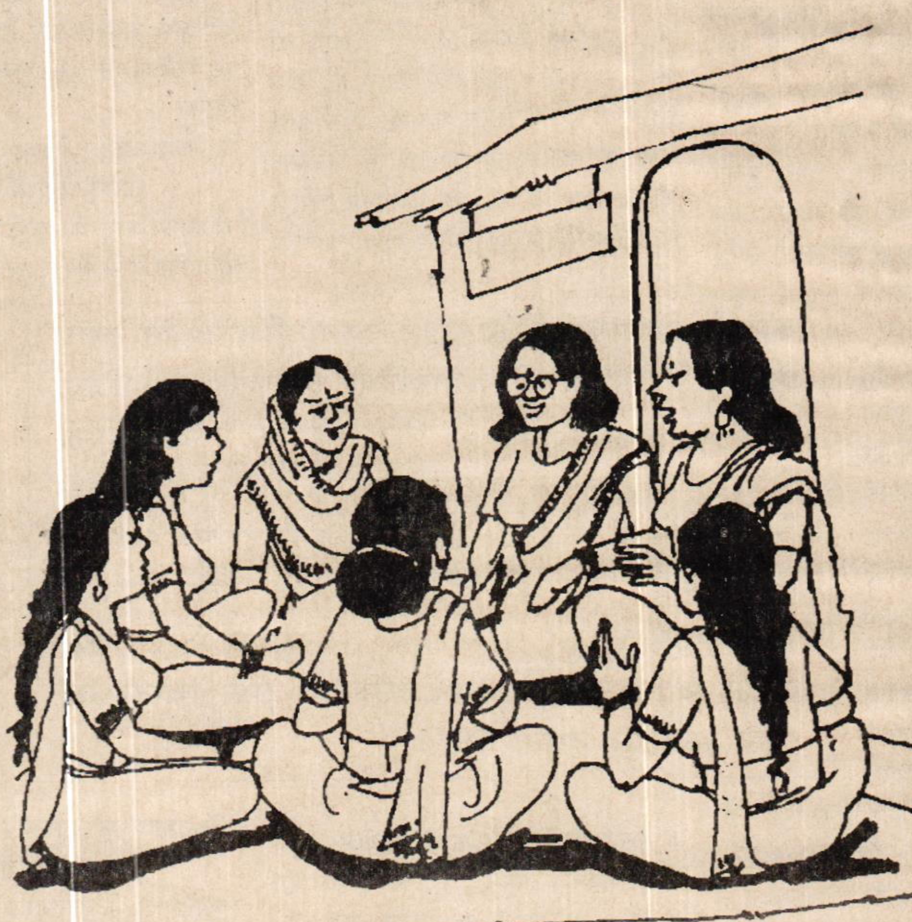

सावित्री परमार को लगता है कि हमारे भीतर एक विशाल इस्पाती कारखाना खुल गया है, जहां हृदय में हरदम नुकीले धारदार हथियार बनते रहते हैं, तभी तो हर सांस के साथ हम इधर उधर गली चौराहों, राजमार्गों पर खुलेआम मानवता को भूनते रहते है। उपलब्धियों के मापदण्ड में मानवीय मूल्यों के भग्न खण्डहरों और तानाशाहों की महत्वकांक्षाओं के अमानवीय जंगलों में भटकती उनकी पीड़ा करूण कठिन शब्दों में गूंज उठती है-

'अल्शेशियन संस्कृति को ओढ़ कर
जख्मी करते हैं, आस्थाओं को
स्वार्थ-भय-घृणा और अविश्वास की
खोदी है नींवें हमनें
भूख प्यास की उगाई है फसलें'

पीड़ित शोषित जन के लिए चिन्तित, व्यवस्था सत्ता और और अनाचार के विरूद्ध संघर्षरत राजस्थान की कवियित्रियों में सुधा गुप्ता, तारालक्ष्मण गहलोत, सावित्री डागा, प्रेम जैन, सुदेश बन्ना, विभा सक्सेना, आदर्श मदान, स्वर्णलता, रजनी अग्रवाल, सुमन बिंस्सा, प्रभा ठाकुर, प्रभा वाजपेयी, मंजू भटनागर, रजनी कुलश्रेष्ठ, राजकुमारी कौल, शान्ति मेहरोत्रा, शील व्यास आदि प्रमुख हैं।

तारालक्ष्मण गहलोत नारी सबलीकरण व सशक्तीकरण का बिगुलबजा कर नारी को उसके परम्परावादी रूप **अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आंखों में पानी** से बाहर खींच निकालकर उसे जगाया है- 'नारी! जागो! मूक रहो मत,

अब दुर्गा का रूप धरो तुम,
तुम्हें मारने हाथ उठे जो
उन्हे काट अब दूर करो तुम"

तो कहीं वे सीता से प्रश्न करती हैं कि क्यों

दी तूने अग्नि परीक्षा? तो कहीं लड़कियों को फटकारता है कि 'लड़की तुम क्यों चुप रहती हो, उठो सबल बनों! **सशक्त बनों।**

जिन्दगी के कड़वे मीठे क्षणों को कागज की घरती पर बोने वाली प्रभा ठाकुर ने भी अपनी कविताओं में इसी यथार्थ का चित्रण किया है। राजस्थान की कवयित्रियों ने जहां एक ओर राष्ट्र प्रेम का शंखनाद किया है, तो कहीं रूमानी भावुकता का सफर, कहीं नियति के साथ विवश समझौता, कहीं नैराश्य ऊब, निर्वासन और असन्तोष के स्वर भी मुखरित किये हैं।

कहानी उपन्यास व अन्य लेखन: भावभूमिका घरातल–

राजस्थान की कहानी व उपन्यास लेखिकाओं ने अपनी निष्ठा में आश्वस्त अपने रचना संसार को अपने निज की मौलिक बुनावट से अपनी जमीन स्वयं बनाई है। उनके लेखन में कोरी आक्रामकता ही नहीं है वरन आज वह अपनी अस्मिता को पहचान कर ठोस राजस्थान का महिला राष्ट्रीय स्तर पर जो लेखन हो रहा है उसमें राजस्थान का महिला लेखन भी हमारी शताब्दी की बुनियादी समस्यायें जख्म और उपलब्धियां स्त्री पुरुष समानता व साहचर्य, कार्यशील महिलाओं की समस्यायें– संघर्ष व चुनौतियां, प्रेम का त्रिकोणीय संघर्ष विवाहेत्तर प्रेम प्रंसगों में उलझे स्त्री-पुरुष, स्वच्छन्द यौन संबंध, अवांछित व अवेध मातृत्व सेक्स, पुरुष इगो, पारिवारिक बिखराव वैवाहिक सम्बंधों में दरार, नौकरी पेशा अकेली रुप से स्वावलम्बी होना, सबलीकरण, सशक्तिकरण, साक्षरता, वृद्धों की समस्यायें आदि ने उनके चिन्तन को एक नया आकाश दिया है, और सोच को एक नया घरातल दिया है। अछूते बिम्बों की कलात्मक संयोजना ने भाव, भाषा और प्रस्तुति के नये क्षितिज तलाश किये हैं, जिन पर संवेदनाओं की यही चेतना अलग-अलग भंगिमांओं में अभिव्यक्त हुई है, सामाजिक चेतना व सरोकारों के विभिन्न स्तरों में केन्द्रित हुई है। वे सभी समकालीन संकट, प्रसंग संदर्भहीनता, अनास्था, अंधेरा, अपरिचय दिखावा आदि व मूल मुद्दे हैं, जिन्होंने राजस्थान के महिला लेखन को प्रभावित किया है।

राजस्थान की कहानी व उपन्यास लेखिकाओं के मुख्य विषय रहे हैं-नारी की अवमानना, आत्मक्षोभ, व आत्म चेतना के सोपान मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर नारी जीवन की मृगतृष्णा, भटकाव, बिखराव, अकेलापन प्रेम बंधन, समझौता, आत्म समर्पण, सहानुभूति बदली हुई सामाजिक आर्थिक स्थितियों के संदर्भ में नगरीय जीवन शैली के समकालीन संघर्ष धोखे, यातनायें असमानतायें, स्वच्छन्द व उन्मुक्त यौन संबंध यौन शोषण आदि पर बेबाक अभिव्यक्ति हुई है। इन उपन्यासो व कहानियों से गुजर कर ऐसा लगता कि मानों पैनी क्रूर अमानवीय हवाओं के आतंक से रिश्तों की मिठाश में भी कहीं स्वार्थो की अंधियारी नगरी की रचना कर दी है।

राजस्थान की जिन कथाकारों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सशक्त पहचान बनाई है, उन में प्रमुख हैं मन्नू भण्डारी, दिनेश नन्दिनी डालमिया, प्रभा सक्सेना, सावित्री परमार उषा महेश्वरी, सावित्री रांका, सरला अग्रवाल, दिप्ति कुलश्रेष्ठ, विभा सक्सेना आदि।

मन्नू भण्डारी ने आधुनिक जीवन के कुछ व्यापक गहन एवं वास्तविक संदर्भो में अत्यन्त संवेदनशील स्थितियों में भावनात्मक रूप से व्यक्तियों को एक दूसरे से टकराते, जुड़ते, टूटते और तोड़ते हुए दिखाकर हमारी समझ को अधिक व्यापक, गहन और प्रौढ़ बनाने का प्रयास किया है। उनकी 'मैं हार गई','एक प्लेट सैलाब,' 'यही सच है','तीन निगाहों की एक तस्वीर,' 'त्रिशंक' 'आंखों देखा भूठ' आदि में आज के व्यक्ति के भावनात्मक अन्तर्द्वन्द्ध उथल-पुथल व सामाजिक विषमताओं का सटीक चित्रण है।

उषा माहेश्वरी की कहानियां-बहू का सपना,' सुबह की धूप' आदि में सम्बन्धों को आहत करते, विसंगत भौतिकता के प्रभाव को रेखांकित करती, वैयक्तिक दुखों के रोने धोने से ऊपर उठ कर सम्भावनाओं की ओर बढ़ती इनका लेखन निरन्तर सार्थकता की ओर अग्रसर है।

मानवीय संवेदना, दरकते रिश्तों का खुलापन, छल और नारी का स्वयंसिद्धा रूप सुदेश बन्ना की कहानी **छूत और आकाश, अकालग्रस्त रिश्ते**-(विभा रश्मि) **जड़ों की तलाश** (नील प्रभा भारद्वाज) के कहानी संग्रहों में कमोबेश व्यक्त हुआ है। यही मूलभाव सुषमा चौहान (कतरा कतरा जिंदगी) मनमोहनी, सरला अग्रवाल (एक कतरा घूप, मुझे बेला से प्यार है और मुठ्ठी भर उजास) दीप्ति कुलश्रेष्ठ के कहानी संग्रहों परिणति' और 'किससे करें फरियाद' की कहानियों में प्रकट हुआ है। आनन्द कौर व्यास की कहानियों का भी यही फलक है।

अजरानूर व कुसुमलता मेघवाल की कहानियां जहां एक ओर सर्वहारा की पीड़ा के प्रति मार्मिकता जगाती है, वहीं विश्वास की टूटी हुई इमारत के मलबे तले दबी नारी अस्मिता की करुणा को भी व्यक्त करती है। विभा सक्सेना की कहानियां बदलते जीवन मूल्यों और टेक्नोलोजी से प्रभावित कहानियां हैं।

सुमन मेहरोत्रा की कहानी क्रमशः- नारी को मात्र देह समझने वाले उन तमाम पुरुषों के प्रति एक धधकते ज्वालामुखी का ज्वलित पिण्ड है, जो समाज की सारी सुन्दरताओं की लक्ष्मण रेखाओं, मर्यादाओं व मूल्यों को ध्वस्त करके बलात्कार जैसे घिनौने कार्य में लिप्त रहते हैं। कहानी के तेवर नई जमीन फोड़कर उपजे कथानक के माध्यम से नये चश्मे से पुरुष समाज को कुछ नये संदर्भो में रख देखते हैं।

'सूरज डूबने से पहले' और 'एक ओर आकाश' क्षमा चतुर्वेदी की ये कहानियां अपने परिवेश के आसपास अपनी जमीन तलाशती, आत्मीय सम्बन्धों के स्थान पर अर्थाभाव से जुड़ी स्वार्थ प्रवृति की अभिव्यक्ति है। तमतमाये चेहरों के अक्स, और नीले नीले फूल पुष्पलता कश्यप की इन कहानियां में जीवन की कड़वी सच्चाइयों में भटकते चेहरों को समयगत संदर्भ एवं मानवीय करुणा के परिप्रेक्ष्य में व्यक्त करने का एक प्रयास किया है।

उपन्यासः-

उपन्यास के क्षेत्र में राजस्थान की लेखिकाओं ने हिन्दी साहित्य के भण्डार में कई अनमोल रत्नों की निधियां दी हैं। मन्नु

भण्डारी का 'आपका बंटी,' 'एक इंच मुस्कान,' 'बिना दिवारों का घर,' 'महाभोज' आदि उपन्यास राष्ट्र की घरोहर है। दिनेश नंदिनी डालमियां के उपन्यास राष्ट्र की घरोहर है। दिनेश नंदिनी डालमियां के उपन्यास 'मुझे माफ करना,' ' आहों की बैशाखियां,' और 'कंदील का धुंआ' बेमेल विवाह की त्रासदी, घुटन और बिवश विद्रोह के ईमानदार दस्तावेज हैं।

प्रभा सक्सेना के उपन्यास 'अन्तर्यात्रा' और 'टूकड़ों में बँटा इन्द्रधनुष' परिवर्तित जीवन मूल्यों और आर्थिक दबावों के ...ते निम्न मध्यम वर्गीय नौकरी पेशा लड़कियों की मनोव्यथा व शोषण की सटीक अभिव्यक्ति है। नारी संवेदना की सुक्ष्मतम परतों को अनावृत करते ये उपन्यास पारिवारिक रिश्तों में भी स्वार्थ की मनोवृति का उद्घाटन करते हैं। दीप्ती कुलश्रेष्ठ के उपन्यास 'मुठ्ठी भर रोशनी', सफर के बीच' धुंध और धुंआ, तथा इनके कहानी संग्रहों परणिति, किससे करें फरियाद में नारी मन की अन्तरव्यथा व पीड़ा को सशक्त अभिव्यक्ति दे रहे हैं।

राजस्थान की प्रवासी साहित्यकार महिलायें अपने बहूआयामी लेखन से कविता, कहानी, उपन्यास आदि से हिन्दी साहित्य के भण्डार में श्रीवृद्धि कर रही हैं। इनमें प्रमुख रूप से अलका सरावगी (श्री कान्त वर्मा पुरस्कार प्राप्त) का उपन्यास कलिकथा-वाया बाइपास वर्ष 1998 की बहुचर्चित कृति है। इस कृति में लेखिका ने मारवाड़ी समाज के प्रति परम्परागत रूप से दुश्प्रचारित कंजूस की भावनाओं को ध्वस्त करके मारवाड़ी की व्याख्या कठोर परिश्रमी ईमानदार मितव्यती, सादा जीवन, दानदाता, शिक्षा प्रेमी व समाज सुधारक के रूप में की है। मारवाड़ी कोई विशेष कौम न होकर एक भावना है, जिसका सम्बन्ध परिश्रम आत्मनिर्भरता व धार्मिक सामाजिक क्षेत्र में यथासंभव दान देने से है।

हिन्दी साहित्य की लब्ध प्रतिष्ठित उपन्यासकार, कवयित्री नारीवादी चिंतक व लेखिका प्रभा खेतान का हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है। आपके उपन्यास मुख्य रूप से 'आओ पेपे घर चलें,' 'तालाबन्दी,' 'छिन्नमस्ता,' अपने चेहरे पीली आंधी, तथा अपरिचित उजाले, सीढ़ियां चढ़ते हुए मैं एक और आकाश की खोज में, कृष्ण धर्मा मैं काव्य संग्रह तथा तीन चितंन परक पुस्तकें-सार्त्र का अस्तित्व, शब्दों का मसीहा, सार्त्र और पहला आदमी अल्बेदा काम महत्वर्पूण है। आपने दक्षिण अफ्रीकी कविताओं को 'सांकलों में कैद क्षितिज' व सिमोन डी बनुआर की विश्वविख्यात पुस्तक 'द सेकण्ड सेक्स' का स्त्री उपेक्षित नाम से हिन्दी मे सफल अनुवाद किया है। आपकी कई कृतियों का अनुवाद बांगला, उड़िया व अंग्रेजी भाषाओं में भी हुआ है।

इधर कुछ नाटक- 'जलाल बूबना' (उषा माहेश्वरी) मौलसिरी के पेड़ के नीचे (सपना महेश), देखने में आये हैं किन्तु यह स्थिति सन्तोष जनक नहीं कही जा सकती।

यात्रा वृतान्त, साक्षात्कार और खोजी पत्रकारिता में सावित्री परमार व लक्ष्मी कुमार चूड़ावत देश में स्थापित गौरवशाली नाम है। सम्पादन, पत्रकारिता व साक्षातकार आदि में नलिनी उपाध्याय, अनुअग्रवाल, पुष्पा गोस्वामी तथा नवोदित कथाकार सुधा कावड़िया के नाम उभरते हैं। कुछ सशक्त रिपोर्ताज, रेखाचित्र, पत्र अदि आदि शिक्षक दिवस प्रकाशनों में जैसे मीरा चटर्जी औरों के लिए भी (शशि बाला शर्मा) मिल जाते हैं। समीक्षा के क्षेत्र में यद्यपि कुछ नाम जो उभरते हैं, वे संख्या में इतने कम हैं कि अपनी उत्कृष्टता के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी है। गद्य काव्य में दिनेश नन्दिनी डालमियां और विपुल निबन्धात्मक लेखन भी राजस्थान के महिला लेखन की महत्वपूर्ण धरोहर है।

वस्तुत: राजस्थान की लेखिकाओं के पात्र कहीं सामाजिक विसंगतियों, विडम्बनाओं असमानताओं, अन्याय व शोषण के शिकार बनकर अथाह भीड़ में भी अकेलापन महसूस करते दिखाई देते हैं, तो कहीं रिश्तों की जटिलता, मार्मिकता, टूटते छद्म रिश्तों की टीस भोगते, राजनीति एवं सामाजिक परिवेश की घिनौनी स्थितियों की परतें उघाड़ते नजर आते हैं।

वस्तुत: 1960 के दशक से और विशेष रूप से 1990 के बाद के वर्षो में सामान्यतया राजस्थान के महिला लेखन में समग्रत: क्रान्ति, जागृति, तेजी और जुंझारपन आया है, साहित्य की विभिन्न विधाओं में जो गुणात्मक व संख्यात्मक अभिवृद्धि हुई है, वह निश्चित ही सुखद संकेत है। राजस्थान का यह महिला लेखन भारत के अन्य प्रान्तों की तुलना में कहीं अधिक सजग व स्तरीय है। बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक परिवेश का यह एक सजीव दर्पण है।

सम्पर्क: मेड़ती गेट के अन्दर
जोधपुर- 342002 (राजस्थान)
फोन नं०- 0291- 548631

पाँच क्षणिकाएं

स्वयं को
मरा मानकर
जीता हूँ ,
जिस दिन
जिन्दा होकर जीऊँ
तो शायद
मर्डर हो जाय ।

सस्ती
जान को छोड़कर
यहाँ
सब कुछ
महंगा है

इस
शरीर को
बगैर
खटाये मरा
तो बड़ा
अफसोस होगा

अभी
आदमी को
आदमी
का अर्थ
जानना है ।

जीते-जीते
मर जाने से
बेहतर है
मरते-मरते
कुछ कर
जाना।

सम्पर्क : दुर्गाशरण मिश्र
व. अधी. (हिन्दी)
भा. विमानपत्तन प्राधि.
हवाई अड्डा, पटना

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Mr. Devendra Kumar Singh
C. M. D.

022 - 8974777(O)
Fax : 8974777(F)
9525255285

Office :

Anurag Mansion, Shiv Vallabh Road
Ashok Van, Dahisar (East), Mumbai-400 068

Factory :

Plot No. 10, dewan&Sons, Udyog Nagar, Palghat,
Distt. - Thane, Mumbai (Maharashtra)

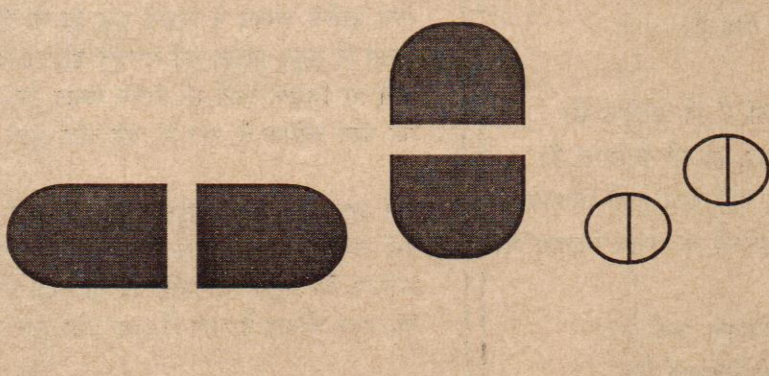

राजनेता

रणजीत सिंह "परमार"

प्रजातंत्र में आज नेताओं की नहीं कोई कमी है।
राजनीति के गलियारे में, नेताओं की भीड़ जमी है।
नजर जिधर फिराओ, उधर नेता ही नेता हैं।
देखो इनकी वेशभूषा, लगते बड़े अभिनेता हैं।

मूर्ख बना रहे जनता को, नेताओं के वेश में।
लूटपाट मचा रहे हैं, आज दिनदहाड़े देश में।
जनतंत्र हो या लोकतंत्र, सारा तंत्र तमाशा है।
निर्धन ही पिसते हैं इसमें, समझते सभी बताशा हैं।

चुटकी में मसलकर निर्बलों को, उल्लू सीधा करते हैं।
सत्ता में आकर फिर वही, मधु-रस पिया करते हैं।
राग छेड़ प्रजा की दुखों का, अपनी राजनीति करते हैं।
बेकसूरों की हत्या को, वे इसे अन्तिम परिणति कहते हैं।

उनकी मातम पूर्सी पर देते हैं, उन्हें ढेरों आश्वासन।
ठंढा होते ही चिता की आग, भूल जाते अपना वचन।
गरजते हैं बरसते हैं, हत्यारों को नहीं छोड़ा जायेगा।
न ही फिर कोई नरसंहार की, नई कहानी जोड़ा जायेगा।

पर कितना दम है उनके कहने में, सभी जानते हैं।
घूम रहे अपराधी छूट्टे, आप सभी पहचानते हैं।
अरे ढोंगी हैं ये सब, स्वार्थ में ही अंधा हैं।
पार्टी बदलना इनका, रोज-रोज का धंधा है।

आज यहां सभी नेता, घोटालों में ही संलिप्त हैं।
घोटाला सुन-सुनकर जनमानस, हो रहे विक्षिप्त हैं।
प्रजा की मिहनत की कमाई, नहीं खर्च होती विकास में।
खर्च हो जाती है वह, राजनेताओं के वैभव विलास में।

इनके कथनी और करनी में, देखो कितना फर्क है?
इनके भरोसे यदि रह गये तो, समझो बेड़ागर्क है।

संपर्क: गोकुल पथ, (नाला पार)
उत्तरी पटेल नगर, पटना-24

लौह-पुरुष

राम उपदेश सिंह 'विदेह'

यह प्रश्न कौंधता है, मन में, वह लौह-पुरुष कैसा था?
था ठोस गठीला तन उसका, संकल्प सुदृढ़ मन में था,
ग्रामीण वेष-भूषा उसकी, साधारण वह जन में था,
इस्पात भले मानस उसका, पर हृदय मोम जैसा था,
यह प्रश्न कौंधता है, मन में, वह लौह-पुरुष कैसा था?

अहमदाबाद की नगरपालिका का जब वह अध्यक्ष बना,
ईमानदार स्वच्छतापूर्ण जीवन ही उसका लक्ष्य बंना,
व्यवहार मृदुल मृदुभाषी से, वह जैसे को तैसा था,
यह प्रश्न कौंधता है, मन में, वह लौह-पुरुष कैसा था?

कुछ और वर्ष यदि जी जाता, भारत का सेहरा होता,
सान्निध्य मात्र मिलता, भारत का भाग्य दूसरा होता,
जिसको इतिहास स्मरण करता, सरदार पुरुष वैसा था,
यह प्रश्न कौंधता है, मन में, वह लौह-पुरुष कैसा था?

यह भारत जब आजाद हुआ, तब बंटवारे का आलम था,
शत-शत रियासतें एक सूत्र, करने का भारत कहां कम था,
बिस्मार्क बना वह भारत का, भारत सपूत वैसा था,
यह प्रश्न कौंधता है, मन में, वह लौह-पुरुष कैसा था?

अनगिनत निरंकुश शासक भी, उसके समक्ष जब आते थे,
पावन चरित्र की गरिमा थी, उसके भय से थर्राते थे,
जन कोटि-कोटि न्यौछावर है, खादीधारी ऐसा था,
यह प्रश्न कौंधता है, मन में, वह लौह-पुरुष कैसा था?

निज पुस्तैनी मकान में जिसने एक ईंट ना जोड़ी थी,
मानस में सुदृढ़ प्रतिज्ञा की मजबूत डोर ना तोड़ी थी,
मरने पर जिसके खाते में, निर्धन समान पैसा था,
यह प्रश्न कौंधता है, मन में, वह लौह-पुरुष कैसा था?

क्यों आज यहां उस महापुरुष की याद सभी को आती है?
क्यों कवि विदेह के मानस पर सजीव चित्रण उभराती है?
इसलिए कि पहला गृह मंत्री, तो गृह मंत्री जैसा था,
यह प्रश्न कौंधता है, मन में, वह लौह-पुरुष कैसा था?

संपर्क: आई०ए०एस० कॉलोनी,
किदवईपुरी, पटना-1

इतिहास का प्रवाह

के०जी० बालकृष्ण पिल्लै

इतिहास
अनवरत लिखा जा रहा है
घर-घर का
गांव-गांव का
देश-देश का
पूरे विश्व का इतिहास।
अपने घर के इतिहास को भी
मैं कोई मोड़ नहीं दे पाता
घर के इतिहास की धारा
मुझे बहा ले जाती है
मैं तैर रहा हूँ
उसी प्रवाह के साथ जानते हुए
कि यह प्रवाह
समुद्र की ओर है!

तिरूवनंतपुरम

जीवन-नौका

पति-पत्नी दोनों
जीवन की नाव
खे रहे हैं
खेते जा रहे हैं!
पति पूरब की ओर
पत्नी पश्चिम की ओर!
नाव
आगे बढ़ना तो दूर,
धारा के प्रवाह में
पीछे जा रही है
डगमगाती हुई
डवां-डोल होती हुई।
डर है
अब डूबी
अब डूबी।

संपर्क: गीता भवन,
पेरूर कटा-पो०
तिरूवनंतपुरम,
पिन-695005

गज़ल

गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव

गज़ भर जुबान लंबी आखों में शरर है
घर की चहारदिवारी में बरपा ये कहर है।

बाबुल की चश्मेनूर तो मइया की दुलारी
खूंटे से बंधी गाय अब किसको खब़र है।

पीहर से नहीं लाई कारूं का खजाना
ज़िल्लत के जंगलों में अश्कों का शज़र है।

सब गल्तियां उसी की सब ऐब भी उसी के
अब मौन रह के पीना राणा का ज़हर है।

मेंहदी लगी हथेली सिंदूर मांग दमके
सुलगे न कोई आतिश हरदम ये फ़िकर है।

बेटा नहीं जने तो मनहूस कही जाए
अपमान मां का करते मर्दों का शहर है।

संपर्क: सदस्य, कैट, अहमदाबाद

उसका इंतजार है!

अन्सिल्ला सिक्वेरा

पश्चिम में सूरज डूब रहा है,
पंछियां अपने घर जा रहीं हैं,
लेकिन वो क्यों चुप बैठी है?
शायद किसी का इंतजार कर रही है।
दिन, हफ्ते, महीने गुजर गये हैं,
एक बरस बीत गया है।
लेकिन वो अभी भी बैठी है।
किस दिन का वो इंतजार कर रही है?
सब लोग समझाकर चले गये,
लेकिन वो उसी शून्यता पर बैठी है।
उसे अपने प्रेमी का इंतजार है,
क्या उसका प्रेमी आयेगा?
वही सूरज, वही पंछियां, वही आसमान,
कुछ भी नहीं बदला है।
वो भी अपने ख्यालों में खोयी है,
कि मेरा प्रेमी जरूर आयेगा.........।

संपर्क : स्टेल्ला मारिस कॉलेज, चेन्नै

तुम्हारा होता

पुष्पा यादव

1
सुबह पलके जब खुली
मैने देखा
तुम्हारा ही रूप प्रतिबिंबित है
सुबह तुमसे हुई
रात जाने क्या गुल खिलाएगी

2
तुम्हारे पास होने का
ख्याल कुछ इस तरह है
जैसे कुछ देर के लिए
बादलों में छिपा हो चाँद

3
आज बरसात नही हुई
रात, बेवक्त गुफ्तगू करती रही
कभी संजीदा हुई
कभी तुम्हारे बालों में उँगलियाँ फेरती रही
देर तक थिरकती रही एक पाँव पर
मचलती रही, तुम्हारे पास होने के अहसास से

4
बादल गरज रहे हैं
शायद बरसात हो
और दूर कहीं
टिमटिम सी रौशनी में
तुम्हारी मुझसे मुलाकात हो
तुम परेशान न हो
नहीं पूछूँगी तुमसे
कि अब तक
तुम कहाँ खोये थे।

सम्पर्क : राहुल नगर, आजमगढ़
(उ. प्र.)

यादें

संगीता

सागर की लहरों को
जैसे रेत बहा ले जाती
काश ! उसी तरह
हमारी बीती यादों को
हवा, उन तक पहुँचा पाती........

'पोटो' जो सदन के पटल पर प्रस्तुत न हो सका

✍ शिव कुमार सिंह

विश्व के कई देशों सहित भारत भी आतंकवाद का दंश पिछले कई वर्षों से झेल रहा है। वर्तमान समय में हमारे देश की स्थिति अत्यन्त गंभीर है। हर जगह आतंकवाद अपना सर उठा रहा है। हिमालय से लेकर सुदूर दक्षिण सागर माथा तक एवं मराठवाड़ा से लेकर गारो पर्वत तक आतंकवाद की फसल लहलहा रही है, कभी लाल किला विस्फोट, कभी कश्मीर विधानसभा तो कभी भारतीय संसद भवन पर आतंकवादी हमले इसका साक्षी है। आतंकवादियों की इन गतिविधियों से यह साफ जाहिर होता है कि वह कमर कसकर देश के भीतर जहां-तहां हमले करेंगे। बाहरी और भीतरी आतंकवादी घटनाओं में निरन्तर वृद्धि के मद्देनजर आंतरिक सुरक्षा और देश की अखंडता की रक्षा के लिए आतंकवाद विरोधी कानून का होना अनिवार्य है। कुछ इसी ख्याल से केन्द्र की सरकार ने **टाडा** की तरह आतंकवाद निरोधक अध्यादेश **पोटो** (प्रिवेंसन ऑफ टेररिज्म आर्डिनेन्स) को कानून बनाने का संकल्प किया। राष्ट्रहित में विश्वास एवं इच्छाशक्ति के अभाव में परस्पर विरोधी तेवर से लोकोपयोगी व आतंकवादी हमलों से बचाव व सम्बन्धित कार्य का सही पालन व सख्त कानून का न होना राष्ट्र के लिए दुखदायी है। और जब सरकार आतंकवाद से निपटने के लिए ऐसे **पोटो** सरीखे कानून का प्रस्ताव पारित कराना चाहती है तो इसका स्वागत किया जाना चाहिए। परन्तु संसद से पारित कराना तो दूर विपक्षी दलों ने उसे सदन के पटल पर प्रस्तुत करने से रोका तथा संसद को ठप्प किया।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि जिस प्रकार व्यक्ति से बड़ा समाज होता है उसी प्रकार राजनीतिक दल से बड़ा देश है जहां मानवता को बड़ा स्थान दिया गया है। अगर कोई कार्य मानवहित में किया जा रहा हो तो उसके लिए आत्मबल, नैतिकता एवं इच्छाशक्ति की जरूरत होगी जिसका अभाव आज राजनीतिक दलों एवं उसके नेताओं में दिखता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा **पोटो** कानून का विरोध करना निश्चय ही अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। इनके विरोध का मुख्य मुद्दा इसके संभावित दुरुपयोग पर आधारित है। सही तो यह होता कि विपक्षी दलों द्वारा यह सुझाव पेश किया जाता कि इस कानून के तहत दुरुपयोग करने वालों को सजा देने का प्रावधान किया जाए। भारतीय दंड संहिता का दुरुपयोग तो आए दिन होता है तो इसका अर्थ यह तो नहीं होना चाहिए कि इस दंडसंहिता को ही समाप्त कर दिया जाए।

दरअसल विपक्ष इस बात से चिन्तित है कि यह **पोटो** अल्पसंख्यकों के विरूद्ध उपयोग किया जाएगा जो सही नहीं है। देश तथा समाज के हितों के विरूद्ध चाहे जिस समाज, धर्म व सम्प्रदाय के लोग आतंकवाद फैलाएंगे वे ही इस कानून के शिकार होंगे। इसमें अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक की बात कहां उठती है? हाँ, यह तथ्य है कि आतंकवाद मुस्लिम देशों की उपज है। आपने देखा नहीं अपने देश में तालिबान और लादेन के समर्थन में मौलाना बुखारी और उनकी मानसिकता रखनेवाले कितने ही शहरों में लोगो ने प्रदर्शन किए। आतंकवाद परस्त ऐसे व्यक्तियों के विरूद्ध यदि पोटो के तहत कार्रवाई होती है तो वह कार्रवाई अल्पसंख्यक के विरूद्ध कदापि नहीं जाएगी। आखिर संसद पर पिछले दिनों किए गए हमले के आतंकी दो महीने दिल्ली में कहां और किसके सहयोग से छिपे रहे, इसका तो सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

पोटो के तहत पुलिस प्रशासन को असीम अधिकार देने का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्त अपराधियों को आजीवन कारावास तथा 10 लाख रुपये तक जुर्माना करने का भी प्रावधान है। आतंकवाद से आखिर कौन लड़ता है? आतंकवाद से मुख्यत: हमारा पुलिस प्रशासन, सैनिक अर्द्धसैनिक बल लड़ते हैं। उन्हें अगर कानूनी अधिकारों से लैस नहीं किया गया तो आतंकवाद का सामना करने में कठिनाई तो होगी ही। अमेरिका तथा ब्रिटेन में तो तत्काल आतंकवाद से लड़नेवाले जवानों को पुख्ता कानूनों से लैस कर दिया गया। किसी ने विरोध की आवाज नहीं उठाई। ऐसे कानून अमेरिका, ब्रिटेन के अलावा फ्रान्स तथा कनाडा आदि देशों में बने हुए हैं। आतंकवाद जैसी गतिविधियों से निपटने के लिए अपने देश में भी महाराष्ट्र की विधान सभा ने जो कानून बनाया है वह पोटो से कहीं अधिक कड़ा है। यही स्थिति कर्नाटक में बनाए गए कानून के साथ भी है। दोनो ही जगहों में कांग्रेस का शासन है। टाडा भी तो कांग्रेस से बनाया था। प० बंगाल में वामपंथी सरकार का नेतृत्व कर रहे मुख्य मंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य ने भी आतंकवाद से लड़ने के लिए कठोर कानून बनाए हैं। तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश ने भी ऐसे कानून बनाए हैं। सच कहा जाए तो पोटो का विरोध करने के पीछे उ०प्र० का चुनाव और मुस्लिम वोट बैंक की राजनीति है।

अमेरिका के राजनीतिक दल आतंकवाद का सामना होने पर राष्ट्रीय हित और सुरक्षा को सर्वोपरि महत्व देते हैं। मानवाधिकार भी उनके लिए गौण हो जाता है। भारतीय लोकतन्त्र का स्वास्थ्य वैसा नहीं है। यहां मुस्लिम वोट बैंक की पूजा करनेवाले इस बात का भी ध्यान नहीं रखते कि कल को वह स्वयं सत्ता में आ सकते हैं और उन्हें देश के आंतरिक और वाह्य सुरक्षा के संकटों से निपटना पड़ सकता है। डपोरशंखी शब्दों की आड़ में आतंकवाद की अनदेखी करना, उसको बढ़ावा देना ही है। इसलिए समय का तकाजा है कि भारतीय लोकतन्त्र की रक्षा के लिए बढ़ते आतंकवाद को खत्म करने का समुचित उपाय खोजा जाए। शुक्र है कि कुछ संशोधन के साथ पोटो 1 जनवरी 2002 से लागू हो गया है।

सम्पर्क:- द्वारा कृष्ण नन्दन प्रसाद
राम विलास चौक, पूर्वी ईन्दिरा नगर,
पोस्टल पार्क, पटना

हिलसा के शहीद

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे, हर वर्ष मेले। वतन पर मरनेवालों का यही बाकी निशां होगा।"

प्रस्तुतिः मिथीलेश कुमार 'अकेला'

दिनांक 15 अगस्त 1942 की संध्या बेला में "अंगरेजों भारत छोड़ो" "करो या मरो" पूज्य महात्मा गाँधी के आह्वान पर हिलसा (नालन्दा) के नौजवानों ने अंगरेजी सरकार के शासन को उखाड़ फेंकने का दृढ़ संकल्प कर जोशपूर्ण " इन्कलाब-जिन्दाबाद" के गगनभेदी नारे बुलन्द किए और थाना पर तिरंगा झण्डा लहरा दिए । पुलिस बल पर कब्जा करना चाहा। बर्बर पुलिस बल खतरे से घबड़ाकर जान हंथेली पर लेकर उन्माद में गोली चलाना शुरू कर दिया परन्तु वीर नौजवानों एवं छात्रों ने साहसपूर्वक हँसते-हँसते छाती पर गोली को अंगीकार करते हुए थाना पर चढ़ाई कर दी, जिसके परिणामस्वरूप सैकड़ों देशभक्त घायल हुए और ग्यारह नौजवान भारत माता की दासता की बेड़ियों को तोड़ने हेतु शहीद हो गये। इन ग्यारह अमर शहीदों ने हिलसा का मस्तक गर्व से ऊँचा कर दिया। संध्या समय अंधेरा होते ही सारा नगर सूनसान हो गया। किन्तु उन्मादी पुलिस गिरे पड़े जवानों को थाना के पूरब खाता सं०-570 तथा खसरा सं-1996 परती भूखण्ड पर जमा कर जलाने के लिए पेट्रॉल छिड़क दिया। पेट्रॉल के ठंडक से बारह गिरे पड़े नौजवानों में से एक मियाँबिगहा निवासी श्री राम बिहारी त्रिवेदी की बेहोशी भंग हो गई। पुलिस ने उसे तुरन्त अस्पताल भेजा। इधर अग्नि ज्वलित कर एकादश(एक रूद्र) अमर शहीदों को भस्मसात कर दिया गया।

हिलसा के इस शहीद स्थल पर आजादी की बलिवेदी पर अपना अनाम उत्सर्ग करने वाले हिलसा के महान वीर सपूत निम्नांकित हैं-

(1) श्री भीमसेन महतो- इनके पिता स्व० मोहन महतो थे। ये 25 वर्ष के थे। ये ग्राम-इन्दौत, थाना-हिलसा, जिला-नालन्दा के निवासी थे। इनकी धर्मपत्नी अपने दोनों पुत्रों के साथ गाँव में ही रह रही हैं।

(2) श्री सदाशिव महतो- इनके पिता स्व० बुलक महतो थे। ये ग्राम-बढ़नपुरा, थाना-हिलसा के निवासी थे। ये 18 वर्षीय अविवाहित नवयुवक थे।

(3) श्री केवल महतो-पिता-स्व० मन्नू महतो, ग्राम-बनवारा, थाना-हिलसा के 32 वर्षीय नवयुवक थे।

(4) श्री सुखाड़ी चौधरी-इनके पिता रास बिहारी चौधरी थे। ये 18 वर्षीय अविवाहित नवयुवक थे।

(5) श्री दुखन राम- इनके पिता पाच्चू राम माहुरी थे। ये ग्राम-गन्नीपुर, हिलसा के निवासी थे। इनकी उम्र 21 वर्ष थी। इनका पुत्र हिलसा में ही दुकानदारी कर जीवन यापन कर रहा है।

(6) श्री राम चरित्र पासवान-पिता-श्री जानकी पासवान, उम्र-18 वर्ष, ग्राम-बनवारीपुर, थाना-हिलसा के अविवाहित नवयुवक थे।

(7) श्री बाल गोविन्द ठाकुर-पिता-श्री बुधन ठाकुर, घर-कछियावाँ, थाना-चण्डी के 25 वर्षीय युवक थे। इनका एकमात्र पुत्र डाक विभाग में सरकारी सेवा में कार्यरत है।

(8) श्री शिब्बी राम-इनके पिता-श्री बुलाकी राम थे। ये हिलसा के ही निवासी थे। उस समय ये 25 वर्ष के थे। इनका एकमात्र पुत्र इन दिनों गया शहर में दुकानदारी कर जीवन यापन कर रहा है।

(9) श्री नारायण पाण्डेय-इनके पिता-श्री सीताराम पण्डित थे। ये 18 वर्षीय अविवाहित नवयुवक थे। ये ग्राम- कछियावाँ, दरियापुर, थाना-चण्डी के निवासी थे।

(10)श्री हरिनन्दन सिंह-इनके पिता-श्री राम कृष्ण सिंह थे। ये ग्राम- मलाँमा, थाना-हिलसा के निवासी थे। ये 19 वर्षीय अविवाहित नवयुवक थे।

(11) श्री भोला सिंह-इनके पिता श्री मन्नू सिंह थे। ग्राम-बनवारी, थाना-हिलसा के निवासी थे। ये शहीद होने के दिन 20 वर्षीय नवयुवक थे। इनका परिवार इन दिनों राजगीर के निकट ग्राम-तिलैया में बसे हुए हैं।

भारत माता के आजाद हुए 55 वर्ष गुजर जाने के बाद स्थानीय विधायक श्री राम चरित्र प्रसाद सिंह द्वारा विधायक विकास निधि से शहीद स्थल पर एक खुबसूरत शहीद स्मारक का निर्माण किया गया है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। इसके अलावे प्रत्येक शहीद के गृह गाँव के प्रवेश द्वार पर एक-एक शहीद द्वार का निर्माण किया जा रहा है। यही नहीं हिलसा रेलवे स्टेशन के पूरब एक लाख रुपए की लागत से एक विशाल "एकादश शहीद द्वार" बनाने की योजना है। श्रद्धांजलि स्वरूप विधायक श्री राम चरित्र प्रसाद सिंह के द्वारा उठाया गया यह कदम न केवल सराहनीय है बल्कि अनुकरणीय भी।

"दिन खून का हमारे प्यारों न भूल जाना,
खुशियों में अपनी हम पर आँसू बहाते जाना।
गोली खाके सोये हिलसा बाजार में हम,
दो फूल श्रद्धा से मुझपर चढ़ाते जाना।

सम्पर्क:- हिलसा गौरव गृह
ग्राम-मजीदपुर
पो०-चमर बिगहा, नालन्दा

डॉ० 'रंगम', जिनका शेष जीवन साहित्य को समर्पित था

1942 की अगस्त क्रांति में जिस व्यक्ति ने अपनी सक्रिय भूमिका निभायी, सरकारी सेवा में कैंसर जैसे असाध्य रोग के चिकित्सक पद पर रहकर जिसने अपनी पहचान बनायी और सेवा निवृति के पश्चात अपना शेष जीवन जिसने हिन्दी साहित्य की सेवा में समर्पित किया उसी का नाम है डॉ० रंगी प्र० सिंह 'रंगम'। जगन्नियता ने विगत 8 दिसम्बर को उन्हें हमसे छीन लिया।

पटना मेडिकल कॉलेज से एम० बी० बी० एस०, एम० एस०, एम० डी० करने के बाद इंग्लैड से डॉ० 'रंगम' ने आर० सी०पी० और आ० सी० एस० किया तथा हावार्ड यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल के वे विजिटींग प्रोफेसर भी रहे। इन्होंने अवकाश ग्रहण के बाद कई पुस्तकें लिखी। कई सामाजिक एवं साहित्यिक संगठनों से जुड़कर गरीब व असहाय लोगों की उन्होंने निरन्तर सेवा की। विचार दृष्टि के वे नियमित पाठक थे। पत्रिका परिवार उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

कथाकार सुरेन्द्र प्र० सिंह की याद पटना के साहित्यकार संजोए रखेंगे

सिद्धेश्वर

सुप्रसिद्ध चिकित्सक डा० रंगी प्र० सिंह 'रंगम' के ८ दिसम्बर, २००१ को चले जाने के बाद अभी उनका गम भी भूला नहीं पाए थे कि सुपरिचित कथाकार सुरेन्द्र प्र० सिंह को जगन्नियंता ने २० दिसम्बर २००१ को हमसे छीन लिया। भाई नृपेन्द्र जी से उनके निधन का दुखद समाचार जानकर अहले सुबह स्व० सिंह के पार्थिव शरीर पर श्रद्धा के दो फूल अर्पित करने मैं उनके राजेन्द्र नगर निवास पर जब गया तो उन्हें देखकर लगा कि वे गहरी नींद में सोए हैं। चेहरे पर वही आभा और वही भाव जैसे मौन हो मुझे आशीर्वाद दे रहे हैं।

कुछ ही दिनों पूर्व यानी ३० नवम्बर, २००१ को अपने सहपाठी डा० विनोद कुमार के सुपुत्र की शादी में सुरेन्द्र बाबू से मेरी मुलाकात हुई थी। रिश्ते में वर उनका नाती लगता था। बड़ी प्रसन्न मुद्रा में सुरेन्द्र बाबू अपने रिश्तेदारों तथा शुभेच्छुओं से मेरी जान पहचान करा रहे थे। उनकी लड़की से मुझे मालूम हुआ कि रात भर जाग कर अपने नाती की शादी का जश्न मना रहे थे अपनी सारी अस्वस्थता को भूलकर।

बिहार प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी के पद से सेवानिवृत होने के बाद भी उनकी कलम सदैव चलती रही और हिन्दी साहित्य की सेवा वे अबाध गति से करते रहे। हिन्दी और अंग्रेजी पर उनकी पकड़ काफी गहरी थी। आखिर तभी तो आपने कई उपन्यास लिखे जिसमें डा० **रंजना** की काफी सराहना हुई। **मंदिर का वह बूढ़ा पुजारी** को भी लोगों ने काफी प्रशंसा की। और साहित्य सेवियों के साथ में भी अपने को सौभाग्यमान मानता हूँ, जिसे सुरेन्द्र बाबू का स्नेह प्राप्त था। अपने निधन के मात्र तीन दिनों पूर्व यानी १७ दिसम्बर की उनके हाथ की लिखी चिट्ठी मुझे बाद में मिली। उस भाव भरे पत्र के एक एक शब्द से स्नेह टपकता है। चाहकर भी मैं क्या, पटना के सभी साहित्य सेवी उन्हें भूल नहीं पाएगें। उनकी याद को संजोए रखना हम सबों का दायित्व बनता है।

विचार दृष्टि पत्रिका के अपने नियमित पाठक स्व० सिंह को पत्रिका परिवार अपना सम्मान अर्पित करता है।

रजत पट के शलाका पुरुष 'दादामुनि' का देहावसान

हिन्दी सिनेमा के प्रथम महानायक अशोक कुमार, जिन्हें **दादामुनि** के नाम से पुकारा जाता था, 10 दिसम्बर को हम सबों से विदा हो गए। 90 वर्षीय दादामुनि का जन्म 13 अक्टूबर, 1911 को बिहार के भागलपुर अपने नाना के घर में हुआ था। दरअसल उनका नाम काशी विशेश्वर गंगोपाध्याय था किन्तु उनके पिता ने उनका नाम कुमुद नारायण गांगुली रखा था। फिल्मों में आने पर पुन: उनका नाम अशोक कुमार रहा।

अपने जीवन में कुल 450 से ज्यादा फिल्मों में अभिनय करने वाले अशोक कुमार सचमुच ऐसे कलाकार थे जो हिन्दी जगत के पिता सदृश्य थे। छह दशक से भी अधिक अपने अभिनय जीवन में नायक, खलनायक और चरित्र अभिनेता तक सभी तरह की भूमिकाओं में उन्होंने अपना लोहा मनवाया। उन्होंने अभिनय में एक स्वाभाविक अंदाज अपनाया। अपनी पहली फिल्म **जीवन नैया** से अभिनय की शुरूआत कर **अछूत कन्या, कंगन, किस्मत, चलती का नाम गाड़ी, शौकीन, संग्राम, हावड़ा ब्रिज, आरती, गुमराह, चित्रलेखा, बंदिनी, ममता, सत्यकाम और अशीर्वाद** जैसी फिल्मों में दमदार अभिनय किया। उन्होंने देविका रानी से लेकर रति अग्निहोत्री तक लगभग सभी नायिकाओं के साथ काम किया। उन्हें **दादा साहब फाल्के पुरस्कार** से भी नबाजा गया। अभिनेता के अतिरिक्त वे पेंटर, बॉक्सर, और होम्योपैथ भी थे। वह हिन्दी और बंगला के अलावा उर्दू, फारसी, भोजपूरी, मैथिली और फ्रेन्च भाषा भी जानते थे।

अशोक कुमार ने सदैव जीवन को उसकी सम्पूर्णता में जिया। फिल्मों में वे गीत भी गाते थे। लगातार सफलताओं के कीर्तिमान स्थापित करने वाले इस युगपुरुष की कृतियाँ आनेवाली पीढ़ी को भी अनुप्राणित करती रहेंगी। **दादामुनि** सरीखा सम्पूर्ण कलाकार विरले ही पैदा होता है। इस सदाबहार अभिनेता का अविस्मरणीय योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। **विचार दृष्टि** परिवार की ओर से इस सदाबहार अभिनेता को हार्दिक श्रद्धांजलि।

नव वर्ष २००२ की हार्दिक शुभकामनाएँ

पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से

स्व० आर० आई० सिंह पूर्व सदस्य, बिहार विधान परिषद के सपनों को साकार करने के लिए भरोसेमंद, जुझारू, क्रांतिकारी, युवाओं एवं स्नातकों के लिए मर मिटने वाले, संघर्षशील युवा उम्मीदवार, प्रो० (डा०) अभ्यानन्द सिन्हा उर्फ प्रो० सुमन पटेल को ही चुनें। नई सदी में अच्छे भविष्य के लिए राज्य और देश के सुरक्षित भविष्य के लिए प्रो० सुमन पटेल।

डा० अभ्यानन्द उर्फ प्रो० सुमन पटेल का परिचय

शैक्षणिक योग्यता : एम० ए० इतिहास, एल० एस० डब्लू

सम्प्रति : व्याख्याता, इतिहास विभाग, समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर

समाज सेवा : छात्र जीवन से ही सामाजिक सेवा में रुचि, युवाओं तथा समाज की विभिन्न समस्याओं के प्रति संघर्षशील।

लेखन कार्य : विभिन्न पत्रिकाओं एवं विश्वविद्यालयों के शोधपत्रों में लेखन।

स्थाई पता : ग्राम–सिकन्दरपुर, पो० –लहसुना, थाना–मसौढ़ी, जिला–पटना

वर्तमान निवास : विजय नगर, लेन नं० ६, रूकुनपुरा, पो०–रुहायनगर, बेली रोड, पटना–८०००१४
फोन नं०–५६६०७१

कार्यालय : एम.एल.ए फ्लैट नं० १८, वीरचन्द पटेल पथ, पटना–१

प्रो० सुमन पटेल

निवेदक
बरुण भाई पटेल
फतुहां, पटना

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस (रूपक सिनेमा के पूर्व)

बाकरगंज, पटना-800004

दूरभाष : 0612-662837

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)

दूरभाष: 65769, फैक्स : 65169

आधुनिक आभूषण के निर्माता
नए डिजाइन, शुद्ध सोने चाँदी के तथा हीरे के गहनों का
प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय

सुरेश, राजीव एवं सुनील

R.N.O. Regd.No.DEL HIN/1999/791

पटना शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र
के
कर्मठ एवं सुयोग्य उम्मीदवार
डॉ० (प्रो०) अर्जुन प्रसाद सिन्हा

शिक्षकों का हमदर्द और कुछ कर दिखाने की तमन्ना

चुनाव 28 अप्रैल 2002

- *शिक्षा के क्षेत्र में लगभग तीस वर्षों का अनुभव*
- *सरदार पटेल महाविघालय में प्राचार्य पद पर कार्यरत*
- *1990 के इसी चुनाव में द्वितीय स्थान प्राप्त*
- *सदैव जमीन से जुड़े रहे*
- *कर्मठ, निष्ठावान, ईमानदार तथा विश्वसनीय*
- *शिक्षकों की पीड़ा और उनके दर्द को नजदीक से देखा*

इनके कृतित्व पर एक नजरः–

- *अब तक इनके पर्यवेक्षण में आठ पीएच० डी०*
- *पाँच पी० एच० डी० के पंजीकृत*
- *चर्चित, प्रतिष्ठित व स्तरीय गणित की राष्ट्रीय/अर्न्तराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में बारह पत्र प्रकाशित*
- *भारत के विभिन्न संस्थानों तथा विश्वविघालयों द्वारा आयोजित सेमिनार में आलेखों का पाठ*
- *मैथेमेटिकल जर्नल के सम्पादक*
- *विधानपरिषद् में शिक्षकों के प्रतिनिधि होने की भरपूर क्षमता*
- *एक भरोसेमंद और जबावदेह इन्सान*
- *शिक्षकों से सीधी बातचीत के आदी*

आप अपना कीमती वोट देकर इन्हें विजयी बनावें यह आपकी गरिमा के अनुरूप होगा।

मतदाता
पटना शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र

सम्पर्क स्थल–पंचवटी, गुफापर, बिहार शरीफ (नालन्दा) दुरभाषः 22365

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा ई–50, एफ. एफ सी. झंडेवालान, रानी झांसी रोड़, नई दिल्ली–55 से प्रकाशित एंव प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड, एक्स–47, ओखला, फेज–2, नई दिल्ली–20 से मुद्रित। –सम्पादकः सिद्धेश्वर

R.N.I.Regd.NO. DEL HIN/1999/791

विचार दृष्टि

राष्ट्रीय भावनाओं की वैचारिक त्रैमासिकी
दिल्ली से प्रकाशित अपने चौथे वर्ष में प्रवेश
आपके मानसिक खुराक की एक महत्वपूर्ण पत्रिका

अंक–1

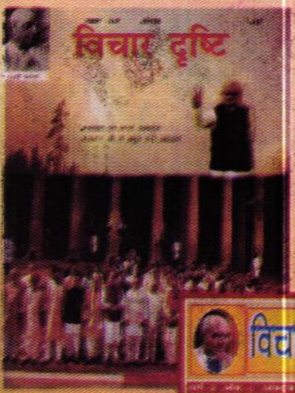

अंक–2

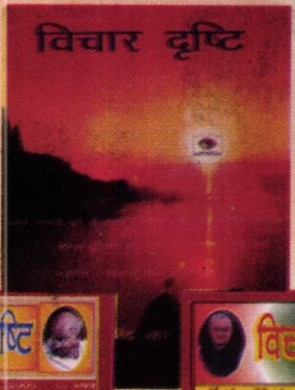

अंक–3

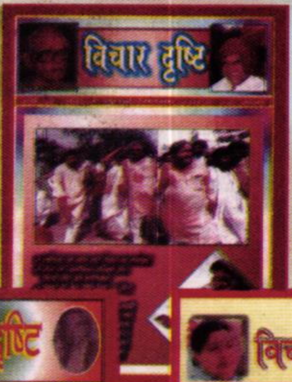

अंक–4

अंक–5

अंक–6

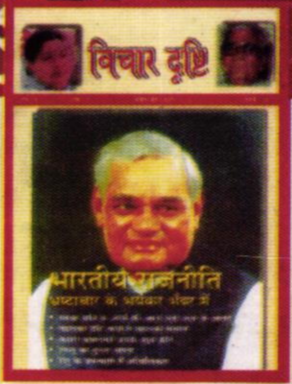

अंक–7

कैलेन्डर–2002

JANUARY

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

FEBRUARY

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

MARCH

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

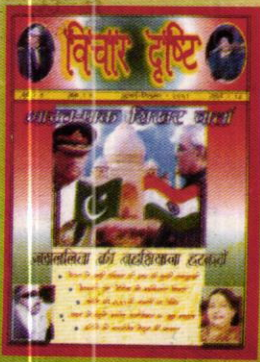

अंक–8

APRIL

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

MAY

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

अंक–9

JUNE

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

नववर्ष मंगलमय हो आपका

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा ई–50, एफ.एफ.सी., झंडेवालान, रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली–55 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड, एक्स–47, ओखला, फेज–2, नई दिल्ली–20 से मुद्रित। – सम्पादक : सिद्धेश्वर